Vol. 5 Jan.-Dec. 2019
ISSN 2454 - 4310

# अपराजिता शोध पत्रिका

An Annual Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal

शोध पत्रिका

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रुड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड
(स्थापित - 1966)
NAAC Accredited - B

ज्ञान ही है नित नूतन, चेतन
ज्ञान ही है शक्ति और आनंद
ज्ञान ही है शाश्वत, चिरन्तन
और प्रकाशवान !

ISSN 2454 - 4310

# अपराजिता शोध पत्रिका

An Annual Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal

**Vol. 5** **2019**

**Patron** - **Shri Ajay Kumar Garg**
President
Management Committee

**Chief Editor** - **Dr. Archana Mishra**

**Senior Associate Editor** - **Dr. Anupma Garg**

**Associate Editor** - **Dr. Alka Arya**
**Dr. Kiran Bala**

**Cover Design** - **Dr. Alka Arya**

**परामर्शदात्री समिति**

- **प्रो० महावीर अग्रवाल**
  पूर्व कुलपति
  उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार
- **प्रो० एम० एस० एम० रावत**
  पूर्व कुलपति
  हे०न०ब०ग० विश्वविद्यालय, श्री नगर
- **प्रो० जे० पी० पचौरी**
  डीन, स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंस
  हे०न०ब०ग० विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- **प्रो० मंजुला राणा**
  प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, हे.न.ब.ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
  पूर्व सदस्य, उत्तराखण्ड लोक सेवा आयोग, हरिद्वार
- **प्रो० के० एस० पठानिया**
  फैकल्टी ऑफ कॉमर्स एण्ड मैनेजमेन्ट स्टडीज्
  पूर्व निदेशक, यू०जी०सी०, एच०आर०डी०सी०,
  हि०प्र० विश्वविद्यालय, शिमला
- **प्रो० दिनेश मोहन**
  पर्यावरण विभाग
  जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

## अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

1. **तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु** - (विशेष लेख) 1
   *डॉ० महावीर अग्रवाल*
2. **Multiculturalism** **4**
   *Prof. Himanshu Borai*
3. **विद्रोह-साहित्य की अन्तः शक्ति** 8
   *डॉ० कुसुमलता वर्मा*
4. **समसामयिक समस्याओं के समाधान में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता** 12
   *डा० सुनीता कुमारी*
5. **देवभूमि की समृद्ध ऐतिहासिक पौराणिक विरासत : लाखामंडल** 15
   *डॉ० स्वर्णलता मिश्रा*
6. **शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन के विविध आयाम** 17
   *डॉ० गुड्डी बिष्ट*
7. **पश्चिमी उत्तर प्रदेश की भूली बिसरी सांस्कृतिक धरोहर** 21
   *डा० दिनेश चन्द्र अग्रवाल*
8. **वैदिक साहित्य में चित्रित नारी-अधिकार** 24
   *डॉ० अन्जु शर्मा*
9. **ग्रामीण विकास में पर्यटन की भूमिका एवं चुनौतियाँ** 28
   *डा० अनीता सिंह*
10. **ग्रामीण महिला सशक्तीकरण के आर्थिक एवं सामाजिक पहलू** 33
    *श्रीमती अंजलि प्रसाद*
11. **भारत की राजनीति में महिलाओं की भूमिका** 37
    *कु० प्रवीन*
12. **गांधी-एक सन्त योद्धा** 42
    *डा० अर्चना मिश्रा*
13. **नैतिकता से ओतप्रोत गाँधी दर्शन** 46
    *डा० कामना जैन*
14. **चंपारण सत्याग्रह में गांधी: एक अवलोकन** 51
    *डॉ० शालिनी*
15. **कबीर और गाँधी: विचारों की सामाजिक समन्वयता** 53
    *डा० सीमा राय*
16. **गांधी जी के विचारों की वर्तमान में प्रांसगिकता** 56
    *श्रीमती नेहा शर्मा*
17. **Gandhiji's Humanism in the Present World** **59**
    *Dr. Anupma Garg*
18. **A Comparative Study on Marketing Strategies of Public Sector and Private Sector Banks** **62**
    *Dr. Kulwant Singh Pathania, Mr. Mohit Prakash*
19. **Indian Handicrafts and its Marketing** **72**
    *Dr. Alka Arya*
20. **Menstrual Hygiene Management and Waste Disposal: A Review** **77**
    *Priyanka Pahwa, Prof. Kiran Dangwal*
21. **Population Explosion & Unsustainable Pattern of Food Consumption & Production** **83**
    *Dr. Kamini Singhal*

**श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय**
**रुड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड**
स्थापित 1966
सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर
NAAC Accredited - B

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में प्रकट विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक मण्डल की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

5th Edition Jan. - Dec., 2019

Published by -
S.S.D.P.C. Girls (PG) College Roorkee
Roorkee - 247 667 (Uttarakhand)
Tel. : 01332-262705
E-mail : ssd.degree@gmail.com

Printed at -
Jain Offset Press
Roorkee
Mob. : 8979486901
E-mail : jainoffsetpress@gmail.com

# President's Message

*It gives me a feeling of immense pleasure and pride to address you through the platform of our research journal Aparajita Shodh Patrika (ASP). SSDPC Girls (PG) College, Roorkee, since its establishment in July 1966 has traversed a long way. When I ponder upon all these years of continuous accomplishments and commendable achievements, I feel proud to be a part of it. I can easily visualize the underlying force of progressive vision and dedicated hard work behind its success story.*

*During the course of its golden journey of five decades, the institution has earned a reputation in the region for providing value based quality education to girls. Many milestones have been set up in the field of academics and other areas of activities through innovative thinking accompanied by consistent and thoughtfully executed action plans. Publication of a research journal of its own is another feather in its cap.*

*I congratulate the entire editorial team for this noble academic endeavour and hope their sincere and tireless efforts will take it to newer heights par excellence. Best wishes to ASP editorial team and all college fraternity for a happy and fruitful 2020.*

*Ajay Garg*
*President*

# From the Chief Editor's Desk

*Aparajita Shodh Patrika (ASP), a multidisciplinary, yearly peer reviewed research journal of our prestigious institution was basically started with an aim of promoting and nurturing a culture of meaningful research in the campus. Shodh Patrika has been designed to cater to the needs of our potential researchers and discriminative readers alike. The editorial board has made every effort to ensure that ASP encompasses subjects of interest for common as well as professional readers and proves to be a valuable addition to the libraries it is being sent.*

*Earlier issues have succeeded in achieving these goals and received appreciation and applause from all quarters of academic fraternity. Besides, publication of ASP has given a new direction and significance to our young researchers and academic environment in the campus.*

*Present issue with inclusion of articles/research papers from different branches of knowledge, introduces us to a wide spectrum of scholarly ideas and expressions for which, on the behalf of entire editorial team, I want to express my heartfelt thanks and gratitude to the learned members of our advisory board, our peer review committee members and our esteemed contributors. I also take this opportunity to convey our sincere thanks to the Hon'ble members of college management whose support and help has been instrumental in the publication of this journal althrough.*

*Last but not the least, editorial team is thankful to each and everyone of college colleagues for all the appreciation and effective cooperation extended whenever needed.*

*May we continue to achieve more as a team!*
*Best regards and best wishes*

*Dr. Archana Mishra*

विशेष लेख

# तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु

**प्रो. महावीर अग्रवाल***

कुरुक्षेत्र के मैदान में जब भगवान श्रीकृष्ण मोहग्रस्त अर्जुन को गीता का अमर उपदेश दे रहे थे तब अर्जुन ने सहसा ही एक प्रश्न कर दिया–

**चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथी बलबद दृढ़म।**
**तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।** **(गीता.....)**

अर्थात हे योगेश्वर! यह मन बडा चंचल है, भयानक रूप से मथ देने वाला बलवान और दृढ़ है उसको वश में करना वैसे ही कठिन है जैसे वायु को मुठ्ठी में बन्द कर लेना।

कुन्ती पुत्र महान् धनुर्धर अर्जुन के प्रश्न का सटीक उत्तर देते हुए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं–

**असंशयं महाबाहो मनः दुर्निग्रहं चलम्।**
**अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।।**

अर्थात हे महाबाहो अर्जुन! निश्चय ही मन बहुत चंचल है और इसका निग्रह भी बहुत कठिन है किन्तु अभ्यास और वैराग्य से इसे वश में किया जा सकता है।

मानव जीवन में मन का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कहा भी गया है–'मनएव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।' मन ही हमें नाना प्रकार से बान्धता है। और मन के कारण ही मानव मुक्त भी होता है।

'संकल्प विकल्पात्मकं मनः' संकल्प और विकल्प मन का स्वरूप है। जब यह शिव, शुभ, मंगल सकारात्मक संकल्प करता है तब यह हमें बन्धनों से मुक्त करता है और जब अशिव, अशुभ, अमंगल एवं नकारात्मकता में मग्न होता है तब नाना प्रकार के अनर्थो में, संकटो में फंसा कर हमें बन्धन युक्त कर देता है।

समग्र वैदिक साहित्य, भारतीय दर्शन, रामायण, श्रीमद् भगवद् गीता में मन के सम्बन्ध में व्यापक चिन्तन किया गया है। महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित अष्टांग योग में मन की चंचलता को एकाग्रता में परिवर्तित करने के उपाय बताये गये है। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान और समाधि के द्वारा सांसारिक विषयों में रमण करने वाले मन के विकार दूर हो जाते है और वह मन सच्चिदानन्द भगवान में स्थित हो जाता है और परम आनन्द को प्राप्त कराने का कारण बन जाता है।

जब विषय विकारों की गाड़िया मन रूपी झील में विचरण करती है तो मन की झील गंदली हो जाती है, किन्तु जब यह मानव साधक बनकर आसन लगाकर परमात्मा के ध्यान में बैठ जाता है और सांसारिक विषय वासनाओं को मन के निकट नहीं आने देता, तब यह मन मोती के समान चमकने लगता है। वेद के एक प्रसिद्ध सूक्त में मन के विषय में किया गया विस्तृत वर्णन पठनीय है। इस सूक्त को शिव संकल्प सूक्त कहा जाता है। रात्रि में शयन से पूर्व यदि इन मन्त्रों का अर्थ के ध्यान के

*प्रति कुलपति, पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पूर्व कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

साथ एकाग्रता एवं श्रद्धा से उच्चारण किया जाये तो मन का मैल दूर हो जाता है, और ऐसे साधक की रात्रि योग रात्रि बन जाती है। मन्त्र इस प्रकार है-

**ओ3म् यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति**
**दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।20।। (यजु:0 34.1)**

अर्थात हे जगदीश्वर! आपकी कृपा से जो मेरा मन जाग्रदवस्था में दूर-दूर भागता है, दिव्य गुणयुक्त रहता है, सोते हुए वही मेरा मन सुषुप्ति को प्राप्त होता और दूर-दूर जाने का व्यवहार करता है, प्रकाशकों का, ज्योजियों का एकमात्र प्रकाशन (ज्योति) मेरा वह मन अपने तथा दूसरे प्राणियों के लिए कल्याणकारी संकल्प वाला हो, किसी का अहित करने की इच्छावाला कभी न हो।

**येन कर्माण्यपसो मनीषिणों यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।**
**यदपूर्व यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।21।। (यजु:0 34.3)**

हे परमेश्वर! जिससे कर्म करने वाले, कर्मनिष्ठ, धैर्ययुक्त विद्वान लोग, मन के विजेता, यज्ञ और युद्धादि में कर्मो को करते है। जो अपूर्व सामर्थ्यवाला, विलक्षण, अद्‌भुत, अत्यन्त पूजनीय, प्रजाओं के भीतर रहने वाला है, वह मेरा मन धर्मकार्य करने वाला हो, अधर्म को सर्वथा छोड़ देवे।

**यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु। यस्मान्न ऋते**
**किञ्चन कर्मक्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।22।। (यजु:0 34.4)**

जो मन उत्कृष्ट ज्ञान का साधन और अन्यों को चेताने वाला तथा धैर्ययुक्त वृत्ति वाला है, जो लोगों के भीतर प्रकाशयुक्त और नाशरहित है, जिसके बिना कोई कुछ भी कर्म नहीं कर सकता, वह मेरा मन गुणों की इच्छा करके दुर्गुणों से दूर रहे।

**येनेंद भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्वम्।**
**येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। 23।। (यजु:0 34.4)**

हे स्वामिन्! जिस मन से सब योगी जन इन सब भूत, वर्तमान और भविष्यत् व्यवहारों को जानते है, जो नाशरहित, जीवात्मा को परमात्मा के साथ मिलाकर सब प्रकार त्रिकालज्ञ करता है, जिसमें ज्ञान और क्रिया है। जिस मन के द्वारा पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, बुद्धि और आत्मा कल्याणकारी यज्ञ को बढ़ाते हैं, विस्तृत करते हैं, फैलाते हैं, वह मेरा मन योग-विज्ञान वाला होकर अविद्या आदि क्लेशों से पृथक रहे।

**यस्मित्रृचः साम यजूथषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभविवाराः।**
**यस्मिँश्चित्तः सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। 24।। (यजु:0 34.5)**

हे परमदेव परमात्मन्! आपकी कृपा से जिस मेरे मन में जैसे रथ के मध्य धुरे में अरे लगे होते हैं, वैसे ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद ओर इनके अन्तर्गत होने से अथर्ववेद भी प्रतिष्ठित है, जिसमें सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, प्रजा का साक्षी चेतन परमात्मा विदित होता है, वह मेरा मन अविद्या को त्यागकर सदा विद्या-प्रिय बना रहे।

**सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यात्रेनीयतेऽभीशुभ्र्वाजिन इव।**
**हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। 25।। (यजु:0 34.6)**

हे सर्वान्तर्यामिन्! जो मेरा मन रस्सी से घोड़ो के समान अथवा घोड़ों के नियन्ता सारथी के तुल्य लोगो को अत्यन्त इधर-उधर ले जाता है, जो हृदय में प्रतिष्ठित, वृद्धादि अवस्था से रहित और अत्यन्त वेग वाला है, वह मेरा मन सब इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोक के धर्म-पथ में सदा चलाया करे।

यह मन सुसारथि बनकर हमें हमारे जीवन लक्ष्य तक पहुंचाये। यह दीन, दु:खी, दरिद्र, पीड़ित, शोषित और अभाव ग्रस्तों की सेवा और सहायता के लिये उत्साहित रहे। सदा सकारात्मक, शुभ, मंगल, शिव संकल्पों से ओत-प्रोत रहे, यही मन की साधना है।

*Invited Article*

# Multiculturalism

**Prof. Himanshu Borai***

Multiculturalism is initially intended as a means to gain national unity and harmony in a nation or society consisting of multicultural. It is also aimed to resolve problems related to and caused by the phenomenon of cultural diversity. In the beginning of 1970 the multicultural movement started in Canada, Australia, America, England, Germany and France. The concept of multiculturalism emerged from different Political Structures. The fact of multiculturalism has brought us to question the viability and desirability of liberal solutions to the fundamental questions of political life. Multiculturalists thus endorse the "politics of recognition" which inspires a public philosophy premised on the concepts of identity and difference instead of the principle of equal citizenship. At present we can say that it has no fundamental theory and philosophy, No common aim and objective of this movement or it is not a program, political principle, and philosophical ideology. To understand a political life it is essential to understand its culture.

Different cultures define "what is good life" in a different manner; the fact is that every culture achieves a limited aim of life. This is the fact that although all cultures are not same, equal or equally respectable but there are some qualities in each culture. It is believed that 'every culture that has an existence for a significant period of time has something valuable to offer its member'. This denotes a basic principle underlying on multiculturalism. Taking root on this principle, it should be ensured that 'no single culture has a monopoly on earth'. No isms, like liberalism, conservatism, socialism, nationalism, explain what the truth of human life is. Above isms touch some important point but not considered points like- unity of humanity, selflessness, politeness, satisfaction etc. They consider political life deeply but never explain what 'good society' is.

Multiculturalism can take place on a nationwide scale or within a nation's communities. It may occur either naturally through immigration, or artificially when jurisdictions of different cultures are combined through legislative decree, as in the case of French and English Canada where different cultures are integrated into a single society are best defined by the metaphors commonly used to describe them- the "melting pot" and the "salad bowl" theories.

The melting pot theory of multiculturalism assumes that various immigrant groups will tend to "melt together", abandoning their individual cultures and eventually becoming fully assimilated into the predominant society. The melting pot model has been criticized for reducing diversity, causing people to lose their traditions and for having to be enforced through governmental policy.

A more liberal theory of multiculturalism than the melting pot, the salad bowl theory describes a heterogeneous society in which people coexist but retain at least some of the unique characteristics of their traditional culture. Like a salad's ingredients, different cultures are brought together, but rather than coalescing into a single homogeneous

Deptt. of Political Science, HNBGU, Srinagar, Gahrwal

culture, retain their own distinct flavors. The salad bowl theory asserts that it is not necessary for people to give up their cultural heritage in order to be considered members of the dominant society. On the negative side, the cultural differences encouraged by the salad bowl model can divide a society resulting in prejudice and discrimination.

The term 'multicultural society' emerged in the 1960s to refer to this kind of society and the usage thus has a historical basis. Most contemporary societies are culturally diverse, but only some of them are multicultural or culturally plural.

Multicultural societies are characterized by people of different races, ethnicities and nationalities living together in the same community. In multicultural communities, people retain, pass down, celebrate and share their unique cultural ways of life, languages, art, traditions and behaviors.

Multicultural societies are not new to our age, for many premodern societies also included several cultural and religious communities and coped with the problems this threw up as best they could. Three basic facts distinguish contemporary multicultural societies from their predecessors.

- Contemporary multiculturality is more defiant.
- Contemporary multicultural societies are integrally bound up with immensely complex processes of economic and cultural globalization.
- Contemporary multicultural societies have emerged against the background of nearly three centuries of the culturally homogenizing nation-state.

**Multiculturalism can be viewed in four distinct ways:-**

- It is a demographic reality as a result of globalization, talent flow, forced migration and family reunification.
- Multiculturalism is also a political philosophy related to immigrant integration and acceptance.
- Multiculturalism is a vehicle for government and organizations to formulate policies based on their views and attitudes on multiculturalism.
- Multiculturalism is a discourse for governments to signal their directions on multiculturalism.

Multiculturalism is the key to achieving a high degree of cultural diversity. Cultural diversity encompasses racial, sexual, organizational, professional and national heterogeneity. It also includes individual differences such as physical attributes, social class, education and sexual orientation. Cultural diversity can yield problems in social life triggered by factors such as perceived discrimination, cultural stereotyping, ethnocentrism and prejudice among ethnic groups. Multiculturalism has been prescribed as an effective way to be applied, transmitted and imparted in societies in an effort of managing cultural diversity.

The term multicultural education is used to describe a variety of practices with in curriculum and classroom instructions. The significance of multicultural education is that

it gives individuals the opportunity to examine their own social and cultural biases and change their perspective within their own setting.

**Five Dimensions of multicultural education:-**

- Content integration
- Knowledge construction process
- Prejudice reduction
- An equity pedagogy
- An empowering school culture & social structure

It goes without saying that these goals are very important for all members of society but it is a fact that it will take years to achieve them with all those challenges faced by teachers in the multicultural classrooms.

To the widely held view that group rights are incompatible with the liberal emphasis on individual freedom, autonomy and equality, Kymlicka argues that these liberal ideas actually imply certain group-differentiated rights. Kymlicka focuses on: the relationship between group rights and the guarantee of equality for minorities. Although Kymlicka regards a stable societal culture as vital to individual well-being, he stresses that members of a culture community should be free to modify the character of the culture, should they find its traditional ways of life no longer worthwhile.

Theocratic groups have at times discriminated against members who profess religious beliefs that deviate from the official religion of the land. Kymlicka's conception of multicultural citizenship remains problematic from the perspective of both liberals and advocates of diversity.

Bhiku Parekh advances a theory of multiculturalism which he prefers to term a "perspective on human life' and then deploys this in analyzing most of the issues which confront multicultural societies from the appropriate structure of the polity, group representation, justice and rights through to questions of national and cultural identity, intercultural interaction, education and gender relations. Parekh and his theory of multiculturalism is a key theoretical reference for the interpretation and discussion. An understanding of culture as a collective system of symbols is also in line with the cultural understanding laid down in the framework plan.

In a multicultural society, we need a conceptual framework, a political theory that rises above the liberal/ non-liberal divide by articulating itself at a higher level of abstraction. It is however neither unusual nor impossible to meet, for traditional political philosophy at its best has always refused to remain trapped within the terms of discourse set by the contending ideologies of the marketplace and attempted to go behind and above them in its search for a more universal and less positivist theoretical framework.

Brian Barry is one of multiculturalism's fiercest critics. Barry (2001) rejects the assertion of fundamental rights put forward by multiculturalists- and spearheaded by Parekh and their attempts to accommodate minority cultures inherent value and cultural pluralism as a value in itself within the framework of a national state.

Despite his strong attack on multiculturalism as ideology, Barry must not be understood

as a spokesperson for intolerance or as an opponent of diversity of cultural expression: Far from it, according to him, religious and cultural expressions should be relegated to the private sphere precisely to maintain order in public sphere. Different cultural and religious practices should be tolerated as a natural part of the private sphere, though only as long as they do not violate democratically elected laws.

Multiculturalism can create fault lines by reinforcing separateness and differences based on ethnicity or religion, through the allocation of group rights (i.e. certain groups are entitled to more rights than others). In many European countries such as Denmark, Germany and the Netherlands multiculturalism can also promote separate and parallel lives when ethnic minorities retreat to their ethnic enclaves and fail to interact and integrate with their host country citizens.

Multiculturalism is sometimes seen as an obstacle to equality in western societies that value human rights and fair treatment. For example, the maintenance of cultural policies (such as wearing the Hijab) often associated with multiculturalism, is seen as an affront to gender equality. The tendency to view cultural preservation as a rejection of and a threat to host countries values and culture has resulted in hostility towards immigrants, particularly for Muslims.

One important critique of multiculturalism is that it promotes "essentialism", reifying the identities and practices of minority groups. Multiculturalism has therefore become a "cultural straitjacket" rather than a "cultural liberator", and requires radical overhaul if it is to serve emancipatory goals. Many people wonder 'why is multicultural education important'? But there are many reasons to implement it in modern schools. Today, borders between countries become less and less noticeable as more states are happy to welcome citizens of other countries on their territory. Belief on multicultural education; from learning about other cultures comes tolerance, promotes respect, respect leads to open mindedness which results in civic reasonableness and equality. People are capable of revising their conception of the good, moving within and between cultural assumptions and boundaries.

**REFERENCES**


- Longley, Robert. (2019). what is multiculturalism? Definition, theories. https://www.thoughtco.com/what-is-multiculturalism-4689285
- Challenges of multicultural education. (2017). https://blog.noplag.com/challenges-of-multicultural-education/
- July20 (2015). https://www.google.co.in/amp/s/www.psychologytoday.com/us/blog/diverse-and-competitive/201507/multiculturalism-around-the-world%3famp?espv=2
- Barry, B. 2001. Culture and Equality. An egalitarian critique of multiculturalism. Cambridge.
- www.nordiskbarnehageforskning.no (30.1.2020)
- www.cardozo.yu.edu/cardlrev/pdf/231shachar.pdf
- Ray, B.N. (2006). Political Theory: Interrogations and Interventions. Authors Press, New Delhi.

# विद्रोह-साहित्य की अन्तः शक्ति

**डा० कुसुम लता वर्मा***

***शोध-सार***

*विद्रोह एक मूल्यपरक प्रक्रिया है जो चाहे किसी भी क्षेत्र में हो जड़ स्थापित मूल्यों को विस्थापित करते हुए नई मानसिकता के लिए भूमि तैयार करता है। विद्रोह साहित्य की अन्तः शक्ति है। उसका सदैव ध्वंसात्मक व अराजक होगा जरूरी नहीं है। इसके बल पर साहित्य को मनुष्य की स्वतंत्रता और सांस्कृतिक युक्ति का प्रतीक बनाया जा सकता है। किन्तु साहित्य के क्षेत्र में विद्रोह की सृजनात्मक अभिव्यक्ति तभी हो सकती है। जब वह तात्कालिक उत्तेजना, क्षणिक आदेश और बडबोलेपन से उबर कर विद्रोह को एक प्रौढ़ वैचारिक आधार दे।*

व्यवस्था परिवर्तनकामी नहीं होती। वह यथा स्थिति वाद की पोषक होती है। दूसरी ओर जनमानस दासता की मनोवृत्ति से उबरने के लिये और समानता की मनोभूमि पर प्रतिष्ठित होने के लिये सदैव संघर्षरत होता है, तभी विद्रोह की नींव पड़ती है। हम कह सकते हैं कि अधिकारों के प्रति सजगता, संघर्षशील प्रवत्ति और मुक्ति की कामना विद्रोह की मूलमूत विशेषताएँ है। यह आवश्यक नहीं है कि विद्रोह सदैव ध्वंसात्मक ही हो। इसके विपरीत वह एक मूल्य परक प्रक्रिया है, जो प्रारम्भ में संघर्ष, विरोध और अस्वीकार को उत्तेजित करती है और समूची व्यवस्था को बदल डालने के लिये तत्पर होती है, किन्तु अन्ततः उसे नवीन मूल्यों की स्थापना के लिये लौटना ही होता है। डा0 विनय के अनुसार, दरअसल कोई भी विद्रोह-चाहे किसी भी क्षेत्र में हो, किन्ही मूल्यो के लिये होता है। वह जड़ स्थापित मूल्यों को विस्थापित करता हुआ नई मानसिकता के लिये भूमि तैयार करता है।[1]

विद्रोह साहित्य की अन्तः शक्ति है। इसी प्रवत्ति के बल पर साहित्य को मनुष्य की स्वतन्त्रता और सांस्कृतिक मुक्ति का प्रतीक बनाया जा सकता है किन्तु साहित्य का विद्रोह किसी एक सत्ता को बदलने के लिए नहीं अपितु प्रत्येक अन्यायी सत्ता को चुनौती देने के लिये होता है। 'इस अर्थ में साहित्यकार सतत् विद्रोही ही नहीं अराजकता प्रिय भी होता है' ऐसा मानना है लेखक देवेन्द्र कुमार इस्सर का।[2] किन्तु साहित्य के क्षेत्र में विद्रोह की सृजनात्मक अभिव्यक्ति तभी हो सकती है जब वह तात्कालिक उत्तेजना, शहीदाना अंदाज तथा रोमानी तेवर त्याग दे तथा शाब्दिक विस्फोट, क्षणिक आवेश अैर बडबोलेपन से उबर कर विद्रोह को प्रौढ, वैचारिक आधार दे। दूसरे शब्दो में विद्रोह की विचार धारा क्या है, वह कितना वास्तविक है और कितना अवास्तविक तथा वर्तमान जीवन स्थितियों में उसकी संगति क्या और कहाँ तक है आदि तथ्य ही किसी विद्रोह के मूल तत्व है।

विद्रोह विश्व व्यापक है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर सम्पूर्ण विश्व में पिछले कुछ समय से साहित्य, कला, राजनीति और जीवन के हर क्षेत्र में विद्रोह का नारा लगाने वाली पीढ़ी ने जन्म लिया है। भारत और विकासशील देशों से लेकर फ्राँस, इटली, जर्मनी, स्पेन आदि यूरोपीय देशों तथा रूस, अमेरीका, जापान जैसे पूर्ण विकसित, समृद्ध देशो में भी युवा आक्रोश के स्वर उभरे हैं। विश्वविद्यालयों में हड़ताल, प्रदर्शन, गिरफ्तारियाँ, छात्रसंघो की सक्रियता तथा व्यवस्था द्वारा दमन की घटनाओं से पिछले कुछ वर्ष आपूरित रहे है। जिन देशों में यांत्रिकी और तकनीकी दबाव, नयी पुरानी पीढ़ी का अन्तर तथा जीवन मूल्यों का द्वन्द्व जितना अधिक है, यह विद्रोह भी उसी मात्रा अधिक रहा है।

*रीडर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग (सेवा निवृत्त), एस.एस.डी.पी.सी. गर्ल्स (पी.जी.) कॉलेज, रुड़की (उत्तराखण्ड)

किन्तु पश्चिमी और भारतीय विद्रोही स्वरों में पर्याप्त अन्तर है। पश्चिमी जगत का आक्रोश वहाँ की यांत्रिकता, अति समृद्धता की प्रतिक्रिया से जन्मा है। वहाँ अर्थ की प्रचुरता है, समानता के अधिकार है, अनावश्यक दमन नहीं है किन्तु मनोजगत की कुण्ठाएं है, मानसिक अशान्ति है। इसके विपरीत भारतीय विद्रोह अभावों की पीड़ा से जन्मा है, असुरक्षित भविष्य से आतंकित है, सामाजिक असमानताओं से दु:खी है तथा नैतिक वर्जनाओं से ग्रस्त है अत: भारतीय विद्रोह की दिशा भिन्न है। वस्तुत: यह विद्रोह स्वातन्त्रयोत्तर भारत में अल्प वर्ग के हितों की रक्षा के लिये अधिकाधिक लोगों की उपेक्षा करने वाली व्यवस्था से जन्मा है।

तनिक सोचिये जब व्यवस्था नरभक्षी हो जाये, हर आदमी किसी को निगलकर किसी दूसरे के पेट में पड़ा हो तो विद्रोह के स्वर क्यों नहीं फूटेंगे ? नागार्जुन हतप्रभ है कि कैसे साधन सम्पन्न ऊँची जाति द्वारा तेरह के तेरह अभागे मनुपुत्र जीवित ही प्रचण्ड अग्नि में झौंक दिये जाते है और महज दस मील दूर स्थित थाने में बैठी पुलिस सम्भावित दुर्घटना की आहट पाकर भी अचेत रहती है–'ऐसा तो कभी नहीं हुआ था ?'[3] व्यवस्था के राजदूत सगर्व, मृतकों के परिवारों को एक माह यानि 'तीस दिन', 'दोनो जून', 'भरपेट' राशन देने की घोषणा करके क्षतिपूर्ति कर देते है।[4]

सूई की नोंक पर कभी भी झड़ पड़ने वाली ओस की बूँद की तरह सिपाही बलदेव खटिक की बीमार माँ बेटे का इन्तजार करते करते दम तोड़ देती है पर बेटे को डयूटी से तुरन्त छुट्टी नहीं दी जाती। माँ को अस्पताल ले जाने के लिये पुलिस की गाड़ी भी नहीं मिलती क्योंकि वह तो अपराधियों को पकड़ने के लिये होती है और माँ का कोई वारण्ट पुलिस वालो के पास नहीं था। आखिर अभावों की इस कहानी में माँ मुक्ति पा जाती है। बलदेव सिपाही में क्रोंध जागता है। वह अपनी बन्दूक से धड़ाधड़ कौओ को भून डालता है। अपने गाले पर चाँटे मारता है। धरती को पीटते हुए अपने ही पैरों को तोड़ डालता है। यह बात नहीं कि सिपाही बलदेव की बांहो में बल नहीं था, पर उसे अपने दुश्मन की सही पहचान नहीं थी और उसने गोलियाँ सही जगह नहीं दागी थी।

भूखे रंगतू का यही अपराध तो था कि वह राशन लूटन में शरीक था। पुलिस उसे पकडकर थाने ले आती है। 'जहाँ आदमी के लिये जेल और पोस्टमार्टम की पूरी व्यवस्था है।' (5) उस समय किसी के पास वे शब्द नहीं थे जो हलफनामा बन सके, जो उसकी तरफदारी कर सकें। पुलिस की गाड़ी में उसकी शब्दहीन आत्मा एक नंगे पेड़ की तरह मूक है। (6) वही अन्यायों राजनीति भी विद्रोह का एक बड़ा कारण रही है, जो अच्छे खासे काम करते आदमी को पागल बनाकर जेल के सीखचों में बन्दकर देती है और इन्तजार करती है उस दिन का जब उस पागल के स्थान पर दूसरा आदमी पागल होगा और फिर तीसरा, चौथा, और पाँचवा। इस अन्याय के खिलाफ 'उफ' तक करने की इजाजत नहीं है क्योंकि शासन को उनकी चीख से नफरत है।

यह सत्य है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश में पर्याप्त विकास हुआ, किन्तु बढ़ती जनसंख्या की माँग के सम्मुख इस विकास की रफ्तार कम थी और इस विकास का लाभ मध्य वर्ग, शिक्षित बेकार पीढी, मजदूर और भूमिहीन ग्रामीणों तक न पहुँचकर कुछ गिने चुन व्यक्तियों तक ही सीमित रहा। अस्तु गरीबी बढ़ती रही। दिन दिन बढती दरिद्रता और कमर तोड मंहगाई के बीच आता नया साल सर्दलू को रोकने की व्यर्थ चेष्टा करता रहा। न टूटी खाट बदलती है, न मैली चादर। हाँ प्रति वर्ष

प्रगति के आंकडे जरूर बदल जाते है। सचिवालय की नौंवी मंजिल से नीचे देखने पर अफसर को शहर हरा भरा ही दिखाई देगा।

कितना झूठ, कितना गलत, सूखे और भूख का शोर,
कितनी हरी भरी है धरती। इस हरी भरी कविता की तरह।[7]

राजनेताओं के भ्रष्ट चरित्रों ने जनता की श्रेष्ठ मूल्यों के प्रति आस्था को ठेस पहुँचाई है। यह मूल्यहीनता का बोध युवापीढ़ी में विशेषरूप से उभरा है। बेरोजगार नवयुवकों में विक्षोभ स्वाभाविक है। 'अग्नि कोण 3' में ब्रजेश्वर की कविता में यह तीव्र आक्रोश पढा जा सकता है।

विश्व विद्यालयों की छतों पर से / छंलाग लगाती डिग्रियाँ
और उन्हें लेकर हम करेंगे भी क्या- / ताबीज की जगह गले में लटका ले
या टायलेट पेपर का सा इस्तेमाल शुरु कर दे।[8]

यह देश का दुर्भाग्य ही रहा है कि आज तक शिक्षा जैसा महत्वपूर्ण विषय देश की आवश्यकतानुसार नियोजित नहीं किया जा सका है। पिछले वर्षो में भारतीय जन-जीवन में कई हेर फेर हुए है। मुख्यत: राजनीतिक जीवन में हुए परिवर्तन विशेष प्रभावकारी रहे। आपात-स्थिति के नाम पर नेता और अफसर की सांठ गाँठ ने जनता को पीस कर रख दिया है। मोटे मोटे लुभावने नारों के पीछे जनद्रोही शक्तियाँ स्वांग रचती रही हैं और गरीब, निर्दोष जनता हलाल होती रही है। क्रूर राजतन्त्र देश के बुद्धि जीवियों को पालतू बना रहा है। अखबार, रेडियों, टीवी पर उपलब्धियों के बयानों की होड़ लगी है। आज भी यह दृश्य देखा जा सकता है। ललित शुक्ल कहते है- 'सम्भवत: आजादी के बाद से शासन की चाटुकारिता के लिये बुद्धि जीवियों को इतना खुला मंच कभी नहीं मिला।[9]

सामाजिक विषमता एवं आर्थिक विपन्नता ने विद्रोह की धार को पैना किया। 21 वीं सदी में प्रवेश करने पर भी आज हजारों लोगों को फुटपाथों से छुटकारा नहीं मिला है। नीचे नंगी धरती की शैय्या है। सूनी निगाहों और ठण्डी आहों की अभिव्यक्ति है तथा सर्वत्र एक विकलांग निरीहता है। यह विपन्नता विद्रोह का एक बड़ा कारण है। मोहन जोदड़ो और हडप्पा की खुदाई में भूख न मिली हो पर यहाँ धंसे हुए पेटों में रोज सैकड़ो जोदड़ो और हड़प्पा मिल जायेंगे। भूखे आदमी को सबसे बड़ी सच्चाई रोटी है।[10] सुधीर सक्सेना जानना चाहते है कि-

धरती के बेटे बेटियों के पास हजार हजार साल बाद भी। / क्यों नहीं है नाज और कपड़े?[11]

'आखिर कब तक चलता रहेगा यह अनैतिक व्यापार?'[12]आखिर यह भूख कहाँ से जन्मी है? इसे पनपने, बढ़ने में कौन सहायता दे रहा है? व्यवस्था तो बढ़ती जनसंख्या पर दोषारोपण कर दोषमुक्त हो जाना चाहती है। किन्तु सच्चाई यह है कि भूख को जिन्दा रखने में व्यापारियों, राजनयिको का लाभ है। भूखे समाज का शोषण आसान होता है और अफसोस यह है कि वे सशक्त हाथ जो अपने पसीने से समय का पहिया घुमाते है, अपनी ताकत से अपरिचित है क्योंकि उनके हाथ नमक और प्यास के टुकडों को ढूढ़ते-ढूढ़ते एक दिन काठ के हो जाते है।[13] कर्ज में ताउम्र खटते, अलाव से सुलगते लोगों की मुठिठ्याँ यदि प्रतिकार में न बँधे तो क्या करें? यदि ये मशाल न सुलगायें तो क्या करें ? इनके लिये कभी कोई आपात कालीन बैठक नहीं बुलाई जाती। कहीं कोई युद्ध विराम नहीं होता। रामकली

के पेंट की आग से क्यों नहीं बजती दमकल की घंटिया।।[14] सामाजिक राजनैतिक क्षेत्रों के बिखराब ने विद्रोह को पनपने में सहायता दी। स्वतन्त्रता जैसा खूबसूरत शब्द संविधान की शोभा बन गया। स्थिति यह है कि –

जो हम करे न्याय है। जो हम छापें समाचार है। जो हम सोचे हित है,
हम सब समाज सेवी है, बाकी सब देशद्रोही है।[15]

इस प्रकार आज तक राजनीति का शोषण होता रहा है। खून की खाड़ी में अत्याचार की नाव तैरती रही है। भय के बियाबान जंगल में कुछ असमर्थ गुहारें चीखती रहीं और ठन्डी होती रही। नेतृत्व कितना बेईमान हो जाता है, देखकर कवि हैरान है। सम्पन्न वर्ग ने अपनी दीवारों पर गाँधी को लटका कर सारी सुविधाएँ बटोर ली। बड़ी बड़ी गाड़ियों में धूल उड़ाते, भारत के तथा कथित भाग्य विधाता अलमस्त घूम रहे है और दूसरी और देश के करोड़ो जन दु:ख और दरिद्रता के खौलते समुद्र में डूब रहे है। उनके लिये कोई किनारा नहीं!

सूरज का स्वप्रदर्शी कवि जीवन भरी दु:सह स्थितियों से जुझता रहा। अपने समय की विकृत राजनीति की शब्दों के कोडों से खाल उधेड़ता रहा। संसद को निरन्तर करने वाले सवाल पूछता रहा। किन्तु दुर्भाग्य... अंधों ने मिलकर स्वराज्य की रेवड़ियाँ बाँट ली। लुटेरो के घर से निकलती उफनती नदी कुर्सियो के मुहानो में बँट गई–

बटाँ वर्णो में वर्ग चरित्र, कहाँ है संविधान के मित्र?
डूबती मतदाता की नाव, भ्रष्ट अधिकारी नि:सन्देह, चूसते उत्पीडित की देह।[16]

इस प्रकार स्वातंत्रयोत्तर भारत के प्रवंचित आदमी की जीती जागती तस्वीर आज की कविता सम्मुख रखती है और उसके सामने जनशत्रु के प्रति हिंसक होने का विकल्प प्रस्तुत करती है। आज का कवि स्थितियों में परिवर्तन का जोखिम उठाने को तैयार है। वह परिवर्तन के लिये संकल्पित है। बर्बरता के विरोध में यदि युद्ध भी करना पड़े तो वह भी उसे स्वीकार है। क्योंकि उसकी दृष्टि में यह युद्ध नहीं धर्म निरपेक्षता को विजय के लिये मानवता का शान्ति आह्वान है।

यदि बर्बरता खून के नशे में कैद है। तो युद्ध का इलाज केवल युद्ध है।[17]

**संदर्भ-सूची**


1. डा0 विनय-विद्रोह और साहित्यिक आन्दोलन, पृ0 148
2. इस्सर, देवन्द्र कुमार – विरेचन या विद्रोह, पृष्ठ 14
3. नागार्जुन- हरिजन गाथा, उद्धृत आज की कविता, पृ0 138
4. देवताले, चन्द्रकान्त -लक्कड बग्घा हँस रहा है पृ062
5. जगूड़ी, लीलाधर-बची हुई पृथ्वी, पृ0 103
6. वही, पृ0 105
7. जोशी, राकेश-एक दिन बोलेंगे पेड़ पृ0 71
8. ब्रजेश्वर-अग्नि कोण 3 उद्घृत वाम कविता, लेखक ललित शुक्ल पृ0 14
9. शुक्ल, ललित, वाम कविता पृ0 7
10. धूमिल-संसद से सड़क तक, पृ0 33
11. सक्सैना, सुधीर-सूरज उगने से पहले, पृ031
12. डा0 देव, वचन -कविताए धूप छांव की, पृ0 75
13. देवताले, चन्द्रकान्त-लकड़ बग्घा हँस रहा है। पृ0 13
14. उपाध्याय, अक्षय – वे कुल तीन थे, उद्घृत आज को कविता, पृ0 112,113,117
15. शुक्ल, ललित – सुनो मेरे दोस्त, उद्घृत वाम कविता, पृ 55
16. धूमिल- संसद से सड़क तक, पृ0 100,101
17. चतुर्वेदी, जगदीश-डूबते इतिहास का गवाह, पृ० 79

# समसामयिक समस्याओं के समाधान में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता

**डा० सुनीता कुमारी***

***शोध सार***

*आज मनुष्य जातिवाद, आतंकवाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद, आर्थिक असंतुलन, पर्यावरण अंसतुलन, सामूहिक विनाश के हथियार, मानसिक रोग आदि समस्याओं का सामना कर रहा है। अगर इनका सम्यक् समाधान समय रहते हुए नहीं हुआ तो परिणाम समूल विनाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा। वर्तमान में नैतिकता एवं चारित्रिक पतन अपनी पराकाष्ठा पर है। नैतिक मूल्य का कोई औचित्य नहीं रह गया है। इसके कई कारण हो सकते हैं परन्तु प्रमुख कारण है समाज में उच्च मूल्यों एवं आदर्शों को धारण करने वाले व्यक्तियों का अभाव। आज जब हम चारों तरफ देखते हैं तो कहीं भी आदर्श चरित्र दिखाई नहीं देता, जिसको देखकर उसका अनुसरण करने की प्रेरणा मिले। श्रीमद्भगवद्गीता इस प्रकार के आदर्श व्यक्तित्व को समाज में उभारने का प्रयत्न करती है। वह मानव को ज्ञानयुक्त भक्तिभाव से निष्काम कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करती है। फलासक्ति से मुक्त होकर अपने कर्तव्यपथ पर अपने-पराए के भाव से ऊपर उठकर अपने पथ पर अग्रसर रहने का संदेश देती है। इस प्रकार यह समसामयिक समस्याओं के समाधान में अपना अप्रतिम योगदान कर अपनी प्रासंगिकता को अक्षुण्ण रखती है।*

समसामयिक समस्याओं के समाधान में श्रीमद्भगवद्गीता की प्रासंगिकता इस रूप में ही स्वयंसिद्ध है कि इसका अवतरण युद्ध-भूमि में मोहासक्त योद्धा के मोह-भंग हेतु हुआ था। यह जीवन संघर्ष से पलायन न कर उसमें प्रवृत्त करने वाला ऐसा शास्त्र है जिसका संगीत युद्ध से युद्ध के लिए रचा गया था। यह संवाद-ग्रंथ है जो प्रश्नों को आमंत्रित कर उनके निराकरण में रुचि लेता है तथा अपनी ओर से कुछ भी आरोपित नहीं करता है। यह प्रत्यक्ष जीवन से जुड़ा है, उसे मिथ्या घोषित नहीं करता है। गीता की परिधि में सब कुछ आता है- व्यक्तित्व निर्माण से लेकर समष्टि-कल्याण तक। परम्परा इसे ज्ञान का आकर-ग्रंथ मानती है किन्तु व्यवहार की दृष्टि से गीता सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष का आधान कर नई ऊँचाईयों की दिशा में अग्रसर होने हेतु प्रेरित करती है।

श्रीमद्भगवद्गीता योग का आकर ग्रंथ है। यहाँ 'योग शब्द पारंपरिक एवं विशिष्ट रुप में प्रयुक्त हुआ है जो अत्यंत व्यावहारिक और व्यापक है तथा जिसकी प्रासंगिकता स्वयंसिद्ध है। इस ग्रंथ के प्रत्येक अध्याय के अंत में उसमें वर्णित कथ्य के अनुसार योग शब्द संयुक्त करके उसका नामकरण किया गया है। यहाँ तक कि युद्धक्षेत्र में अपने गुरुजनों, सम्बन्धियों एवं पारिवारिक जनों को देखकर जब अर्जुन अपने गाण्डीव धनुष का त्याग कर रथ के पृष्ठ भाग में विषादयुक्त होकर बैठ जाता है, इसका वर्णन करने वाला अध्याय 'अर्जुनविषादयोग' के नाम से जाना जाता है। इसी भाँति इस ग्रंथ के अन्य अध्यायों के नाम है, जैसे, कर्म की व्याख्या करने वाला अध्याय कर्मयोग, भगवान की विभूति का वर्णन करने वाला अध्याय विभूतियोग, भगवान के विश्वरूप का दिग्दर्शन कराने वाला अध्याय विश्वरुपदर्शनयोग, त्याग एवं मुक्ति का विवेचन करने वाला अध्याय मोक्षसंन्यासयोग आदि।

योग का सामान्य अर्थ जोड़ या मेल है। अर्जुन का विषाद से योग हो जाता है, इसी कारण वह अपने कर्तव्य से विमुख होकर हीन भावना से ग्रस्त हो जाता है। श्रीकृष्ण उसके योग को विषाद से

*एसो. प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, बी.एस.एम. (पी.जी.) कॉलेज, रुड़की (हरिद्वार)

विच्छिन्न करके कर्म से संलग्न कर देते हैं जिसके लिए उन्हें विभिन्न साधनों को अपनाना पड़ता है, जिन्हें योग की संज्ञा दी गई है। श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग, भक्तियोग, बुद्धियोग आदि का विवेचन किया गया है तथा यह बताने का प्रयास किया गया है कि वस्तुतः ये सभी कर्मयोग के साधक है जो अंततः निष्काम कर्म की ही प्रेरणा देने हेतु प्रयुक्त हुए है जो न केवल मोक्षदायिनी है वरन् इनकी परिणति समसामयिक समस्याओं के सम्यक् समाधान में अतुलनीय है।

भगवद्गीता में कहा गया है कि-''जनकादि ज्ञानीजन भी लोकसंग्रह के लिए कर्म द्वारा ही परमसिद्धि को, प्राप्त होते हैं, क्योंकि श्रेष्ठ पुरुष जो-जो आचरण करते है अन्य पुरुष उसके ही अनुसार बर्तते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देते हैं, लोग भी उसके अनुसार बर्तते हैं।''[1] इसके अतिरिक्त भगवान श्रीकृष्ण स्वयं एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में समाज के आगे एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वे कहते हैं, हे अर्जुन! मुझे इन तीनों लोकों में न तो कुछ कर्तव्य है और न कोई भी प्राप्त करने योग्य वस्तु अप्राप्त है, तो भी मैं कर्म में ही बरतता हूँ। क्योंकि यदि मैं सावधान हुआ कदाचित् कर्म में न बरतूं तो हे अर्जुन! सब मनुष्य मेरे बर्ताव के अनुसार बरतने लग जायें। यदि मैं कर्म न करूँ तो सब लोग भ्रष्ट हो जाए और मैं वर्णसंकर का करने वाला होऊँगा तथा सारी प्रजा का हनन करने वाला अर्थात मारने वाला बनूंगा।[2] कर्म एवं कर्म करने वालों की श्रेष्ठता का बखान करके गीता ने लोगों के समक्ष यह आदर्श प्रस्तुत किया है कि संसार में आदर्श की उच्चता कर्माधीन है। इसके बिना सभी कुछ निःसार है।

कर्म के आदर्श की यह आधारशिला योग की भूमि ही निर्मित की जा सकती है। क्योंकि योग संन्यास है, संकल्प है, त्याग है, आत्मज्ञान है, आसक्ति का त्याग है और कर्म की कुशलता है। इन सबसे युक्त व्यक्ति योगी कहलाता है और अपने योगयुक्त आत्मबल के सहारे साधक समसामयिक समस्याओं के समाधान में अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखता है। योगी की व्याख्या करते हुए गीता कहती है-सन्यास का नाम ही योग है और जो संकल्प का त्याग नहीं करता, वह कोई भी पुरुष हो, योगी नहीं होता अर्थात् योगी वही है जिसने संकल्पों का परित्याग कर दिया हो।[3] संकल्प-त्याग की व्याख्या करते हुए भगवान कहते हैं जो पुरुष कर्मफल का आश्रय न लेकर करने योग्य कर्म करता है, वह संन्यासी तथा योगी है। केवल अग्नि का त्याग करने वाला संन्यासी नहीं है और केवल क्रियाओं का त्याग करने वाला योगी नहीं है।[4]

योगी के स्वरूप की व्याख्या करते हुए गीता में कहा गया है जिसकी आत्मा ज्ञान-विज्ञान से तृप्त हो, जो कूटस्थ है, जिसने इन्द्रियों की जीत लिया है, जिसके लिए मिट्टी,पत्थर और सोना समान है, वही योगी कहलाता है।[5] आसक्ति का त्याग और सफलता तथा असफलता में सम भाव रखना ही योग है, योग कर्मो की कुशलता का नाम है। जब तक अपने को सभी ओर से हटाकर केवल कर्म के साथ योग नहीं किया जाएगा, तब तक कुशलता की उपलब्धि नहीं हो सकती है।[6] कहने का तात्पर्य यह है कि योगसाधना करने वाला अपने कार्य एवं क्षेत्र का विशेषज्ञ होता है। उसकी यह विशेषज्ञता समसामयिक समस्याओं को समझने और उस समझ के साथ उसके सही समाधान का मार्ग प्रशस्त करती है।

भुखमरी, गरीबी, बेराजगारी, बढ़ती जनसंख्या एवं निरंकुश अपेक्षाओं ने पूरी मानवजाति को संत्रस्त कर रखा हैं। मनुष्य ने अपने लोभ व उपभोक्तावाद की वृत्ति के वश में होकर विज्ञान द्वारा उपलब्ध शक्ति से प्रकृति के उपलब्ध संसाधनों का आवश्यकता से अधिक दोहन किया है, इनके कारण आज जिस प्रकार के पर्यावरण का खतरा उत्पन्न हुआ है, उससे मनुष्य ने भविष्य की पीढ़ियों के लिए पृथ्वी को नरक बना दिया है। पर्यावरण के संकट का सामना करने के लिए आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं को सीमित करना जरूरी है गीता का उपदेश हमें आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं को संतुलित रखने में सहायता करती है। श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि अर्जुन! यह योग न तो बहुत खाने वाले का सिद्ध होता है और ना ही बिलकुल नहीं खाने वाले का। यह न अतिशयन करने के स्वभाव वाले का और न अत्यंत जागने वाले को ही सिद्ध होता है। दु:खों का नाश करने वाला योग तो यथायोग्य आहार और विहार करने वाले तथा कर्मों में यथायोग्य चेष्ठा करने वाले और यथायोग्य शयन करने तथा जागने वाला का ही सिद्ध होता है।[7] अति का त्याग एवं समव्यवहार ही योग्य है। गीता का इस संदेश तथा प्रासंगिकता एवं समसामयिकता पर क्या कोई प्रश्नचिह्न लग सकता है?

श्रीमद्भगवतगीता प्रेरित इन संस्कारों की व्यावहारिकता एवं प्रासंगिकता उनके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों को उन्नत एवं सभ्य बनाने के लिए है न कि आडम्बरपूर्ण कर्मकाण्ड को संपन्न करने से। संस्कार व्यक्ति के चेतन एवं अवचेतन मन पर उदात्त आदर्शो की स्थापना करते हैं। इसके विपरीत संस्कारहीन मनुष्य अनैतिकता एवं दुराचार के बन्धन में जकड़ता जाता है और पतन को प्राप्त होता है। वस्तुत: संस्कार मानवीय आशा, विश्वास एवं भावनाओं के आधार रहे हैं। आज प्रगति एवं विकास की अंधी दौड़ एवं एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में मानव मानवोचित गुणों से विमुख करता जा रहा है। मनुष्य पहले की अपेक्षा आज अधिक अनैतिक एवं असामाजिक बनता जा रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि श्रीमद्भगवद्गीता प्रदत्त संदेशों और संस्कारों के पीछे छिपी भावनाओं को समझकर उनके प्रचलित प्रतीकों के अर्थ को समझकर उन्हें अपने जीवन में अपनाकर समाज में एक उच्च नैतिक आदर्श की स्थापना की जा सकती है जो समसामयिक समस्याओं के समाधान के लिए सदैव प्रासंगिक रहेंगे।

**सन्दर्भ सूची:**

1. यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन:।
   स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।3/21, श्रीमद्भगवद्गीता
2. वही. 3/22-24
3. यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव।
   न ह्यासंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन।। वही, 6/2
4. अनाश्रित: कर्मफलं कार्यं कर्म करोति य:।
   स: संन्यासी च योगी च न निरग्निं चाक्रिय:।। वही, 6/1
5. ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रिय:।
   युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्ट्राश्मकाञ्चन:।। वही, 6/8
6. योगस्थ: कुरु कर्माणि सङ्गं धनञ्जय।
   सिद्धयासिद्धयो: समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।। वही, 2/48
7. वही, 6/16-17

# देवभूमि की समृद्ध ऐतिहासिक पौराणिक विरासत : लाखामंडल

**डा० स्वर्णलता मिश्रा***

उत्तराखण्ड में मसूरी के निकट स्थित 'लाखामंडल' महाभारतकालीन किंवदातियों की वह स्थली है जहाँ दुर्योधन ने लाक्षागृह बनवाकर पांडवो को भस्म कर देने की साजिश रची थी और पाँडव वहाँ से सुरक्षित निकल भागे थे। समुद्रतल से 3650 फीट की ऊँचाई पर बसा यह प्राचीन स्थल यमुना नदी की पर्वतीय उपत्यका में यमुना और रिखवाड़ नदियों के संगम पर है।[2]

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर लाखामंडल प्रथम दर्शन में गढ़वाल के आम गाँवो जैसा ही लगता है किन्तु पुरावशेषों का अवलोकन करने पर यह इतिहास का घर लगता है। यहाँ अधिकांशत: जौनसारी भाँवर जनजाति के लोग रहते हैं जो मक्का, धान, आलू तथा तम्बाकू की खेती के अतिरिक्त भेड़ बकरी की खाल का व्यवसाय भी करते है। यहाँ की स्त्रियाँ अत्यंत श्रमजीवी है।

किंवदातियों के अनुसार लाखामंडल में पांडवो ने अनेक मंदिरो की स्थापना की थी। यहाँ एक लाख मूर्तियाँ थी इसलिये इसे लाखेश्वर या लाखामंडल नाम मिला।[2] कालान्तर में यह सम्पदा भूमि में दब गई। वर्तमान मंदिर शंकाराचार्य का बनवाया हुआ और प्राचीन ध्वंसावशेषों से निर्मित है। लोक परम्परा के अनुसार यह क्षेत्र राजा विराट के शासन में था जिनकी पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से हुआ था। प्राप्त शिलालेख के आधार पर यहाँ के शिव मंदिर का निर्माण आठवी–शताब्दी में सम्राज्ञी ईश्वरा ने अपने स्वर्गवासी पति की स्मृति में करवाया था।[3]

उचित देखभाल के अभाव में यहाँ के कलावशेष सैकड़ो की संख्या में मंदिरों के प्रांगण व निकटवर्ती क्षेत्र में बिखरे पड़े है। इनमें कलात्मक भूमि आमलक, गवाक्ष व परिकर सम्मिलित है। पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षण में लिए जाने के बाद भी विभाग द्वारा पृथ्वी के गर्भ में दबी विपुल शिल्प संपदा को प्रकाश में लाने हेतु कोई उल्लेखनीय खननकार्य नहीं हुआ है। भारत सरकार द्वारा स्थानीय लोगो की एक समिति को ही इस स्थल की सुरक्षा व संरक्षण का कार्य सौपा गया है।

गाँव में प्रवेश करते ही ऊँचाई पर स्थित छत्र शैली में निर्मित पाषाण मंदिर की सीढ़िया दिखाई देने लगती है। अंतिम सीढ़ी में दाहिने स्लेटी छत वाले चबूतरे पर पूजा के समय बजाये जाने वाले पीतल के बड़े–बड़े नगाड़े रखे है। सीढ़ियाँ पार करते ही मंदिरो का विस्तृत प्रांगण आ जाता है। पूर्वाभिमुखी प्रवेशद्वार से सूर्योदय होते ही सूर्य की प्रथम रश्मियाँ मंदिर को अद्भुत दीप्ति प्रदान कर देती है। मंदिर के बाह्य मंडप में शताब्दियों पुराने काले चमकदार पत्थर से निर्मित नंदी आज भी मंदिर की रखवाली कर रहे है। मंदिर की बाह्य भित्ति की रसिकाओं पर गंगा–जमुना, महिषासुर मर्दिनी, कुबेर इत्यादि की आकृतियाँ उत्कीर्ण है। रसिकाओं के तोरण, कार्तिकेय, गणेश एवं कुबेर की मूर्तियो से अलंकृत है। बाह्य मण्डप के प्रवेश द्वार के दाहिनी ओर महिषासुर मर्दिनी की लगभग चार फुट ऊँची प्रतिमा है। मंदिर का भीतरी मण्डप व गर्भगृह विविध कलात्मक शिल्पो से भरा पड़ा है।

गर्भगृह के बीचोबीच पश्चिमी भित्ति की ओर लगभग सवा चार फीट की समपाद मुद्रा में सूर्य प्रतिमा अवस्थित है, जिसका दाहिना हाथ खंडित हो चुका है। सूर्य के दोनो हाथ कटि से ऊपर उठे हुए

*अध्यक्ष एवं रीडर, चित्रकला विभाग (सेवा निवृत), एस.एस.डी.पी.सी. महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

है और उनमें वे सनाल पुष्प धारण किये है। विविध आभूषणों से अलंकृत सूर्य देव का मुकुट कुल्लेदार, मकराकृति कुंडल, हाथों में कंकड, एकावली हार है । दोनो हाथों में त्रिवलयुक्त उत्तरीय, पैरों में उपानह, धोती व कटि में मेखला शोभायान है। सिर के पीछे वर्तुलाकार पद्म पुष्प उकेरित खंडित प्रभामंडल तथा सिर के ऊपरी परिकर पर उड़ते हुए विद्याधर युगलों का अंकन है। सूर्य के पैरों के निकट छोटी सी भूदेवी की प्रतिमा, दायें-बायें पत्नी निभुक्षा, छाया एवं दण्ड-पिंगल की आकृतियों उकेरित है। सूर्यदेव की मुखमुद्रा शांत है परन्तु उनका शरीर बलिष्ठ, सशक्त रूप में उत्कीर्ण है। 4

मंदिर के गर्भगृह में अधिकांश प्रतिमायें शिव-गौरी तथा विष्णु की है। देवी के विविध रूप चामुण्डा, महिषासुर मर्दिनी व भगवती दुर्गा की प्रतिमायें दर्शनीय है। ताण्डव नृत्यरत शिव, तपलीन उमा तथा गणपति की प्रतिमाओं के अतिरिक्त सैकड़ों की संख्या में छोटे-बड़े शिवलिंग जगह-जगह बिखरे पड़े है। मंदिर में दाहिनी ओर चबूतरे की वेदी पर एक बड़ा शिवलिंग स्थापित है। इस चबूतरे पर तथा मंदिर के पीछे काले पत्थर की दो आदमकद प्रतिमायें स्थानक मुद्रा में स्थित है। पुरूषाकृति के लावण्य से मंडित ये आकृतियों सिर पर मुकुट, गले में हार, हाथों में कड़े, कमर में मेखला धारण किये है पर चेहरे व कुछ अंग किंचित खंडित हो चुके है। कुछ लोग इन्हें द्वारपाल कहते है, कोई जय-विजय व कोई भीम-अर्जुन की मूर्ति बतलाता है। यह भी संभव है कि ये तत्कालीन शासकों अथवा गणमान्य व्यक्तियों की प्रतिमायें हो।

मंदिर से लगभग दो सौ मीटर की दूरी पर संकरी चार दीवारी से घिरे-हाते में 3फीट X 1.5 फीट का दमकते हुए काले पत्थर का अद्भुत शिवलिंग है।[5] इसकी ओप (पॉलिश) इतनी चिकनी व चमकदार है कि उस पर पानी डालकर दर्पण-सदृश अपना प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। यहाँ के मंदिर व मूर्तियों के बारे में स्थानीय लोगों में तरह-तरह के किस्से व किंवदातियाँ प्रचलित है। मूर्तियो एवं कलावशेषों की शैली के आधार पर पुरातत्व विशेषज्ञो ने इन्हें आठवी से बारहवी सदी का ठहराया है। यहाँ स्थित एक बंद गुफा के संबंध में मान्यता है कि पांडव इसी गुफा से होकर लाक्षागृह की अग्नि से बचकर निकले थे।

लाखामंडल शहर के भीड़ भरे वातावरण से दूर एक अत्यंत सुरम्य प्राकृतिक सौंदर्य से साथ साथ लोक-विश्रुत, वैभवशाली मूर्तिशिल्पों के इतिहास का भी भ्रमण कराता है, पर इस अतुल्य ऐतिहासिक पौराणिक विरासत के लिये निर्मित लघु संग्रहालय के बेहतर रखरखाव एवं पर्यटकों को भारत की इस वैभवशाली धरोहर से परिचित कराने के लिए इस क्षेत्र में समुचित सुविधाओं का विकास करने की आवश्यकता है।

**संदर्भ-स्रोत**

1. डा0 हरिमोहन, उत्तरांचल में पर्यटन के नये क्षितिज पब्लिकेशन तक्षशिला, दरियागज, नई दिल्ली, पृ0 सं 247
2. वही, पृ0 सं 247
3. वही, पृ0 सं 249
4. चतुर्वेदी, श्री नारायण, सूर्योपासना और ग्वालियर का विवस्वान मंदिनर, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 सं 64
5. डा0 हरिमोहन, उत्तरांचल में पर्यटन के नये क्षितिज, पृ0 सं 249

# शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन के विविध आयाम

**डॉ० गुड्डी बिष्ट***

***शोधसार***

*साठोत्तरी हिन्दी कथा साहित्य की चर्चित कथाकार शिवानी ने अपने उपन्यासों में अत्यंत आत्मीयता, सजगता, संवेदनशीलता एवं कलात्मकता के साथ नारी जीवन के विविध आयामों का चित्रण किया है। शिवानी की कहानियों में नारी की पीड़ा, प्रेम, विवशता, त्याग एवं मुक्ति के स्वर मुखरित हुए है। उनकी कहानियों में कस्बाई, नगरीय एवं महानगरीय जीवन से संबंद्ध मध्यमवर्गीय नारी चरित्रो का विविधतापूर्ण चित्रण हुआ है। शिवानी के नारी पात्र शैक्षिक सांस्कृतिक परिष्कार के माध्यम से खुद को सशक्त कर शोषण और अन्याय का प्रखर विरोध तो करते हैं किन्तु इसके साथ ही संस्कारों से जुड़कर आगे बढ़ना और मानवीय मूल्यों को संजो कर रखना शिवानी के कथा लेखन का प्रतिपाद्य रहा है।*

व्यष्टि और समष्टि के द्वन्द्वों में कथावस्तु का ताना–बाना बुनने वाली तथा व्यक्तित्व को लेकर उपन्यास जगत में एक सम्मोहन का सृजन करने वाली शिवानी ने महिला उपन्यासकारों के बीच जो स्थान अर्जित किया है, वह श्लाध्य है। इनकी औपन्यासिक रचनाएं व्यक्ति विशेष को प्रधानता देते हुए स्वयं उदात्तता की सीमा का स्पर्श करने लगती हैं। इनके उपन्यासों मे कहीं ऐसी नारी की कहानी है जो अपने मुग्धकारी सौन्दर्य के कटु अनुभव उठाती हुई अपनी जीवनचर्या पूरी करती है तो कहीं ऐसी स्त्री का चित्रण है जो अकेली ही समाज से टक्कर लेती हुई अपने व्यक्तित्व को उदात्त एवं प्रेरणामय बनाती है। कहीं प्रेम व विवाह का द्वन्द्व है, तो कहीं राजनीति व रोमांस के रेशमी धागों से बनी गाथा। शिवानी के उपन्यासों में उत्कृष्ट सांस्कृतिक चेतना भी है और मानव जीवन की विषमताओं का सूक्ष्मता के साथ चित्रांकन भी।

लेखिका का मानना है कि ईश्वर प्रदत्त सौन्दर्य कभी–कभी नारी जीवन के लिए अभिशाप बन जाता है। शिवानी का सुरंगमा एक ऐसी ही नारी की कहानी कहता है जो मुग्धकारी सौन्दर्य के कटु अनुभव सहती समाज में जीती है और खासकर ऐसी नारी जिसमे कुछ कर गुजरने की ललक हो। सुरंगमा का सौन्दर्य यहां इसी बात की पुष्टि करता है यहां पर व्यक्ति सिर्फ सौन्दर्य का पुजारी है। ''मैं बड़ी देरी से आपके पीछे आ रहा था। लाखों में एक चेहरा है आपका –एकदम स्क्रीन टेस्ट के लिए ही बनाकर पृथ्वी पर भेजा है शायद विधाता ने। कहां–कहां नहीं घूमा पर चेहरा मिलता भी तो भावनाहीन और जहां भावनापूर्ण चेहरा जुटता वहां एक न एक दोष या तो आँख छोटी या चिबुक तीखा या नाक बहुत लम्बी पर वाह तबीयत खुश कर दी आपने। जैसा ही चेहरा वैसा ही फीगर मिस क्या शुभनाम है आपका? पता? फोन नम्बर।''[1]

जहां एक तरफ '**सुरंगमा**' में लेखिका ने व्यक्ति को रूप सौन्दर्य का पुजारी माना है वहीं दूसरी तरफ '**कैंजा**' में उनका व्यक्ति समाज से भागने की कोशिश करता है लेकिन वह जा भी तो कहां सकता है। 'कैंजा' की नायिका नंदी एक बच्चे को माँ का नाम देकर स्वयं समर्पित हो जाती है। शिवानी ने नारी का समाज के प्रति एक समर्पित रूप दिखाया है कि एक स्त्री किस प्रकार अपने अन्दर दया माया और ममत्व का भाव छिपाये रखती है। सिर्फ एक बच्चे की जिद पर उसे वापस गाँव लौटना पड़ता है–

*असिस्टेण्ट प्रोफेसर, हिन्दी, हे.न.ब.ग. केन्द्रीय वि.वि. श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखण्ड

''जिस जन्मभूमि की धरा पर मृत्युपर्यन्त पैर न धरने का निश्चय कर वह एक दुधमुंहे को लेकर निकल गई थी। आज विषम परिस्थितियाँ उसे फिर वही खींच लाई थी।[2] कैंजा की नारी पात्र नंदी जहाँ आदर्श की ओर झुकती दिखाई गई है वहीं सुरेश भट्ट पुरुष पात्र स्वार्थी, लम्पट, कर्महीन, दुष्चरित्र, कामुक, व्यसनी, दिखाया गया है, जिसके माध्यम से लेखिका ने समाज के नग्न यथार्थ को उद्घाटित किया है। पुरुष समाज नारी को एक उपभोग की वस्तु मानकर उसका उपभोग करना चाहता है। यही मात्र उसका उद्देश्य हैं। नंदी एक ऐसे व्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर रही है जो आधुनिक शिक्षिता होने पर भी नारी सुलभ भावनाओं जैसे दया, माया, ममता से परिपूर्ण है एवं अपने जीवन का बलिदान करती है सिर्फ एक बच्चे के कारण। वही बच्चा जब बड़ा होकर पिता का नाम पूछता है तो नंदी को लौटना पड़ता है वापस- ''पुत्र की इस घोषणा के पश्चात् नंदी के लिए वह पहाड़ यात्रा अनिवार्य हो उठी थी। भावुकता के क्षणिक आवेश में आकर वह आँखे बन्द कर जिस अंधे कुँए में कूद गई थी वहाँ से अब लौटने का कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता।[3] उपन्यास का पुरुष पात्र सुरेश दुष्चरित्र एवं व्यसनी होने के कारण नंदी के मन में संकोच व संदेह है कि कहीं उस पापी ने अपने कुकर्मो से किसी और बच्चे को समाज में बेसहारा जीने को न छोड़ दिया हो। ''शरीर पर निरन्तर अत्याचार करने वाला वह दुराचारी न जाने प्रकृति से मृत्युदण्ड पा चुका हो और यह भी सम्भव था कि फिर से विवाह कर वह अब ऐसे बीसों रोहितों का पिता बन चुका हो।''[4] गौरापंत शिवानी एक ऐसे पारिवारिक परिवेश से हैं जिनकी जन्मभूमि पहाड़ अर्थात् कुमाऊं मंडल है। पहाड़ी संस्कारों की होने के कारण आपने पहाड़ की पीड़ा और खासकर पहाड़ी नारी को अपने लेखन का मुख्य हिस्सा बनाया है। पहाड़ी नारी का सौन्दर्य शिवानी जी के उपन्यायों में यत्र-तत्र सर्वत्र दिखता है। पहाड़ी नारी का दर्द और पहाड़ी नारी की मर्यादा को भी वह अपने लेखन का प्रबल पक्ष मानती हैं। शिवानी की नारी पात्र विपत्तियों के प्रहार के कारण टूटती नहीं बल्कि नई राहें तलाशती हैं यही इनके उपन्यासों की भी प्रमुख विशेषता है। प्रेम और भावुकता की प्रतिमूर्ति 'नन्दी' शिवानी की एक ऐसी ही स्त्री पात्र है जो कुंवारी होने पर भी दूसरे के बच्चे की माँ का बोझ सहती अपना जीवन ही समर्पण कर बैठती है और संघर्षरत है। परिस्थितियों का सामना करने पर बच्चा जब माँ से पिता का नाम पूछता है तो माँ पर क्या बीतती होगी इसका अनुमान लगाया जा सकता है वह भी एक कुंवारी लड़की जिसने सिर्फ बच्चे के जीवन को बचाने के लिए ही नहीं बल्कि उसे सम्भालकर अपना जीवन त्यागा है। जब बच्चे को पता चलता है कि यह मेरी माँ नहीं बल्कि कैंजा है तो वह व्याकुल होकर विद्रोही पुत्र को सम्भालती है- ''रोहित, रोहित ऐसा क्यों कर रहे हो बेटा? ऐसा तू कभी नहीं करता था। नंदी ने विद्रोही पुत्र को बांहों में बांधने की चेष्टा की तो वह छटपटाया फिर उसकी छाती से मुंह छिपाकर जोर-जोर से सिसकने लगा- मैं तो तुमकों कैंजा नहीं कहूँगा, कभी नहीं।''[5]

यथार्थ हमेशा यथार्थ होता है बच्चे को लाख समझाने पर भी नंदी के मन की कचोट समाप्त न हो सकी - ''कौन कहता है मैं तेरी कैंजा हूँ पगले! कौन? पर हंसकर उसे बहलाने की लाख चेष्टा करने पर भी रोहित की कैंजा फिर हंस नहीं पाई।''[6]

शिवानी की नारी पात्र कैंजा यानि कि नंदी व्यक्तिगत स्वार्थो से ऊपर उठकर परमार्थ की बेदी पर अपने सुखों का बलिदान देती है। नारी को समाज में उदात्तता का प्रतीक, आदर्श एवं प्रेम का प्रतीक दिखाना शिवानी का ध्येय है क्योंकि स्त्री का जीवन समाज के प्रत्येक पहलू का पर्याय है इसी कारण

छायावाद के आधार स्तम्भ जयशंकर प्रसाद की नारी जाति को लेकर जो पंक्तियाँ लिखी गई है वह भी कैंजा अर्थात् नंदी के व्यक्तित्व को उजागर करती हैं–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो। / विश्वास रजत नग–पग तल में
पीयूष स्रोत सी बहा करों / जीवन के सुन्दर समतल में।

इस दृष्टि से यद्यपि आधुनिक युग में तो व्यक्ति का यह स्वभाव अस्वाभाविक सा जान पड़ता है। अपवाद स्वरूप ही किसी लड़की का इतना बड़ा त्याग समाज में देखा जा सकता है, इस तरह हम इसे आदर्श की ओर झुका हुआ उपन्यास ही कहेंगे। नारी जीवन सामाजिक व्यवस्था की धुरी है और अगर साहित्य सृजक उसका आदर्श रूप दिखाता है तो समाज को प्रेरणा मिलती है। कैंजा की नंदी अपने सम्पूर्ण जीवन के सुखों का त्याग कर एक बच्चे को पालती है। समाज में न जाने कितने ही रोहित हैं जो अपने अस्तित्व की तलाश में लगे होंगे। शिवानी का उपन्यास कैजा समाज के लिए नारी का बलिदान है।

शिवानी के अधिकांश नारी पात्र प्रेम में छले गये हैं। आरम्भ में उनका प्रेमी उन्हें रूप सौन्दर्य में बाँधता है और जब वह उस नारी पात्र को पाकर, काम क्षुधा शान्त कर लेता है तब वह उसे बुरे स्वप्न की भाँति भुला देना चाहता है। चाहे वह कृष्णकली की नायिका 'कृष्णकली' हो या 'श्मशान' की चम्पा या 'विवर्त' की नायिका ललिता सभी पुरुष की काम क्षुधा शान्त करने का माध्यम बनी हैं। 'विवर्त' की नायिका ललिता अपने भावी पति के रूप में देखकर उसके व्यक्तित्व के सम्मोहन में बेसुध हो गई– ''मैं सच कहती हूँ मॉसी मेरी जगह यदि आप भी होती तो शायद यही निर्णय लेती न जाने उसके किस पक्ष के सम्मोहन ने मुझे उस दिन अवश कर दिया जैसा विद्वान है, वैसा ही विनम्र जितना ही गम्भीर उतना ही विनोदी। जितनी बार देखो अपनी हीनता मुझे कुंठित कर देती।''[7]

गौरापंत शिवानी जी ने नारी को प्रेम, दया, माया की मूर्ति तो माना ही है किन्तु कुछ उपन्यासों में उन्होंने नारी जीवन की गहन पीड़ा एवं उसकी अवश स्थिति को दर्शाया है। जो शिवानी के पात्रों में स्पष्ट झलकता ही नहीं प्रत्यक्षत: दिखता रहता है। 'विवर्त' की नायिका ललिता अपने प्रवासी पति सुधीर के पास लंदन पहुंचकर जब उसकी बसी गृहस्थी देखती है तो उसका सन्न रह जाना स्वाभाविक है। पति को इस रूप में देखकर उसकी स्थिति इस प्रकार की हो जाती है– ''मुझे किसी ने कील से जमीन में गाड़ दिया था, शरीर के साथ शायद मेरा दिमाग भी अवश हो गया था।''[8] किन्तु सब देखने पर भी वह कुछ न कर पाती विदेश में उसकी कौन सुनता हैं? उसे वह कोई दण्ड न दे सकी, किन्तु उसे विश्वास है कि विधाता का दण्ड विधान अटल है– मेरा यह दृढ़ विश्वास है, मौसी दण्ड हम नहीं स्वयं विधाता देता है, एक न एक दिन इच्छाकृत अपराध का दण्ड व्यक्ति को अवश्य मिलता है।[9]

गौरापंत शिवानी ने नारी जीवन के विविध आयामों को छुआ है इसी का एक रूप नारी सौन्दर्य भी है। 'सुरंगमा' की माँ और बेटी दोनों अत्याधिक सौन्दर्य की धनी है। इसी सौन्दर्य के कारण सुरंगमा जैसी शिक्षित और शालीन युवती के लिए भी सौन्दर्य, पुरुष समाज में अभिशाप जैसा ही दिखाया गया है। 'कैंजा' की नायिका में शारीरिक सौन्दर्य की अपेक्षा हृदयगत सौन्दर्य का विस्तार है। शिवानी के 'चौदह फेरे' में भी कई स्थानों पर रमणी के सौन्दर्य का मोहक रूप पुरुष को उन्मादित करने के लिए

पर्याप्त दिखाया गया है – ''गठरी सी सिमटी अपनी नई पत्नी को देखकर कर्नल को एक और चेहरे की स्मृति विह्वल कर दे रही थी। घोड़े भगाती विल्सन, जिसकी किशोर पिंडलियां तंग जोधपुरी में उभर आती थी स्टोर्ट ब्लाउज से झांकता उन्मुक्त यौवन, नीले समुद्र सी उदार आँखे और कंधे पर झूलता काशगुच्छ सा बालों का गुच्छा।''[10]

हमारे देश में स्त्री सुरक्षा का कोई मजबूत विधान नहीं है। प्रतिवर्ष स्त्रियों के प्रति आपराधिक मामलों में बढ़ोत्तर हो रही है और समसामयिक समय में भी स्त्रियाँ दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या और बलात्कार जैसे जघन्य अपराधों की शिकार हैं इतना होने पर भी शैक्षिक और सांस्कृतिक सुधार के साथ भारतीय स्त्री आर्थिक रूप से आत्म निर्भर हो गई है। जिससे उसकी स्वयं की मानसिकता और समाज की मानसिकता में धीरे-धीरे बदलाव की उम्मीद है। उपर्युक्त समस्याओं को लेकर शिवानी ने अपने उपन्यासों में अनेक प्रश्न उठाये हैं। 'कालिंदी' उपन्यास शिक्षित नौकरी पेशा वाली महिला के जीवन पर आधारित है जो कि दहेज प्रथा का विरोध करती है वह दहेज देकर विवाह करने से अपने मामा को मना कर देती तथा बारात को वापस लौटा देती है और लड़के वालों से कहती है- ''आपका बेटा हमें नहीं खरीदना है जाइए इसी क्षण अपनी बारात लौटा ले जाइए और जहां अपने पुत्र का मुंह मांगा दाम मिले वहीं बेच आइए।''[11]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि शिवानी के उपन्यासों में नारी जीवन के संघर्षो को बखूबी चित्रित किया गया है। स्त्री-विमर्श के प्रत्येक पहलू को बड़ी मजबूती के साथ उठाया गया है। नारी जीवन की विभिन्न विड़म्बनाएं नारी जीवन की त्रासदी, शोषण, दोहरा दायित्व यहां तक कि ईश्वर प्रदत्त सौन्दर्य भी उसका अपना नहीं है। समाज की नजरें उस पर भी टिकीं हैं इन तमाम बिन्दुओं पर लेखिका ने बड़ी सजगता के साथ लेखनी चलाई है और मानवीय सोच बदलने का सजग प्रयास किया है। संस्कारों से जुड़कर आगे बढ़ना और मानवीय मूल्यों को संजोकर रखना, नारी जीवन की महत्ता और उसका भास्वर रूप ही उनके लेखन का प्रतिपाद्य रहा है।

**संदर्भ सूची**

1. शिवानी- सुरंगमा, पृ0 12
2. शिवानी - कैंजा, पृ0 8
3. शिवानी - कैंजा, पृ0 12
4. शिवानी - कैंजा, पृ0 12
5. शिवानी - कैंजा, पृ0 48
6. शिवानी - कैंजा, पृ0 48
7. शिवानी- विवर्त, पृ0 21
8. शिवानी- विवर्त, पृ0 44
9. शिवानी- विवर्त, पृ0 45
10. शिवानी- चौदह फेरे, पृ0 8
11. शिवानी- कालिंदा, पृ0 36

# पश्चिमी उत्तर प्रदेश की भूली बिसरी सांस्कृतिक धरोहर

**डा० दिनेश चन्द्र अग्रवाल***

आदिकाल से ही भारत की भूमि में ऐसा अनोखा आकर्षण रहा है कि समय-समय पर अनेक विदेशियों का यहाँ पर आगमन होता ही रहा है। अथाह सागर, गगनचुम्बी पर्वतमालाएँ तथा अनेक अन्य बाधाएँ भी उनको रोक नहीं सकी। जो भी यहाँ आया उसे भारत की धरती ने दुलारकर अपने अंक में स्थान दिया। कोई धन सम्पदा के लोभ में यहाँ तक आया तो कोई ज्ञान प्राप्त करने, कुछ आक्रांता बनकर आये तो कुछ यहाँ के शासक व बादशाह ही बन गये। उनमें से बहुतों के चिन्हों तक को समय के क्रूर हाथों ने मिटा दिया। फिर भी बहुतों की स्मृतियाँ विनाशक झंझावात से बची रह गयी। ऐसी ही एक स्मृति है 'सैण्ट थॉमस चर्च' जो उत्तर प्रदेश के सहारनपुर शहर में गुमनामी की दशा में चुपचाप खड़ा हुआ है।

इस चर्च के साथ जुडी ऐतिहासिक गाथा अठारहवीं शती से आरम्भ होती है जब उत्तरी भारत के अधिकांश भूभाग पर मराठा शासकों का शासन था। 1789 से 1803 ई0 तक जनपद सहारनपुर मराठा शासकों के अधिकार में बना रहा। अठारहवीं शती के अंतिम दशक में उत्तरी भारत में मराठा शासकों का नियंत्रण कमजोर पड़ने लगा था। उधर 1794 ई0 में मराठा प्रमुख शासक महादजी सिंधिया के देहावसान के बाद तो मराठों की शासकीय पकड़ बिल्कुल ढीली पड़ गयी थी। इस क्षेत्र में ईस्ट इंडिया कम्पनी के अंग्रेज अपने पैर जमाने की भरपूर कोशिश में लगे हुए थे और मराठों के साथ गलाकाट संघर्ष मच रहा था। आखिर मजबूर होकर 30 दिसम्बर 1803 को मराठो को अपने कदम पीछे हटाकर अंग्रेजों के साथ संधि करनी पडी। किंतु अंग्रेजो को अपने पैर जमाने के लिये बहुत कठिनाईयाँ झेलनी पड़ी। 1804 ई0 में यमुना पार से सिक्खों ने अंग्रेजो के विरुद्ध इस जनपद पर आक्रमण कर दिया। इसके साथ-साथ यहाँ के स्थानीय छोटे-बड़े रियासतदारों और जातिमूलक ताकतों से अंग्रेजों के संघर्ष चलते रहे। आखिर 18 दिसम्बर 1804 ई0 को अंग्रेजों की विजय हुई जिसके फलस्वरूप सहारनपुर पूरी तरह अंग्रेजों के अधिकार में आ गया। सहारनपुर के क्षितिज पर कम्पनी का जैक परचम लहरा उठा। विद्रोहियों से जूझते हुए इन संघर्षो में बहुत से अंग्रेज सैन्य अधिकारियों को भी अपनी जान गंवानी पड़ी थी। हताहत सैनिकों को ईसाई धार्मिक रीतिरिवाजों के अनुसार सम्मानपूर्वक दफन किया गया। पर कहाँ? यहाँ के निवासी भी इस बात से अनजान है। फिर भी, लेखक को मिला सहारनपुर का सबसे पुराना ईसाई कब्रगाह जो यहाँ के सीमावर्ती ग्रामीण क्षेत्र खत्ताखेड़ी में बनाया गया था जहाँ पर दिवंगत ईसाई अंग्रेजों को दफन किया गया।

सैन्य अधिकारियों व सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण ईसाई अंग्रेजों की कब्रों पर उनकी पहचान और ओहदे के अनुसार स्मारक बनाये गये। प्राय: सभी स्मारकों पर एंग्लो इण्डियन वास्तुशैली में कलात्मक गोलाकार किन्तु चपटे आकार वाले गुम्बद और ऊँची चोटी वाले चौकोर शंकु बनाये गये। चूने की गचकारी (स्टको रिलीफ) से बने उभारदार सुन्दर मोटिफ्स से इनकी सजावट की गयी थी। इनकी उचित देखभाल के अभाव और दुरूपयोग के कारण आज इनकी दयनीय दशा हो रही है तथा ये विलुप्त होने की कगार पर है। इन पर जड़े हुए सूचनात्मक शिलालेख पट्ट अब नहीं है। गैर ईसाई

*रीडर व अध्यक्ष, चित्रकला विभाग (सेवानिवृत्त), जे.वी. जैन कॉलेज, सहारनपुर (उ.प्र.)

बस्ती से घिरा हुआ यह कब्रगाह अपनी हालत पर चुपचाप बिसूरता रहा है। लेखक को यहाँ पर बची खुची नौ कब्रें देखने को मिली। यह कब्रगाह तो अस्थायी था क्योंकि दबंगों से अंग्रेजों के संघर्षो का सिलसिला 1825 ई0 तक चलता रहा जिससे वे चैन की सांस भी नहीं ले पा रहे थे।

1825 ई0 के बाद ही कम्पनी की हुकूमत बेरोक टोक कायम हो सकी। अंग्रेज ईसाईयों की बस्तियाँ विकसित हुई। ईसाई समाज की धार्मिक आवश्यकतावश 'सैण्ट थॉमस चर्च' का निर्माण किया गया। इंग्लैण्ड की विशेष धार्मिक नियंत्रक संस्था 'एंजलिकन चर्च ऑफ इंग्लैण्ड' के निर्देश पर यहाँ के सैन्य अधिकारी जेम्स पॉवेल द्वारा इसका निर्माण 19 वी शती के तीसरे दशक में कराया गया। चर्च तक पहुँचने के लिये निकट से बह रही ढमोला नदी पर एक पुल भी बनाया गया जो 'पॉवेल्स ब्रिज' नाम से जाना जाता है। इस चर्च को 'आर्मी चर्च' भी कहा जाता था। यहाँ अधिकतर अंग्रेज सैनिक व अन्य अधिकारी प्रार्थना करने आते थे। चर्च के प्रेयर हॉल में रायफल-बंदूकें रखने के लिये रायफल स्टैण्ड भी बना हुआ है। इसी हॉल में एक बड़े आकार का पियानों (वाद्ययंत्र) भी सुरक्षित है जिसको बजाने के लिए एक आदमी मैन्युअल कम्प्रैसर द्वारा हवा का दबाव तैयार करता था तथा वादक द्वारा पियानों बजाने पर ऊँचे सुर में समुधुर धुन गूँजती थी जो हॉल को पार कर दूर तक तैर जाती थी। चर्च का भवन एंग्लोगोथिक शैली में बना है। आकाश की ओर उठती हुई नुकीली शंकु आकार की मीनार, ऊँची ढलुवाँ छत, दरवाज़े और खिड़कियाँ गोथिक शैली की विशेषताएँ लिये हुए है।

इसी हॉल में आल्टार (वेदिका) पर ही मूल्यवान धातु से बना एक 'बाइबल स्टैण्ड' था जिस पर पवित्र बाइबल रखी जाती थी। यह अपने आप में एक अति सुन्दर कलाकृति थी जो इंग्लैण्ड से लाकर यहाँ पर स्थापित की गयी थी। लेखक ने इसे 1917 ई0 में हॉल में मौजूद देखा था किन्तु दुर्भाग्य से अब यह विलुप्त हो चुकी है। चर्च के इसी हॉल में तीन महत्वपूर्ण व अत्यंत विलक्षण सुंदर कलाकृतियाँ दर्शनीय है। यह है- रंगीन काँच के टुकड़ों से चित्रित तीन खिड़कियाँ जो आल्टार की दीवार में इस प्रकार लगी है कि हॉल के बाहर से भीतर आने वाले दिन के प्रकाश में इनके रंग तथा आकृतियाँ दमक उठती है। मध्यकालीन यूरोपीय गोथिक चित्र शैली में कलर्ड स्टैण्ड ग्लास तकनीक से इनको बनाया गया है। प्रभु ईसा के जीवन तथा ईसाई धार्मिक संदर्भो को दर्शाती हुई ये मनोहर कलाकृतियाँ अपने दिव्य सौंन्दर्य से दर्शक को सम्मोहित कर लेती है। चर्च को बनवाने वाले जेम्स पॉवेल की मृत्यु (1860 ई0) के बाद उनकी स्मृति रूप में इन कलाकृतियों को इंग्लैण्ड या अन्य यूरोपीय स्थान से लाकर उसी वर्ष लगाया गया था। इसी प्रकार की कलाकृतियाँ मसूरी, मेरठ, सरधना, शिमला, नैनीताल, राजा का ताजपुर तथा अन्य स्थानों पर बने चर्चो में भी स्थापित की गयी थी। मध्यकाल में यूरोपीय देशों में गोथिक वास्तु शैली में निर्मित ईसाई चर्चों के भवनों की आंतरिक सज्जा ऐसी कलाकृतियों से करने की समृद्ध परम्परा थी। लगभग 1980 ई0 तक यह चर्च चारों ओर से विस्तृत हरे भरे भूभाग और सुन्दर प्राकृतिक परिसर से घिरा हुआ था किन्तु आज यह चर्च सीमेंट कांक्रीट के निर्माण से घिर चुका है।

चर्च के निकट ही स्थायी कब्रगाह की भी व्यवस्था की गयी थी जहाँ ईसाई परम्पराओं के अनुसार मृत अंग्रेज ईसाई अधिकारियों व परिजनों को दफनाया जाता था। यहाँ पर लगभग 1830 ई0 से दफन

कार्य होने लगा था। लेखक को यहाँ पर 1861 ई0 की कब्र देखने का मिली। इससे पुरानी कब्रें विलुप्त हो गयी है। विशेषता यह है कि बहुत सी कब्रों पर स्मारक के रूप में पत्थरों से तराशी हुई सुन्दर मूर्तियाँ व अन्य आलंकरिक आकृतियाँ लगी हुई है जिनमें अधिकांश अप्सराएँ, देवदूत और प्रतीकात्मक आलंकारिक मोटिफ्स की नयनाभिराम आकृतियाँ बनायी गयी है। बहुत कुशलता से एंग्लो विक्टोरियन शैली में इनको तराशा गया है। यूरोपीय सांस्कृतिक छाप के साथ-साथ अपनी भावपूर्ण भंगिमाओं से यह प्रतिमाएँ सहज ही आकर्षित कर लेती हैं किन्तु आश्चर्य है कि इनके निर्माता शिल्पियों का कही कोई नामोनिशाँ तक नहीं है। इनके कलात्मक महत्व से अनभिज्ञ यहाँ के लोगो की लापरवाही और प्राकृतिक प्रकोप के कारण इन कलाकृतियों का सौन्दर्य धीरे-धीरे घटता-मिटता जा रहा है एक वर्ष पूर्व भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने उक्त सम्पूर्ण स्थल को संरक्षित पुरातत्व स्मारको में सूचीबद्ध किया है।

प्रत्येक युग में समाज अपनी कला सृजित करता है जिसमें उसका प्रतिबिम्ब रहता है तथा उसी में जीवित रहती है उसकी अस्मिता। कालातीत हुए समाज की संस्कृति को उसकी कलाकृतियाँ ही जीवंत करती है। अतएव सहारनपुर में अवशिष्ट इस अमूल्य भूली-बिसरी कला सम्पदा को एक युगीन सांस्कृतिक धरोहर के रूप में सुरक्षित रखना यहाँ के सम्प्रति समाज का भी दायित्व बन जाता है।

सेंट थॉमस चर्च, सहारनपुर

स्मारकीय एंजिल प्रतिमा, कब्रगाह, सेंट थॉमस चर्च

स्मारकीय आलंकारिक पवित्र क्रॉस, कब्रगाह, सेंट थॉमस चर्च

# वैदिक साहित्य में चित्रित नारी-अधिकार

**डॉ० अन्जु शर्मा***

***शोधसार***

*विद्वानों का मानना है कि वैदिक काल में नारी को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे तथा पुरुष के अभाव में नारी को व नारी के अभाव में पुरुष को अपूर्ण माना गया है। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि स्त्री पूजन से ही समाज में प्रगति होती है। जिस देश अथवा समाज में स्त्री का सम्मान नहीं होता है, वह देश अथवा समाज कभी ऊँचा नहीं उठ सकता। प्रस्तुत शोध-पत्र में वैदिक साहित्य में चित्रित नारी-अधिकारों के अध्ययन के साथ-साथ समय परिवर्तन के साथ उनमें आये बदलावों पर विचार व उनमें सुधार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।*

वर्तमान समय में हिन्दी-साहित्य की विविध विधाओं में स्त्री-विमर्श चर्चा का विषय बना हुआ है। स्त्री-विमर्श या नारीवाद स्त्री के प्रति, स्त्री के अस्तित्व और उसकी अस्मिता को पहचानने का नूतन दृष्टिकोण है। यद्यपि स्त्री का अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व है परन्तु समानता के इस दौर में स्त्री को ही प्रताड़ित होना पड़ता है। साथ ही अवांछनीय एवं असामाजिक कार्य के लिए उसे बाध्य किया जाता है। डॉ० राजेन्द्र यादव का कथन है जिसमें वे पुरुष को नारी की लाचारी तथा विवशता का कारण मानते हैं, ''विडम्बना यहाँ भी यही है कि मूल स्त्रोत होने के बावजूद परिवार भी स्त्री का अपना नहीं होता, पति या बेटे का ही होता है। हाँ उसकी मर्यादा और हितों की रक्षा वह जान देकर भी करती है। वह उस परिवार की इज्ज़त होती है मगर इज्ज़त की परिभाषा परिवार का पुरुष तय करता है, जिसके पीछे धर्म, संस्कृति , वंश और रक्त परंपराएँ होती हैं।''[1]

विद्वानों का मानना है कि वैदिक काल में नारी को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। साथ ही पुरुष के अभाव में नारी को व नारी के अभाव में पुरुष को अपूर्ण माना गया है। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में,'' स्त्री पूजन से ही समाज में प्रगति होती है। जिस देश अथवा समाज में स्त्री-पूजन नहीं होता है, वह देश अथवा समाज कभी ऊँचा नहीं उठ सकता।''[2] प्रस्तुत शोध-पत्र में वैदिक साहित्य में चित्रित नारी-अधिकार उदाहरणार्थ- धार्मिक, सामाजिक, स्वतन्त्रता, शिक्षा, सम्पत्ति, उत्तराधिकार इत्यादि को खोजने का प्रयास किया गया है।

**धार्मिक अधिकार :** वेदों का अध्ययन करने पर हम पाते है कि वैदिक काल में स्त्री को धार्मिक अधिकार प्राप्त थे। अथर्ववेद में कहा गया है कि स्त्री शुद्ध पवित्र रहे और यज्ञ करे।

''शुद्धाः पूता योषितो यज्ञिया इमाः।।''[3]

स्त्री पुरुष की सहयोगिनी और सहायिका बतायी गयी है। स्त्री को साथ लिए बिना यज्ञ पूर्ण नहीं माना जाता था, अतः यज्ञ को पूर्ण सफल बनाने के लिएनारी को पुरुष के समान ही अधिकार प्राप्त था। ऋग्वेद में उल्लेख है कि पति-पत्नी समनसा देवताओं की पूजा करते हैं।

''दम्पती समनसा सुनुतः।''[4]

इसी प्रकार बौधायन ने भी पति-पत्नी दोनों को यज्ञ करने का अधिकार दिया है और उन्हें ऋत्विज के समान माना है।

*प्रवक्ता (अंशकालीन), हिन्दी विभाग, एस.एस.डी.पी.सी.(पी.जी.) कॉलेज, रुड़की (उत्तराखण्ड)

''पत्नीयजमानावञ्ज्ञत्विग्म्योकन्तररतमौ।''[5]
''ततः कर्तारौ यजमानः पत्नी च प्रयधेरन्।''[6]

वृद्धहारित ने तो स्पष्ट रूप से स्त्री को यज्ञ करने और वेद के मन्त्रों का जप करने का विधान दिया है– ''अग्नौ च जुहुयाद्धविः। जपेन्मन्त्रन् सुवैदिकान्।''[7]

उनका कथन है कि स्त्री गायत्री मंत्र का जाप करे और प्रतिदिन यज्ञ करे – ''जपत्वा मन्त्रं गुरूं पश्चात्।''[8]

उर्पयुक्त विवेचन एवं उद्धरणों से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक परंपराओं में कुछ प्रतिबन्धों के साथ नारी को धार्मिक अधिकार प्राप्त थे।

**सामाजिक अधिकार :** वैदिक साहित्य में गृह वातावरण को शान्त रखने के लिए पति–पत्नी के मधुर संबंधों पर बल दिया गया है। नववधू गृह–प्रवेश के समय अपने पति से कहती है कि, तुम एक मात्र मेरे पति होकर अन्य स्त्रियों का नाम मत लो– ''मम केवलो नान्यास्त्रीं कीर्तयाष्चन।''[9]

नववधू के कर्त्तव्यों की ओर संकेत करते हुए अथर्ववेद में कहा गया है कि वह पति, सास, श्वसुर को अपनी सेवा से प्रसन्न रखे तथा वंश को सुखमय एवं मंगलमय बनाये :–

''सुमंगली प्रतरणी गञ्ज्हाणां सुशेवा पत्ये श्वसुराय श्सम्भू।
स्योना श्वश्रवै प्रगञ्ज्हान् विशेषान्। / स्योना भव श्वसुरेभ्यः स्योना पत्ये गृहभ्यः।।''[10]

अतः हम कह सकते है कि वैदिक युग में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे और समाज में उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। वेदों में विविध स्थानों पर हमें इस प्रकार का वर्णन दृष्टिगोचर होता है।

**स्वतन्त्रता का अधिकार :** वैदिक युग में स्त्रियों को समाज में स्वतन्त्रता प्राप्त थी, उन्हें अपनी रूची के अनुरूप जीवन साथी चुनने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। ऋग्वेद काल में स्वयंवर हुआ करते थे –

''भद्रा वधुर्भवति यत्सुपेशाः स्वयं सा मित्रं कृणते जने इत्।''[11]

इसी प्रकार स्त्री को जीवनसाथी चुनने की स्वतन्त्रता महाकाव्य काल में भी थी –

''अदण्ड्या स्त्रीभवेद्राज्ञा वरयन्ती स्वयं पतिम्।''[12]

नारी को सभा में पूर्ण आत्मविश्वास से अपने विचार रखने की स्वतन्त्रता भी उस समय में प्राप्त थी। जिससे यह स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में नारी को पर्याप्त सीमा तक स्वतन्त्रता का अधिकार दिया गया था।

**शिक्षा का अधिकार :** वैदिक काल में नारी की शिक्षा संबंधी व्यवस्था उन्नत थी। बहुत सी ऋचाएँ स्वयं नारियों के द्वारा लिखी गयी है जो इसकी पुष्टि करता है। उदाहरणार्थ– अत्रि कुल की विक्व्रतारा द्वारा ऋग्वेद के 5.28 सूक्त की रचना की गयी है। महाभारत में माता को सर्वश्रेष्ठ गुरू बताया गया है।

''नास्ति मातृसमो गुरुः।''[13]

महाभारत काल में स्त्री शिक्षा की उचित व्यवस्था थी अर्थात् नारी को उचित शिक्षा पाने का अधिकार प्राप्त था और वैदिक साहित्य में उल्लेख मिलता है कि विवाह के योग्य बनने के लिए भी अध्ययन की अनिवार्यता थी।''[14] जहाँ वृद्धाहारीत ने स्त्रियों को मन्त्रों के पाठ का अधिकारी माना है''[15] तो वहीं भृगु का मानना है कि बालक और बालिकाओं का भी उपनयन संस्कार पाँच वर्ष की आयु तक हो जाना चाहिए और उन्हें वेदाध्ययन करना चाहिए।''[16] परन्तु मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति के अध्ययन में हम पाते है कि नारी शिक्षा के अधिकारों का हनन हुआ है। मनु[17] और याज्ञवल्क्य[18] स्त्री शिक्षा को अत्यन्त आघात पहुँचाया इन्होंने स्त्रियों को शूद्रों की श्रेणी में ला खड़ा किया साथ ही उन्हें वेद आदि के अध्ययन से भी वंचित किया।

**सम्पत्ति संबंधी अधिकार :** नारी प्राचीन काल से ही वंचित रही है और वर्तमान में भी उपेक्षित ही है। शास्त्रकारों का मानना था कि उसे विवाह के समय पर पर्याप्त मात्रा में धन मिल ही जाता था। अत: उन्हें सम्पत्ति का अधिकार नहीं दिया गया और पिण्डदान का अधिकार भी केवल पुत्र को ही दिया गया। किन्तु पुत्र के अभाव में यह पुत्री अपने पुत्र के द्वारा पिण्डदान करवाकर सम्पत्ति की अधिकारिणी बन सकती है।

''अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची गर्तारूगिव सनये धनानाम्।''[19]

परन्तु उसके भरण-पोषण की व्यवस्था मृत्यु के पश्चात् असम्भव न हो यही सोचकर पैतृक सम्पत्ति पर उसे अधिकार दिलाने के लिये शास्त्रकारों ने समर्थन दिया था।

**उत्तराधिकार :** प्राचीन काल से ही नारियों के उत्तराधिकार के विषय में विचार होता रहा है। अथर्ववेद में पत्नी के विषय में वर्णित है कि वह पति के घर में रहे और वहाँ की गृहस्वामिनी हो –

''गृहान् गच्छ गृहपत्नी यथासो।''[20]

पति के घर पहुँचने पर उसका स्वमित्व सास, ससुर, ननंद और देवर आदि पर भी होता है।

''सम्राज्ञयेधि श्वशुरेषु सम्राज्ञयुत देवेषु।''[21]

किन्तु वैदिक मन्त्रों की व्याख्या करते हुए यास्क कहते है कि उत्तराधिकार मात्र पुत्रों तक ही सीमित था –

''अविशेषेन पुत्राणां दायो भवति धर्म्मत:।''[22]

उर्पयुक्त विवेचन एवं उद्धरणों से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन समय में नारी भारतीय समाज में समान अधिकारों से सम्पन्न थी, किन्तु समय के साथ उसके अधिकारों में न्यूनता आ गई है। धर्मशास्त्र-परम्परा में स्मृतियुग ऐसा भी युग आया, जब नारी को पुरुष की सम्पत्ति माना गया।

''भार्या पुत्रश्च दासश्च त्रय एवाधना: स्मृता।
यत्ते समधिगच्छन्ति यस्य ते तस्य तृनम्।।''[23]

वैदिक साहित्य में उपलब्ध विवरण के आधार पर विश्व की अन्य संस्कृतियों की अपेक्षा भारतीय नारियों के लिए अधिक अधिकार उपलब्ध थे। अत: हम निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि हमारी वैदिक परम्परा में नारी की स्थिति सम्माननीय है जो अन्यत्र दुर्लभ है परन्तु समय परिवर्तन के साथ उनमें जो बदलाव आए है उनपर अवश्य विचार करने और समुचित सुधार की आवश्यकता है।

**संदर्भ-सूची :-**


1. डॉ० सिद्राम, कृष्णा खोत, शिवानी के उपन्यासों में समाज, सन् - 2009, रोली बुक डिस्ट्रब्यूटर्स प्रकाशन, कानपुर, पृ0-173
2. तिवारी डॉ० वल्लभदास, हिन्दी काव्य में नारी , पृ0-38
3. अथर्व .11.1.13 से 17
4. ऋग.8.11.5
5. बौधा.1.7.9
6. बौधा.1.7.16
7. वृद्धहारीत.5.25.26
8. वृ.हा.8.86
9. अथर्व.7.37
10. अथर्व.14.2.26
11. ऋग्वेद 10-84-26
12. महाभारत, अग्निपर्व 226/4
13. महा. शान्तिपर्व 342-18
14. मिश्र, डॉ० उर्मिला प्रकाश, प्राचीन भारत में नारी, पृ0-2.3
15. वृद्धहारीत.3.6
16. भृगु.3.40-43,10.1-15
17. मनुस्मृति , 2/7
18. याज्ञवल्क्य स्मृति , 1/13
19. ऋग्वेद 1/124/7
20. अथर्ववेद 14/2/75
21. अथर्व 14/1/44
22. निरुक्त, 53
23. मनुस्मृति, 8.416

# ग्रामीण पयर्टन : महिला सशक्तिकरण का आर्थिक और सामाजिक पहलू

**सुश्री अंजली प्रसाद***

***शोधसार***

*ग्रामीण विकास कार्यों को आगे बढ़ाने में ग्रामीण महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। परन्तु अभी भी महिलाओं की स्थिति सामाजिक रूप से पिछड़ी हुई रही है। विश्व भार में कृषि-श्रमिकों में महिलाओं की व्यापक भागीदारी को देखते हुए महिलाओं का सशक्तिकरण ना केवल व्यक्तिगत पारिवारिक और ग्रामीण समुदायों की खुशाहाली के लिए ही नहीं बल्कि समग्र आर्थिक उत्पादकता के लिए भी अत्यन्त आवश्यक है। सतत विकास के लक्ष्यों में दिखाई गई चिंता स्वीकार करने और उसे मान्यता देने तथा मूल्यांकन करने की आवश्यकता है जिससे ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण की सभी बाधाओं को दूर किया जा सकेगा।*

महात्मा गांधी जी ने कहा था कि भारत गांवों में बसता है। उनका मानना था कि अर्थव्यवस्था ग्रामोन्मुखी होनी चाहिए। किसी भी राष्ट्र एवं क्षेत्र का विकास उसकी उपलब्ध मानव-शक्ति की कार्यक्षमता सामर्थ्य, गुणवत्ता व शिक्षा आदि बातों पर निर्भर करता है। ग्रामीण अर्थव्यव्स्था का विश्लेषण करने से पूर्व ग्रामीण शब्दों को परिभाषित करना महत्वपूर्ण है। विभिन्न देशों के लिए ग्रामीण शब्द का अर्थ अलग है। व्यापक रूप से वह स्थान गांव है, जहाँ जनसंख्या घनत्व कम है, बड़े खुले खेत है, प्रदूषण का स्तर कम है और तकनीकी हस्तक्षेप कम है। भारत में 2011 की जनसंख्या के अनुसार वह क्षेत्र ग्रामीण है, जहाँ की जनसंख्या 10,000 से कम है। इस सर्वे के अनुसार भारत में 7 लाख गांव है। जहाँ 74 प्रतिशत आबादी रहती है, साथ ही 62 प्रतिशत कृषि पर आधारित है। ग्रामीण क्षेत्रों के विकास को गति देने के लिये यहाँ की महिलाओं को विकास की मुख्यधारा में लाना आवश्यक है।

**उद्देश्य-**

1. ग्रामीण महिला सशक्तिकरण के आर्थिक एवं सामाजिक पहलूओं का अध्ययन।
2. सरकार द्वारा महिला उत्थान की दिशा में किये गये प्रयास एवं उनका प्रभाव।

महिला सशक्तिकरण का मुद्दा ना केवल भारत में अपितु विश्व के सभी देशो में चिन्तनीय मुद्दा है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 8 मार्च 1975 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुरूआत की गई थी। महिला सशक्तिकरण की दिशा में वियना में मानवाधिकारों के विश्व सम्मेलन में महिला अधिकारों को मानवाधिकार के रूप में स्वीकृति मिली। ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्यों को आगे बढाने में ग्रामीण महिलाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। वे स्थायी विकास के लिए अपेक्षित रूपांतरकारी आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक बदलावों को अंजाम देने में एक उत्प्रेरक भूमिका का निर्वाह करती है। किन्तु उन्हें ऋण स्वास्थ्य देखभाल एवं शिक्षा तक सीमित पहुंच सहित अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। विश्व भर में कृषि श्रमिकों में महिलाओं की व्यापक भागीदारी को देखते हुए महिलाओं का सशक्तिकरण ना केवल व्यक्तिगत पारिवारिक और ग्रामीण समुदायों की खुशहाली के लिए बल्कि समग्र आर्थिक उत्पादकता के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। ग्रामीण महिलाएं हमेशा

असि० प्रो० समाजशास्त्र, एस०एस०डी०पी०सी० (पी०जी०) गर्ल्स कॉलेज, रूड़की

भारतीय समाज का एक उपेक्षित वर्ग रही है। आंकड़ों से पता चलता है कि कृषि कार्यों ने 86.1 प्रतिशत महिलाएं संलग्न है जबकि इस व्यवसाय में पुरुषों की भागीदारी 74 प्रतिशत है, परन्तु महिलाओं को खेती में पारंगत बनाने के लिए सरकारी प्रयासों में उतनी सफलताएं प्राप्त नहीं हो पायी है। 7 प्रतिशत ग्रामीण महिलाएं विनिर्माण क्षेत्र में काम करती है जबकि इस क्षेत्र में पुरुषों की भागीदारी 7 प्रतिशत यानी महिलाओं से कम है।

ग्रामीण पुरुषों को निर्माण, व्यापार, परिवहन, भण्डारण और सेवाओं में काम करने के अवसर मिलते है। जबकि ग्रामीण महिलाएं इन क्षेत्रों में काम करने से वंचित रहती है। ग्रामीण भारत में गिनी चुनी महिलाओं का स्वामित्व भूमि अथवा उत्पादक परिसम्पत्तियों पर होता है। परन्तु अधिकांश महिलाएं सम्पत्ति विशेषकर कृषि भूमि पर महिलाओं का अधिकार नहीं होने से महिलाओं की निर्णय क्षमता भी प्रभावित होती है। ऋण की सुविधाओं के साथ साथ अन्य विस्तार सेवाएं जो भूमि स्वामित्व के अधिकारों पर आधारित है। महिला किसानों के लिए समस्या बनी हुई है।

**तालिका 1. श्रम भागीदारी दरों के रूझान महिला एवं पुरुष यूपीएसएस**

| चरण | कुल | | ग्रामीण | | शहरी | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | पुरुष | महिला | पुरुष | महिला | पुरुष | महिला |
| 1993–1994 | 54.4 | 28.3 | 55.3 | 32.8 | 52.1 | 15.5 |
| 1999–2000 | 52.7 | 25.4 | 53.1 | 29.9 | 51.8 | 13.9 |
| 2004–2005 | 54.7 | 28.2 | 54.6 | 32.7 | 54.9 | 16.6 |
| 2007–2008 | 55.0 | 24.6 | 54.8 | 28.9 | 55.4 | 13.8 |
| 2009–2010 | 54.6 | 22.5 | 54.7 | 26.1 | 54.3 | 13.8 |
| 2011–2012 | 54.4 | 21.7 | 54.3 | 24.8 | 54.6 | 14.7 |

स्रोत : राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के आंकड़े, विभिन्न चरण

राष्ट्रीय नीति महिलाओं की आर्थिक भागीदारी की बात कहती है और नीति का एक उद्देश्य अर्थव्यवस्था में महिलाओं की कार्यबल में हिस्सेदारी को बढ़ाना और प्रोत्साहित करना है। तमाम क्षेत्रों में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी पर तीन प्रमुख क्षेत्रों कृषि उद्योग एवं सेवा के अंतर्गत चर्चा की गई और विशेष संदर्भो तथा संभावित उपायों की व्याख्या की गई है। चूंकि 60 प्रतिशत से अधिक महिला कामगार कृषि क्षेत्र में है। इसीलिए महिला हितों की बात करने वाली कोई भी नीति ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नजरअंदाज नहीं कर सकती कृषि में बडी संख्या में महिलाएं स्वरोजगार प्राप्त है। एनएसएसओ के आंकड़ों से पता चलता है। कृषि कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी 2004-05 के 42 प्रतिशत के सर्वकालिक उच्चतम आंकड़ें से गिरकर 2011-12 में 35 प्रतिशत रह गई है। सतत विकास के लक्ष्यों में जताई गई चिंता को प्रतिध्वनित करते हुए महिलाओं के अवैतनिक काम को स्वीकार करने और उसे मान्यता देने तथा मूल्यांकन करने की आवश्यकता जताना नीति का ऐतिहासिक बिंदु है।



ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक आर्थिक दशा सुधारने और उन्हें तकनीकी रूप से अधिक सक्षम तथा कुशल बनाने के लिए भारत सरकार के दो मंत्रालय विशिष्ट रूप से कार्य कर रहे

है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय और ग्रामीण विकास मंत्रालय में ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक दशा सुधारने के लिए अनेक कार्यक्रम और योजनाएं चलाई जा रही है, कृषक-महिलाओं के लिए महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना नाम से एक विशिष्ट योजना जारी है। जिसका उद्देश्य महिलाओं के तकनीकी सशक्तिकरण द्वारा उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनाना है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अन्तर्गत एक देशव्यापी अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना सीधे कृषक महिलाओं को लक्ष्य करके चलाई जा रही है। इसे एआईसीआरपी गृह विज्ञान का नाम दिया गया है। देश के कृषि विश्वविद्यालय के माध्यम से संचालित की जा रही इस परियोजना में कृषि सम्बंधी विज्ञान के साथ खाद्य और पोषण सुरक्षा तथा आजीविका सुरक्षा जैसे मुद्दों भी शामिल किया गया है। ताकि ग्रामीण परिवारों के समग्र आर्थिक विकास को मजबूत किया जा सके।

भारत की 71.2 प्रतिशत आबादी गांवों में रहती। महिलाओं की समस्याएं और भी अधिक जटिल है। इसके निम्नलिखित कारण-

1. शिक्षा एवं व्यावसायिक कौशल का अभाव।
2. सुरक्षा का अभाव।
3. निर्णय लेने के अधिकार से वंचित।
4. महिलाएं समान अधिकारों से वंचित।
5. समान कार्य के लिए कम वेतन।
6. महिलाओं को उचित सम्मान प्राप्त न होना।
7. सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित होना।

## सरकार द्वारा महिला उत्थान की दिशा में किए गए प्रयास

ग्रामीण महिला सशक्तिकरण हेतु सरकार द्वारा स्किल इंडिया, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्टार्टअप इंडिया, स्टैडअप इंडिया, दीनदयाल अंत्योदय योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण जीविकोपार्जन मिशन, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना, बालिका सुकन्या समृद्धि योजना, उज्ज्वला योजना आदि अनेक कल्याणकारी योजनाएं महिलाओं की क्षमताओं को पहचानकर उन्हें ग्रामीण विकास व स्वावलंबन के नए क्षितिज प्रदान कर रही है। 1985 में केन्द्रीय महिला व विकास मंत्रालय द्वारा सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों के प्रयासों में समन्वय स्थापित कर रोजगार, प्रशिक्षण, कल्याण, जागरूकता व चेतना जागृति से संबंधित प्रयास किए जा रहे है।

आज के वैश्विक परिवेश में सरकार महिलाओं को आर्थिक दृष्टि से मजबूत व स्वावलंबी बनाने पर जोर दे रही है। भारत सरकार द्वारा महिलाओं का आत्मनिर्भर बनाने के लिए महिला व बाल विकास मंत्रालय ने स्टेप (सपोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एप्लॉयमेंट प्रोग्राम फॉर वूमेन) कार्यक्रम प्रारंभ किया जिसमें महिलाओं को कौशल व रोजगार संबंधी आर्थिक एवं संगठनात्मक सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। जिसके लिए सहायता समूह निर्मित किए है। यह योजना कैशल आधारित-योजना को बढ़ावा देते हुए स्किल इंडिया कार्यक्रम में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करती है। इसके तहत महिलाओं को सहायता रोजगार एवं उद्यमशीलता से संबंधित कौशल प्रदान करने के लिए कृषि बागवानी, खाद्य प्रसंस्करण, हथकरघा, सिंलाई-कढ़ाई हस्तशिल्प, कम्प्यूटर, आई0टी0 समर्थित सेवाएं एवं अंग्रेजी बोलना, अतिथि सत्कार, पर्यटन, रत्न व जवाहरात आदि कौशल का भी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु कौशल विकास डिजिटल साक्षरता,

स्वास्थ्य व पोषाहार आदि सेवाएं सम्मिलित रूप से उपलब्ध कराने हेतु 2017–18 में देशभर में 14 लाख महिला शक्ति केन्द्रों की स्थापना एकीकृत बाल विकास सेवाएं आंगनबाडी–केन्द्रों पर स्थापित की जाएंगी। 10वीं पंचवर्षीय योजना में लैगिंक भदेभाव को कम करने के लिए महिला घटक योजना एवं जेंडर बजटिंग जैसी प्रभावी संकल्पनाओं के जरिए महिलाओं को विकासात्मक क्षेत्रों में उचित हिस्सा प्रदान किया गया।

**निष्कर्ष:**–आज के आर्थिक युग में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं अधिक स्वावलंबी व आत्मनिर्भर हुई है। वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई है। शिक्षा के प्रसार व जागरूकता बढ़ने से वे ग्रामीण विकास में योगदान दे रही है। जिसमें न केवल सामान्य वर्ग की महिलाएं है। बल्कि अनुसूचित जाति, जनजाति व पिछडे वर्ग की महिलाओं में भी आत्मबल एवं निर्णय क्षमता का संचार हुआ है। महिला सुरक्षा से जुडे आंकडों को देखकर महिला सशक्तिकरण की नई तस्वीरे दिखाई देती है। महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति संगठित होकर प्रयास जारी रखने होगे। तभी महिला सशक्तिकरण होगा और तभी सशक्त भारत का निर्माण हो सकेगा। सम्मान और अधिकार के भाव से वंचित महिलाएं समाज में लैंगिक समता स्थापित करने के मार्ग में बड़ी चुनौती है। समानता को पाने की दिशा में किए जा रहे सरकार के प्रयास आधी आबादी के लिए बेहतर जिंदगी सुनिश्चित करने का प्रयास तभी साबित हो सकते है जब समाज की मानसिकता में परिवर्तन लाकर लैंगिक असमानता की खाई को पाटा जा सकेगा।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची:**


- अहमद माफिजुद्दीन, इकानॉमिक एंड डेमोग्राफिक इम्पेक्ट्स ऑफ रूरल क्रेंडिट, प्रोग्राम फॉर वूमेन्स इन बांगलादेश, ढाका, सेंटर फॉर ह्यूमन रिर्सोस डेवलपमेंट।
- अन्ना–लारिशा, सनिजदर (2010) माइक्रोक्रेडिट एंड वूमन एम्पावरमेट इन साउथ इंडिया इन ऑनलाइन http/www.microfinancegatway.com
- भसीन, कमला (1998) एजुकेशन फॉर वूमन एम्पावरमेंट : सम रिफलेक्शस, अगस्त, एजुकेशनल डेवलपमेंट पृ० सं०–38
- चौधरी, नजमा (1994), वूमन पार्टिसिपेशन इन पालिशिज मार्जिनेलाइजेशन एंड रिलेटिड इश्यूज।
- सबनाज शमिया, एनालाइज द एटिट्यूड ऑफ रूरल वूमेन बोरोवरस ऑन द माइक्रोक्रेडिड, इनवेन्सन्स, ए0 कम्पैरेटिव स्ट्डी ऑफ गर्वन्मेंट एण्डनान गर्वनमेंट आर्गनाइजेशन https:/ www.academic.edu/36768423
- मोदी, अनीता, ''महिला शिक्षा, ग्रामीण विकास की आधारशिला कुरूक्षेत्र वर्ष 58, अंक 11, 2012 पृ0 14
- शर्मा, अर्चना, महिला सशक्तिकरण का आर्थिक और सामाजिक पहलू, कुरूक्षेत्र वर्ष 64, अंक 3, जनवरी 2018 पृ0 58–63
- एन नीता राष्ट्रीय महिला नीति 2016, कुरूक्षेत्र वर्ष 64 अंक 3 जनवरी 2018, पृ०सं० 19–23

# ग्रामीण विकास में पर्यटन की भूमिका एवं चुनौतियाँ

**डॉ० अनीता सिंह***

***शोधसार***

*ग्रामीण पर्यटन असीम संभावनाओं का क्षेत्र है क्योंकि इसका अधिकांश भाग अभी पर्यटन उद्देश्य से अनावरित ही है। इसके विस्तार के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के उचित रखरखाव, शुद्ध पर्यावरण एवं पर्याप्त सुरक्षा संबंधी व्यवस्थाओं पर ध्यान दिये जाने की जरूरत है। इसके साथ ही स्थानीय लोगों के समावेश हेतु उचित प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है। ग्रामीण पर्यटन का विकास न सिर्फ ग्रामीण क्षेत्रों के अर्थिक विकास को बढ़ावा देगा बल्कि इन क्षेत्रों से श्रमशक्ति के पलायन की समस्या का भी समाधान करने में सहायक होगा।*

प्राचीन काल से ही भारतीय सामाजिक व्यवस्था में गांव एक आधार भूत इकाई के रूप में विद्यमान रहा है। ऋग्वेद के अनुसार जिसे प्राय: ईसा पूर्व दो हजार वर्ष के आस-पास का माना जाता है। समाज का विकास क्रमिक श्रृंखलाओं में हुआ है। जिसमें सबसे पहले एक समूह था और बाद में जाकर एक ग्राम का निर्माण हुआ। ग्राम ग्रामीण समाज की एक इकाई हैं यह एक ऐसा रंगमंच है। जहाँ ग्रामीण जीवन कार्यशैली प्रकट होती है, मानव जीवन के विकास में ग्राम का एक विशेष महत्व रहा। भारतीय अर्थव्यवस्था ग्रामीण विकास पर निर्भर है वर्तमान में अधिकांश देश आज ग्रामीण विकास एवं ग्रामीण जनसंख्या की ओर अधिक आकर्षित हो रहे है क्योंकि 2011 की जनगणना के अनुसार देश की अधिकांश जनसंख्या 742 अरब में से 72.18% ग्रामीण जनसंख्या है। सतत् विकास में शहरी एवं ग्रामीण विकास की तुलना की जाए तो बहुत बड़ा अन्तर व्याप्त है। जिसमें ग्रामीण साक्षरता दर 67.77% एवं शहरी साक्षरता दर 84.11% है तथा जिसमें स्वास्थ्य दर, मृत्यु दर भयंकर बीमारियों से ग्रसित होना आदि शामिल होता है। जिसका प्रभाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ता है जबकि शहरी जनसंख्या एक उत्तम पर्यावरण में जीवन यापन कर रही है।

**उद्देश्य:-**

1. ग्रामीण विकास में पयर्टन की भूमिका एवं चुनौतियों को पहचान करके उन्हें परखना।
2. शासन द्वारा संचालित योजनओं के क्रियान्वयन स्तर को जानना एवं इससे प्राप्त उपयोगी निश्कर्षों को बताना।

**ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा:-** भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन की परिभाषा में स्पष्ट किया है कि कोई भी ऐसा पर्यटन जो ग्रामीण जीवन, कला, संस्कृति और ग्रामीण स्थलों की धरोहर को दर्शाता है, जिसमें स्थानीय समुदाय को आर्थिक और सामाजिक लाभ पहुंचता हो साथ ही पर्यटकों और स्थानीय लोगों के बीच संवाद से पर्यटन अनुभव से अधिक समृद्ध बनाने की संभावना होती तो उसे ग्रामीण पर्यटन कहा जा सकता है।

ग्रामीण पर्यटन अनिवार्यत: एक ऐसी गतिविधि है जो देश के देहाती इलाकों में संचालित होती है। यह बहु-आयामी है, जिसमें खेत कृषि पर्यटन सांस्कृतिक पर्यटन, प्रकृति पर्यटन, साहसिक पर्यटन शामिल है। भारत में पर्यटन मंत्रालय ने ऐसे ग्रामीण पर्यटक स्थलों के विकास पर विशेष बल दिया है। जो समृद्ध कला, संस्कृति, हथकरघा और शिल्प की दृष्टि से गौरवशाली है। ये प्राकृतिक सौन्दर्य और

*एसो. प्रोफेसर, समाजशास्त्र, स्वामी विवेकानंद पी.जी. कॉलेज, लोहाघाट, उत्तराखण्ड

सांस्कृतिक वैभव दोनों की दृष्टियों से समृद्ध है। ग्रामीण पर्यटन से यह उम्मीद की जाती है कि ग्रामीण उत्पादकता, ग्रामीण पर्यावरण और संस्कृति के संरक्षण, स्थानीय लोगों की भागीदारी की दृष्टि से ग्रामीण इलाकों के लाभ में वृद्धि हो और परंपरागत विश्वासों और आधुनिक मूल्यों के बीच उपयुक्त अनुकूलन में मदद मिले।

अक्टूबर 2017 में पर्यटन मंत्रालय द्वारा विभिन्न मंत्रालयों सरकारों एवं अन्य साझीदारों के सहयोग से राष्ट्रव्यापी पर्यटन पर्व का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य देश की सांस्कृतिक विविधता का प्रचार-प्रसार करना था। पांच अक्टूबर 2017 से 25 अक्टूबर 2017 तक चले इस अभियान के तीन प्रमुख घटक थे, 'देखों अपना देश', 'पर्यटन सभी के लिए' तथा पर्यटन एवं शासन-व्यवस्था इस अभियान के तहत विभिन्न मंत्रालयों एवं संस्थानों के सहयोग से विभिन्न गतिविधियों द्वारा देश की संस्कृति को उजागर करने के प्रयास किए गए। ग्रामीण मंत्रालय के नेशनल रुर्बन मिशन द्वारा भी ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण पर्यटन पर आधारित विभिन्न गतिविधियों की श्रृंखला आयोजित की गई।

ग्रामीण पर्यटन को बढावा देने के लिए ''इनक्रेडिबल इंडिया, बेड एंड ब्रेकफास्ट/होमस्टे'' जैसी प्रयास भी किया गया इस योजना के तहत विदेशी एवं भारतीय पर्यटकों को सुदूर अंचलों में भुगतान के आधार पर भारतीय परिवारों के साथ रहने एवं आवासीय सुविधाएं भी प्रदान की गई। देश में पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए केन्द्रीय पर्यटन मंत्रालय ने राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों टूर-ऑपरेटरों और इस उद्योग से जुड़ी संस्थाओं एजेंसियों को पुरस्कार देने की योजना चलाई सरकार ने अधिकाधिक विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए नए-नए रूप जैसे इको टूरिज्म, हेल्थटूरिज्म, हेरिटेज टूरिज्म और ग्रामीण पर्यटक को विकसित करने पर बल दिया। सरकार की पहल और निजी उद्यमिता के परिणाम स्वरूप ग्रामीण पर्यटन अब धीरे-धीरे लोकप्रिय होने लगा है।

आज पर्यटन पूरे विश्व में एक बहुआयामी प्रदूषण रहित तथा तेजी से बढ़ने वाले उद्योग के रूप में देखा जा रहा जिसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार की अनेक संभावनाएं मौजूद है। पर्यटन उद्योग मात्र धन कमाने की दृष्टि से ही उपयोगी नहीं है बल्कि यह एक जनोपयोगी व्यवसाय भी है। हमारा भारत देश प्राकृतिक सौदर्य, धार्मिक तथा सांस्कृतिक महत्व के पर्यटन स्थलों तथा परम्परागत महोत्सवों की वजह से पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। (2011 की जनगणना के अनुसार) भारत की लगभग 74% जनसंख्या में से करीब सात लाख जनसंख्या गांवों में रहती है। लेकिन उनके लिए जीविका के साधन सीमित होते जा रहे है। ग्रामीण पर्यटन को बढावा देकर ग्रामीण विकास की संभावनाओं को साकार किया जा सकता है।

ग्रामीण पर्यटन से ग्रामीण विकास एवं ग्रामीण की संस्कृति, कला, आर्थिक और सामाजिक लाभों को प्राप्त करने के लिए एक अनिवार्य कदम है। यह उद्योग बहुआयामी है। जिसमें कृषि पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, प्रकृति पर्यटन, साहसिक पर्यटन और पर्यावरण पर्यटन आदि शामिल है।

**भारत में विदेशी पर्यटकों का आगमन**

| वर्ष | विदेशी पर्यटकों की संख्या | वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत में) |
|---|---|---|
| 2014 | 76.8 | 10.2 |
| 2015 | 80.3 | 4.5 |
| 2016 | 88 | 9.7 |
| 2017 | 48.9 | 17.2 |

स्रोत: भारत पर्यटन सांख्यिकी 2017

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता कि वर्ष 2014 से 2017 तक में विदेशी पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने से भारत में वर्ष 2016 में पर्यटन से विदेशी मुद्रा से 22.92 अरब डॉलर की आमदनी में वृद्धि हुई है। जो यह दर्शाती है कि पर्यटन उद्योग ग्रामीणों एवं ग्रामीण पर्यटन के लिए रोजगार का अच्छा और सशक्त माध्यम बन सकता है। जिसमें उत्तराखण्ड में चल रही होम स्टे योजना को दीनदयाल उपाध्यय रोजगार योजना के नाम से नया रूप दिया गया। इस योजना का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण अंचलों में होम स्टे के माध्यम से रोजगार के नवीन अवसरों का सृजन करना है। योजना के संचालन के लिए संचार कौशलों पर प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गई है। इस योजना के लाभर्थीगण (होम-स्टे संचालक) विभिन्न विदेशी भाषाएं सीख सकेंगे और बेहतर ढंग से विदेशी पर्यटकों से जुड़ सकेंगे।

## ग्रामीण विकास में पर्यटन की चुनौतियां

पर्यटन में देश का आर्थिक इंजन बनने की संभावनाएं विद्यमान है। लेकिन इसके लिए जिस तरह ढांचागत सुविधाएं जरूरी है। उसी तरह प्रशिक्षित और व्यवहार कुशल (टूरिस्ट फ्रेंडली) श्रम बल भी आवश्यक है एवं ग्रामीण पर्यटक स्थलों पर पर्यावरण की सुरक्षा एवं विकास पर विशेष ध्यान देना जरूरी है। शुद्ध पर्यावरण पर्यटकों को आकर्षित करता है। जिसमें कुछ चुनौतियां ऐसी है। जिन पर ध्यान दिया जाना बहुत आवश्यक है।

1. आधारभूत अवसंरचनाओं का अल्प विकास।
2. आर्थिक ढांचा जैसे बैंक, ए०टी०एम० का अभाव।
3. संचार ढांचा अपर्याप्त होने से संवाद की समस्या।
4. बाजारों का पूर्ण रूप सें विकसित ना होना।
5. शिक्षा, स्वास्थ्य, विद्युत आदि आधारभूत आवश्यकताओं की अनियमित आपूर्ति।
6. पर्यटक स्थलों का पूर्ण रूप से सुरक्षित ना होना।

## निष्कर्ष:-

राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद (एनएसडीसी) का अनुमान है कि 2022 तक पर्यटन के क्षेत्र में देश में 50 लाख नए कुशल व्यक्तियों की दरकार होगी। इसलिए इस क्षेत्र में मानव संसाधन विकास आज समय की जरूरत है। खासकर ग्रामीण पर्यटन की दृष्टि से श्रमबल को प्रशिक्षित करना आवश्यक है। हालांकि पर्यटन क्षेत्र के लिए मानव संसाधन विकास के संबंध में सरकार की जो नीति

रही है, उसमें ग्रामीण पर्यटन की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कौशल प्रशिक्षण और शिक्षण का ढांचा खडा नहीं किया गया है।

ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता का स्तर राष्ट्रीय औसत से कम है। स्थानीय भाषा में गाइड तैयार करने से लेकर स्थानीय क्यूजाइन में माहिर श्रमबल तैयार करने की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। सरकार ने 2008 में ग्रामीण पर्यटन परियोजनाओं के क्रियात्मक की जिम्मेदारी राज्य सरकारों के पर्यटन विभागों को सौंप दी। इसके बाद इस दिशा में राज्यों ने कुछ कदम उठाना शुरू किया। जिसमें हेल्प टूरिज्म योजना को भी चलाया गया जिसकी सहायता से पूर्वोत्तर और पश्चिम बंगाल के कई इलाकों में आसानी से पहुंचा जा सकता है।

ग्रामीण पर्यटन असीम संभावनाओं का क्षेत्र है क्योंकि इसका अधिकांश भाग अभी भी पर्यटन उद्देश्य से अनावरित ही है। ग्रामीण पर्यटन के विकास हेतु प्रसार एवं संरक्षण के एकीकृत उपागम को अपनाने की आवश्यकता है। इस हेतु स्थानीय क्षेत्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास की लिए स्थानीय लोगों की सक्रियता एवं समावेश और उचित प्रशिक्षण जरूरी है। ग्रामीण स्थलों का पूर्ण रूप से रख-रखाव एवं उचित व्यवस्था न होने से ग्रामीण पर्यटन का उतना प्रसार नहीं हो पाता है। इस हेतु उस स्थान पर नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न होने से विकास की संभावनाएं भी समाप्त होने लगती है और युवा पलायन के लिए मजबूर होने लगते है जो ग्रामीण पर्यटन के विकास की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।

## संदर्भ-सूची


- आहुजा, कान्ता, भार्गव एवं प्रदीप 1984 इंटीग्रेटिड रुरल डेवलपमेंट प्रोग्राम-एन, इवेल्युवेशन जयपुर, डिक्स्ट्रक्ट, इंसटिट्यूट ऑफ डेवलपमेंट, स्टडीज, जयपुर
- विनायकरथ, 1984 स्टडी ऑफ फाइनानसिंग ऑफ डेयरी, (1933) इकोनामिक एंड डेमोग्राफिक।
- एनिमल्स, बुल्कस एण्ड बुल्ककार्ट, इन उत्तर प्रदेश, डिपार्टमेंट ऑफ हयुमैनिटीज एण्ड सोशल सांइसिस आई0आई0टी0 कानपुर
- मिनिस्ट्री ऑफ रुरल डेवलपमेंट 1985, पावरटी एलिवेशन सिक्थ प्लॉन न्यू दिल्ली
- मुखोपाध्याय, ए0के0 एण्ड अदर्स 1985, फ्लो ऑफ क्रेडिट एण्ड सब्सिडी, अंडर आई.आर.डी. पी.
- इम्पेक्ट ऑफ रुरल क्रेडिट प्रोग्रामस फॉर वूमन इन बांग्लादेश ढाका, सेंटर फॉर हयूम रिर्सोस डेवलपमेंट
- श्रीवास्तव दिनेश, गांव गांव की जोडती सूचना तकनीकी, कुरूक्षेत्र अंक 6, अप्रैल 2009
- रॉव एम एस0ए0, अर्बनाइजेशन एंड सोशल चेन्ज, ओरियन्ट लांग्मैन्स, न्यू दिल्ली 1970
- सक्सेना, ऋषभ कृष्ण, ''राष्ट्रीय पर्यटन नीति और ग्रामीण पर्यटन कुरुक्षेत्र, वर्ष 64, अंक : 2 दिसम्बर 2017
- हेना नकवी; ''ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन देने के प्रयास'' कुरुक्षेत्र व र्ा 64, अंक 2 दिसम्बर 2017

# भारत की राजनीति में महिलाओं की भूमिका

कु० प्रवीन*

***शोध सार:***

*किसी राष्ट्र के समग्र विकास के लिये वहाँ की महिलाओं को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना आवश्यक है। इसके लिये महिलाओं के आर्थिक-सामाजिक सशक्तीकरण के साथ उनका राजनीतिक सशक्तीकरण भी आवश्यक है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हमारे देश में भी महिलाओं को विकास के समान अवसर उपलब्ध करवाने के लिये संविधान के माध्यम से कुछ विशेष व्यवस्थायें की गई है, पर आज भी राजनीति में महिलाओं की भागीदारी संतोषजनक नहीं कही जा सकती। इसके लिये उपलब्ध नियमों व व्यवस्थाओं के समुचित क्रियान्वन के साथ समाज की मानसिकता में भी बदलाव अपेक्षित है।*

किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास के लिये वहाँ की महिलाओं का राष्ट्र व विकास की मुख्यधारा से जुडा होना परम आवश्यक है। यह तभी सम्भव है, जब उस राष्ट्र की महिलायें सबल व सशक्त हों। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हमारे देश में महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक रूप से विकास के समान अवसर उपलब्ध कराने तथा उन्हें भलीभाँति विकसित होने के लिए संविधान में कुछ विशेष व्यवथाएँ की गयी है। भारतीय संविधान द्वारा महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष सभी सुविधाएँ प्रदान की गयी है। संविधान के अनुच्छेद-5 की व्यवस्थाओं के अनुसार लिंग, धर्म, जाति, जन्म स्थान आदि के आधार पर किसी के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जा सकता है। अनुच्छेद-16 में लोक सेवा में स्त्री और पुरुष को बिना भेद किये अवसर की समानता प्रदान की गयी है। अनुच्छेद-19 में कोई भी नागरिक, चाहे स्त्री हो अथवा पुरुष उसे अभिव्यक्ति की समान रूप से स्वतंत्रता प्रदान की गयी।[1]

भारत वर्ष में ऋग्वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति पुरुषों के समकक्ष थी। लेकिन उत्तरवैदिक काल के पश्चात आज तक निरन्तर महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई है। वर्तमान समय में इस आधी दुनिया की चर्चा चहुं ओर है।[2] राजनीति में सशक्त भागीदारी के लिये महिलाओं की राजनीतिक परिदृश्य की जानकारी तथा महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दों पर निर्णय लेने की क्षमता का विकास जरूरी है। महिलाओं में राजनीतिक चेतना का अभाव उनकी राजनीति में कम भागीदारी के मूल में है।

निम्न बिंदु इस तथ्य पर प्रकाश डालते हैं -

1. बहुत कम (लगभग 20 प्र.श.) में महिलाओं को राजनीतिक अधिकारों का ज्ञान है।
2. मताधिकार प्राप्त महिलाओं में से लगभग तीन-चौथाई ही उसका प्रयोग करती है। रोचक तथ्य है कि महिलाएँ राजनीति से प्रेरित होकर वोट देने नहीं जाती बल्कि घूमने के उद्देश्य से जाती है।
3. महिलाओं का मत देने का व्यवहार न तो राजनीतिक गतिशीलता से और न ही राजनीतिक समाजीकरण से जुड़ा होता है, बल्कि अपने पति के राजनैतिक विश्वास और अभिरूचि से जुड़ा होता है।
4. चुनाव का उदार सिद्धान्त जो मतदाता के वोट को उसके तर्कयुक्त पसन्द या उम्मीदवार या पार्टी के लिए अभिरूचि से जोड़ता है, वह महिलाओं के मत डालने के व्यवहार के लिए वैध नहीं है।

*प्रवक्ता (अंशकालिक), राजनीतिक विज्ञान विभाग, एस.एस.डी.पी.सी.(पी.जी.) कॉलेज, रुड़की (हरिद्वार)

5. सामान्यतया महिलाएँ किसी राजनीतिक दल की सक्रिय सदस्य नहीं होती है, कुछ महिलाएँ किसी राजनीतिक दल की समर्थक अवश्य होती हैं।

इन तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिकार चेतना अपने आप महिलाओं के स्तर को ऊँचा नहीं उठाती और न ही चेतना हीनता या अज्ञानता उनकी संतोष (प्रस्थिति से) की भावना कम करती है। अधिकार चेतना में प्रमुख बाधायें अशिक्षा, गृह कार्य में अधिक व्यस्तता, घरेलू बन्धन तथा पुरुषों पर आर्थिक निर्भरता आदि है।[3] गाँधी जी के लिए महिलाओं का पुरुषों की तरह महज राजनीतिक आजादी प्राप्त कर लेना ही काफी नहीं था अपितु वे यह भी चाहते थे कि महिलाओं को अंधविश्वासों और पुराने समय से चली आ रही कठोर रूढ़ियों के जाल से बचाकर आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाया जाये। महिलाओं को सार्वजनिक जिम्मेदारियों को निभाने से बलपूर्वक रोके जाने पर उन्होंने कहा था–''अगर वे फैसला लेने में इतनी कमजोर और पुरुष पर इतनी निर्भर हैं तो वे घर कैसे चलाती हैं। इस प्रकार वे स्त्री–पुरुष असमानता को राष्ट्रीय विकास में बाधक मानते थे। वे कहते थे–मैं भारत के लिए काम करूंगा.....जिसमें स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त होंगे.....मेरे सपनों का भारत यही होगा।[4]

भारत में वर्ष 2001 को महिला सशक्तीकरण वर्ष घोषित किया गया था, साथ ही महिला सशक्तीकरण नीति की घोषणा की गयी जिसमें अनेक दिशा निर्देशों के साथ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं न्यायिक क्षेत्रों में महिलाओं का समान रूप से भागीदारी बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। 2001 की जनगणना के आँकडों के अनुसार देश की कुल जनसंख्या में महिलाओं का प्रतिशत 48.3 है। लगभग आधी आबादी के बाद भी महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी लगभग 8 प्रतिशत रही है। जब कि अमेरिका में 2003 में प्रतिनिधि सभा के कुछ स्थान 435 में निर्वाचित महिला सदस्यों की संख्या 62 थी (14.3 प्रतिशत) तथा सीनेट के कुल 100 सदस्यों में 13 महिला सदस्य थी (13 प्रतिशत/इंग्लैण्ड) में कॉमन सभा में 1997 के चुनाव में कुल 659 सदस्यों में निर्वाचित महिला सदस्यों की संख्या 120 थी (18.10 प्रतिशत) एवं 2001 के चुनाव में यह प्रतिशत 17.9 था। इस प्रकार आँकडों के आधार पर भारत की सांसद में महिला प्रतिनिधित्व अमेरिका एवं इंग्लैण्ड की तुलना में बहुत कम रहा है। 1952 के लोकसभा चुनावों से लेकर 2019 तक के चुनाव में प्राप्त महिलाओं के प्रतिनिधित्व को निम्न तालिका से समझा जा सकता है–[5]

**तालिका संख्या 1**

**भारत में महिलाओं का संसद में प्रतिनिधित्व[6]**

| लोकसभा | अवधि | लोकसभा | | | राज्यसभा | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | कुल सीटें | महिला सांसद | प्रतिशत | कुल सीटें | महिला सांसद | प्रतिशत |
| पहली | 1952–57 | 499 | 22 | 4.4 | 219 | 16 | 7.3 |
| दूसरी | 1957–62 | 500 | 27 | 5.4 | 237 | 18 | 75 |
| तीसरी | 1962–67 | 503 | 34 | 6.8 | 238 | 18 | 76 |
| चौथी | 1967–71 | 523 | 31 | 5.9 | 240 | 20 | 8.3 |

जारी...

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पांचवी | 1971–76 | 521 | 22 | 4.2 | 243 | 17 | 70 |
| छठी | 1977–80 | 544 | 19 | 3.3 | 244 | 25 | 10.2 |
| सातवीं | 1980–84 | 544 | 28 | 5.2 | 244 | 24 | 9.8 |
| आठवीं | 1984–89 | 544 | 44 | 8.1 | 244 | 28 | 11.4 |
| नवीं | 1989–91 | 517 | 27 | 5.2 | 245 | 24 | 9.7 |
| दसवीं | 1991–96 | 544 | 39 | 7.2 | 245 | 38 | 15.5 |
| ग्यारहवीं | 1996–98 | 543 | 39 | 7.2 | 223 | 20 | 9.0 |
| बारहवीं | 1998–99 | 543 | 43 | 7.9 | 237 | 22 | 9.2 |
| तेरहवीं | 1999–2004 | 545 | 49 | 9.0 | 237 | 22 | 9.2 |
| चौदहवीं | 2004–2009 | 545 | 50 | 9.0 | 237 | 21 | 9.2 |
| पन्द्रहवीं | 2019–2014 | 545 | 58 | 10.0 | 237 | 21 | 9.2 |
| सोहलवीं | 2014–2019 | 545 | 61 | 12 | 244 | 28 | 8.71 |
| सत्रहवीं | 2019 से | 542 | 78 | 14.39 | 238 | 25 | 10.5 |

महिला सशक्तीकरण एक महत्वपूर्ण सामाजिक घटक है जिसके समझने के लिए हमें अपने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक ढांचे सहित उसके बहुआयामी प्रभाव पर चिन्तन करना होगा, जिसमें असमानता गहरे रूप में विद्यमान है। जहाँ तक राजनीतिक संरचना का प्रश्न है महिलाएं आज विश्व मतदाताओं का आधा हिस्सा बन चुकी हैं लेकिन इनमें से सिर्फ 18 फीसदी ही सांसद है। नार्डिक देशों में 41 प्रतिशत, अमेरिकी देशों में 21.8 प्रतिशत उपसहारा अफ्रीकी देशों में 17.2 प्रतिशत प्रशान्त क्षेत्र के देशों में 13.13 प्रतिशत अरब देशों में 9.6 प्रतिशत और भारत के सन्दर्भ

**तालिका–2 चुनिंदा देशों की संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व**

| देश | महिला सासंदों का प्रतिशत | देश | महिला सासंदों का प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| रवांडा | 61.3 | पाकिस्तान | 20.0 |
| मैक्सिको | 42.6 | बांग्लादेश | 20.3 |
| द. अफ्रीका | 42.0 | इण्डोनेशिया | 19.8 |
| इथोपिया | 38.8 | स. राज्य अमेरिका | 19.1 |
| जर्मनी | 37.0 | रूस | 15.8 |
| ग्रेट ब्रिटेन | 30.0 | मिस्र | 14.9 |
| नेपाल | 29.6 | भारत | 11.8 |
| फिलिपीन्स | 29.5 | ब्राजील | 10.7 |
| सिंगापुर | 23.8 | मलेशिया | 10.4 |
| चीन | 23.7 | जापान | 9.3 |

स्रोत: इण्टर- पार्लियामेण्ट और यूएन वूमन द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट वूमन एण्ड पॉलिटिक्स 2017

में राष्ट्रीय विधायिकाओं में 11.8 प्रतिशत है। अधिकतर राज्यों में यह आंकडा और भी कम है। देश भर में कुल 4118 विधानसभा सदस्यों में से केवल 9 प्रतिशत महिलाएं है।[7]

**पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका :**

भारतीय संविधान में महिलाओं के सशक्तीकरण एवं सुरक्षा हेतु कई प्रावधान है। इनमें 73 वें एवं 74 वें संविधान संशोधन अधिनियम 1994 के द्वारा पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं हेतु 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया। महिला सशक्तीकरण की दृष्टि से पंचायती राज दूरगामी महत्व का साबित हुआ है, कई अध्येता, जैसे निर्मल मुखर्जी, जॉर्ज मैथ्यू और रजनी कोठारी इसे क्रान्ति का नाम देते है, क्योंकि इसका दायरा बहुत ही व्यापक है। राजनीतिक तंत्र में परिवर्तन का माध्यम बनी पंचायती राज की नई व्यवस्था जिसमें पंचायतों को संवैधानिक मान्यता दी गयी, उनके संसाधनों के स्रोत निश्चित किये गये। इन्हें भारतीय राज्य का तीसरी संस्तर कहा जाता है।[8]

**तालिका- 3 भारत में पंचायती राज के आंकड़े [9]**

| वर्ष | कुल सींटे | महिला प्रतिनिधि | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 2001 | 273966 | 685155 | 25.01 |
| 2002 | 1630327 | 548794 | 33.66 |
| 2004 | 2065882 | 838227 | 40.57 |
| 2006 | 2656476 | 975116 | 36.71 |
| 2007 | 2645883 | 975057 | 36.85 |
| 2008 | 2645880 | 974255 | 36.82 |
| 2013 | 2921381 | 1364154 | 46.70 |
| 2014 | 2950128 | 1355425 | 45.94 |

स्रोत : कुमार नीशू, महिला सुरक्षा : मुद्दे एंव चुनौतियाँ, आरती प्रकाशन, पृष्ठ - 61

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 2013 से पूर्व महिलाओं की भागीदारी कुल प्रतिनिधित्व का 33 फीसदी से भी अधिक है जमकि 2009 से पूर्व यहाँ महिलाओं का कोटा 33 फीसदी था और अगर 2009 के आंकडों का (2013 से 2014 में) देखें तो लगभग आधी महिलायें प्रतिनिधित्व करती दिख रहीं है। क्योंकि वर्ष 2009 में कोटा 50 फीसदी कर दिया गया था। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि स्थानीय चुनावों में महिला आरक्षण का लाभ प्राप्त हुआ है।[10]

**निष्कर्ष-**

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी हेतु अनेकों प्रयास किये गये हैं, किन्तु संघर्ष का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य तथा राजनीतिक क्षेत्र में लिंग आधारित समानता एवं अधिकार के सम्बन्ध में मनुष्य के दृष्टिकोण तथा व्यवहार एवं उसमें होने वाले परिवर्तनों पर एक सामान्यीकरण प्रस्तुत करता है। बीते दशकों में, महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा देने हेतु अनेक नीतियाँ बनी, फिर भी अभी हम मुख्य उद्देश्यों की प्राप्ति से दूर है।[11] वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, राजनीतिक क्रियाकलापों एवं निर्णय प्रक्रिया में महिला सहभागिता की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। वस्तुत: महिलाओं की राजनीतिक

सहभागिता में अनेक व्यावहारिक कठिनाईयाँ एवं बाधाएँ हैं जिनमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक तत्व प्रमुख हैं। पारिवारिक जिम्मेदारीयों तथा गृहस्थी से जुड़े समस्त कार्यो के साथ राजनीतिक सक्रियता का सामंजस्य बैठाना अपने आप में अत्यन्त दुष्कर कार्य है। विभिन्न देशों के कुल राजनेताओं में सक्रिय महिला राजनेताओं का प्रतिशत 11 है। 89 प्रतिशत पुरुष राजनेताओं में अधिकांश पुरुषवादी मानसिकता एवं यथास्थितिवाद की प्रवृत्ति के है। स्वाभाविक रूप से ऐसी स्थिति में एक महिला राजनेता मार्ग अत्यन्त कठिन है।[12] महिलाएं भारत की आबादी का लगभग 49 प्रतिशत हिस्सा है इसलिए यह जरूरी है कि सामाजिक, आर्थिक मामलों में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जाए और उन्हें सुरक्षा प्रदान की जाए। इसके लिए आबादी के बड़े हिस्से को पितृसत्तात्मक सोच में बदलाव लाने की आवश्यकता और सरकार को उपयुक्त नीतियाँ अपनाकार यह बदलाव लाने में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। सरकार द्वारा 'बेटी बचाओं बेंटी पढ़ाओं', महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारण्टी योजना में महिलाओं की निश्चित भागीदारी और अनिवार्य मातृत्व अवकाश नियमावली इस दिशा में उठाय गये महत्वपूर्ण कदम हैं।[13] अतः किसी भी राष्ट्र की परम्परा और संस्कृति उस राष्ट्र की महिलाओं से परिलक्षित होती है, क्योंकि महिलाएं समाज की रचनात्मक शक्ति होती है। वर्तमान समाज की समृद्ध करने एवं भविष्य को बेहतर बनाने के लिए हमें महिलाओं की स्थिति को सुधारना होगा इसके लिए समाज की मानसिकता बदलनी होगी एवं अपनी रूढिवादिता का त्याग कर एक नयी समावेशी विकासवादी रणनीति अपनानी होगी। यहाँ पर स्वामी विवेकानन्द की उस उक्ति को स्मरण करना उपयुक्त होगा, जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा, विश्व के कल्याण की कोई संभावना नहीं है।

**सन्दर्भ गन्थ सूची**


1. सिंह, उमेश प्रताप, गर्ग, राजेश कुमार, महिला सशक्तीकरण विभिन्न आयाम, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नयी दिल्ली, पृ0 सं0-240
2. शर्मा, गरिमा, महिला सशक्तीकरण नवीन भूमिकाएँ चुनौतियाँ, पोइन्टर पब्लिशर्स जयपुर, पृ0 सं0-251
3. लवानिया, डॉ0 एम.एम-भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र, रिसर्च पब्लिकेशन्स जयपुर, पृ0 सं0-46
4. सिंह, उमेश प्रताप, गर्ग राजेश कुमार, पूर्वोक्त, पृ0 सं0-219
5. वहीं पृ0 सं0-93
6. मलिक, डॉ0 अमित, महिला सशक्तीकरण भारत की नई तस्वीर, विश्वभारत पब्लिकेशन्स, पृ0 सं0-139
7. योजना, महिला सशक्तीकरण, अक्टूबर 2018, पृ0 सं0-43
8. योजना, पूर्वोक्त, पृ0 सं0-44
9. कुमार डॉ0 नीशू, महिला सुरक्षा मुद्दे एवं चुनौतियाँ, आरती प्रकाशन, पृ0 सं0 64
10. वही पृ0 सं0-82
11. सिंह, उमेश प्रताप, गर्ग, राजेश कुमार, पूर्वोक्त पृ0 सं0-05
12. वही, पृ0 सं0-95
13. योजना, पूर्वोक्त, पृ0 सं0-45

# गांधी-एक सन्त योद्धा

**डा० अर्चना मिश्रा***

***शोध सार***

*शांति के मसीहा महात्मा गाँधी के जन्म को 150 वर्ष एवं इस जगत को छोडे 71 वर्ष हो चुके हैं परन्तु आज भी उनके विचार व कार्य शैली विश्व में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए हैं। साधारण व्यक्तित्व एवं आडम्बरहीन रहन सहन वाले इस 'संत' ने अपने अनूठे 'सत्याग्रह' के अस्त्र से ब्रिटिश शासन को आमूलचूल हिला डाला था। सन् 1857 ईस्वी में भारतीय क्रांतिकारियों द्वारा सुलगाई गयी स्वतंत्रता की चिंगारी को एक व्यापक जन आन्दोलन का रूप देकर औपनिवेशिक शासन की समाप्ति और स्वतंत्र भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में गांधी जी ने एक अपराजेय योद्धा की भूमिका निभाई। गांधी के नेतृत्व में चलाया गया अहिंसक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन आज भी मानवता के इतिहास में एक मिसाल है।*

*'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' ऐसा कहने वाले महात्मा गांधी की धारणायें और विश्वास सिद्धांत बनने में पहले उनके जीवन में उतरे। अपने जीवन को उन्होंने 'सत्य के प्रयोग' के तौर पर देखा। उनका सम्पूर्ण जीवन निरन्तर प्रयास और परीक्षण द्वारा सत्य के साक्षात्कार की चेष्टा है। मानव तत्व सदैव उनके चिंतन के केन्द्र में रहा। अपने कथन व आचरण की विलक्षण ईमानदारी के कारण ही वे मानव मात्र की समानता और विश्व शांति की स्थापना जैसे जटिल उद्देश्यों की प्राप्ति के संदर्भ में 'सत्य' और 'अहिंसा' की अवधारणा को एक प्रभावी मार्ग के रूप में स्थापित कर सके। आज पूरा विश्व मानता है कि सत्य, प्रेम और अहिंसा जैसे शाश्वत मानवीय मूल्यों का कोई विकल्प नहीं है और गांधी का दिखाया मार्ग ही नफरत और हिंसा के ज्वार में डूबती-उतरती दुनिया में शांति की स्थापना का एकमात्र तरीका है। मानवता की चिंताओं से जुड़े रहने के कारण ही गांधी चिंतन की अपील वैश्विक है। इन तमाम वर्षों में व्याख्या पुनर्व्याख्या की प्रक्रिया से गुजर कर विश्व में उनके विचारों की स्वीकार्यता निरंतर बढ़ी है।*

गुजरात में पोरबंदर के एक वैष्णव परिवार में जन्में गांधी जी को उच्च नैतिक मूल्यों की शिक्षा बचपन से ही मिली। उनके चिंतन पर पूर्वी एवं पश्चिमी दोनों स्रोतों का प्रभाव पड़ा। गांधी जी के चिंतन के मूल में प्रमुखत: भगवद्गीता थी। रामचरितमानस, महाभारत, पातंजलि योगसूत्र व कुछ बौद्ध एवं जैन धार्मिक व्याख्याओं ने उनके विचारों को प्रभावित किया। 'सत्य' और 'अहिंसा' के पाठ उन्होंने इन्हीं ग्रंथों से सीखे। 'सर्मन ऑन द माउंट' जैसे अहिन्दू ग्रंथों की शिक्षाओं का भी उनपर प्रभाव पड़ा जिसमें वे गीता से बहुत सी समानतायें देखते थे। लाओत्से के अनाग्रही दर्शन व कन्फ्यूशियस की शिक्षाओं ने भी उनके नैतिक राजनैतिक विचारों को प्रभावित किया। इस्लाम से भी उन्होंने अहिंसा की शिक्षा ली। कुछ धर्मनिरपेक्ष लेखकों जैसे थारू, रस्किन तथा टॉलस्टाय आदि के विचारों नें गांधी जी के चिंतन को मानववादी दृष्टिकोण देने का कार्य किया। रस्किन की प्रसिद्ध पुस्तक 'UNTO THIS LAST' के दक्षिण अफ्रीका में अनुवाद करने के दौरान उन्होंने 'सर्वोदय' की अवधारणा के विचार को लिया। टी0 एच ग्रीन (ब्रिटिश विचारक), हॉक्स लॉक (उदारवादी विचारक), रुसो (फ्रांसीसी विचारक) तथा बेंथम और मिल आदि अनेकों पश्चिमी प्रबुद्ध विचारकों ने भी गांधी दर्शन के विकास में योगदान दिया।

*एसोसिएट प्रोफेसर (अर्थ शास्त्र), एस.एस.डी.पी.सी. महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की (जिला हरिद्वार) उत्तराखण्ड,

गांधी जी हिन्दू धर्म के अनुयायी एवं ईश्वरवादी थे। प्रार्थना सभा उनके जीवन का अभिन्न अंग थी जो ईशावास्य उपनिषद के प्रथम श्लोक की पहली पंक्ति से प्रारंभ होती थी–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

अर्थात – जड़–चेतन प्राणियों वाली यह समस्त सृष्टि परमात्मा से व्याप्त है, मनुष्य इसके पदार्थों का आवश्यकतानुसार सेवन करे, परंतु यह सब मेरा नहीं है के भाव के साथ उनका संग्रह न करे।

पर एक ईश्वरवादी और धार्मिक व्यक्ति होने के बावजूद उनके अनुसार मनुष्य के धर्म की कसौटी व्रत–पूजन व अन्य धार्मिक कर्मकांड नहीं बल्कि उसका आचरण है। विभिन्न धर्म ग्रन्थों से प्राप्त विचारों को उन्होंने उदारता पूर्वक अपनाया। एक धर्मपरायण हिंदू होते हुए भी कट्टरता उन्हें छू तक नहीं गई थी। अत्यंत सादगीपूर्ण जीवन और श्रम की प्रतिष्ठा उनके आश्रम जीवन के सर्वमान्य मूल्य थे। उनके जीवन काल में ही रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हें एक महात्मा मानते हुए लिखा है– ''एक राजनीतिक के तौर पर या फिर एक संगठक के तौर पर एक जननेता के तौर पर या फिर एक नैतिक सुधारक के तौर पर, महानता में वह एक व्यक्ति के रूप में सबसे ज्यादा महान है। क्योंकि इनमें से कोई भी आयाम या गतिविधि उनकी मानवीयता को सीमित नहीं कर पाती है बल्कि सबको उनसे प्रेरणा ही मिलती है।''

महात्मा गांधी के विशद अध्ययन ने उनके विचारों में सार्वभौमिकता के तत्व का समावेश किया। सत्य और अहिंसा उनके सम्पूर्ण जीवनकाल में उनके चिंतन तथा कार्यप्रणाली के केन्द्र में रहे। गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि समाज में अन्याय, अभाव व शोषण चाहे जिस रूप में हों अंततः आक्रोश, अशांति और संघर्ष को ही जन्म देते है और सत्य, अंहिसा धैर्य, क्षमा जैसे मनानीय मूल्यों की अनदेखी के कारण ही आज विश्व में सर्वत्र पारस्परिक द्वेष, हिंसा एवं संघर्ष का वातावरण है। विश्व स्तर पर हिंसा के घातक परिणामों के विशद अध्ययन के बाद ही गंभीर चिंतन–मनन के परिणाम स्वरूप उन्होंने सामाजिक परिवर्तन हेतु संघर्ष की अहिंसक पद्धति की खोज की तथा उनके अनुसार 'जीवन के लिये संघर्ष' की पश्चिमी अवधारणा से कहीं बेहतर सिद्धांत है 'जीवन के लिये सहयोग' जिस पर अमल करने के लिये प्रेम, सहयोग और भातृत्व भाव जैसे मानवीय मूल्यों की आवश्यकता होती है। महात्मा गांधी का मानना था हिंसा के दो रूप है– शोषण तथा प्रत्यक्ष युद्ध, अन्याय के अहिंसक प्रतिरोध की 'सत्याग्रह' पद्धति को उन्होंने निष्क्रिय नहीं वन् अधिक सक्रिय व सशक्त मानते हुये कहा कि यह दुर्बल का अस्तत्र नहीं है क्योंकि शारीरिक शक्ति द्वारा किये गये प्रतिरोध की तुलना में इसका प्रयोग अधिक प्रबल मानसिक दृढ़ता की माँग करता है। इसके पीछे शारीरिक बल नहीं बल्कि सत्य की प्रखर शक्ति कार्य करती है।

शाश्वत मानवीय मूल्यों एवं सात्विक जीवन पद्धति वाले गांधी जी की सोच एक सच्चे 'संत' की थी किन्तु सत्य और अहिंसा के मूल्यों में प्रबल आस्था ने उनकी कार्यप्रणाली का हिस्सा बनकर इतिहास रच दिया और एक जुझारु व अपराजेय योद्धा के रूप में विश्व इतिहास में उनका नाम दर्ज कर दिया। दक्षिण अफ्रीका एवं भारत में महात्मा गांधी ने सत्तापक्ष के दमनचक्र व शोषण के विरुद्ध इन्हीं मूल्यों को हथियार बनाया।

**दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाँधी का प्रवास एवं कार्य-**

गांधी जी का दक्षिण अफ्रीका प्रवास इसलिए महत्वपूर्ण है कि यहीं उन्होंने सत्याग्रह शब्द की खोज और उसका प्रयोग किया। मई 1893 में चौबीस वर्षीय युवा वकील मोहनदास करमचंद गांधी डरबन (दक्षिण अफ्रीका) पहुँचे। आधुनिक अंग्रेजी वेशभूषा वाले मोहनदास को अपने दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान गोरे शासकों के नस्लवादी रवैये की वजह से अनेक अवसरों पर घोर मानसिक यन्त्रणा, अपमान और शारीरिक यातना से भी गुजरना पड़ा। इस स्थिति को उन्होंने मात्र अपना नहीं सम्पूर्ण भारतीयों का अपमान समझा। अपमान के हर कड़वे घूँट के साथ उनका संकल्प दृढ़ से दृढ़तर होता गया। इसके प्रतिकार के लिये उन्होंने वहाँ के भारतीयों को संगठित कर 'सत्याग्रह' नाम के अपने नवअन्वेषित अस्त्र का कुशलतापूर्वक प्रयोग करते हुए अन्याय व दमन का विरोध अहिंसक आंदोलन के माध्यम से करने की अपनी अद्‌भुत सामर्थ्य का परिचय दिया। दक्षिण अफ्रीका प्रवास के दौरान किये प्रमुख कार्यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

1. 1894 में अफ्रीकी नागरिकों व भारतीयों के प्रति नस्लीय भेदभाव के खिलाफ अहिंसक विरोध प्रदर्शन।
2. 1899 में बोअर युद्ध के दौरान अंग्रेजो के लिए भारतीय एंबुलेंस कोर का आयोजन किया ताकि ब्रिटिश लोगों को अपना मानवतावाद दृष्टिकोण समझा सकें।
3. 1896 में ट्राँसवाल एशियाटिक अध्यादेश (जिसमें स्थानीय भारतीयों के खिलाफ प्रावधान थे) के विरोध के लिए सत्याग्रह किया। ट्रांसवाल में ही उन्होंने ट्रांसवाल सीमा के पार लगभग 2000 नाबालिगों द्वारा अपने हितों की रक्षा के लिए किये जा रहे संघर्ष के लिए भी नेतृत्व प्रदान कर सत्याग्रह आंदोलन किया।

इसके अतिरिक्त दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने 'फीनिक्स' एवं 'टाल्स्टॉय' नाम के दो आश्रम स्थापित किये जो आज भी उनके जीवन मूल्यों व दर्शन के प्रसार के लिए कार्यरत हैं।

दक्षिण अफ्रीका में प्रवास के दौरान उन्हें अनेक बार जेल की सजा भी सुनाई गई किन्तु इससे सत्य व अहिंसा के प्रति उनकी आस्था में कमी नहीं आई।

**भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा का अहिंसक संघर्ष**

दक्षिण अफ्रीका में लगभग बीस वर्षो के लंबे प्रवास के बाद भारत आगमन पर वरिष्ठ कांग्रेसी नेता गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा उन्हें देश की मौजूदा राजनीतिक स्थिति और सामाजिक मुद्‌दों से भलीभांति अवगत कराया गया। यहाँ पुनः उन्हें अपने 'सत्याग्रह' के अस्त्र के प्रयोग का अवसर मिला। भारत में भी उन्होंने 'सत्याग्रह' व 'सविनय अवज्ञा' को आधार बनाकर अनेक आंदोलन किये जिन्हें व्यापक जन समर्थन प्राप्त हुआ। इनमें से कुछ प्रमुख आंदोलनों को रेंखाकित किया जा सकता है।

1. 1917 में चंपारण का सत्याग्रह जो ब्रिटिश सत्ता द्वारा किये जा रहे शोषण से नील उत्पादकों के हितों की रक्षा के लिए था।
2. 1918 का खेड़ा (गुजरात) सत्याग्रह जहाँ किसान फसल खराब होने के कारण ऊँचे करों का भुगतान करने में असमर्थ थे।

3. 1919 में हिन्दू और मुस्लिम समुदायों की एकता को बढ़ाने के उद्देश्य से तुर्की के खिलाफत आंदोलन का समर्थन।
4. असहयोग आंदोलन–1920 से फरवरी 1922 तक चले इस आंदोलन को अहिंसा के माध्यम से ब्रिटिश शासन के साथ असहयोग करने के उद्देश्य से चलाया गया था। 'चौरा–चौरी' में जनता का प्रतिरोध हिंसक हो जाने के बाद आंदोलन वापस ले लिया गया।
5. सविनय अवज्ञा–12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से 38.5 किमी0 दूर 'दाँडी' नामक गाँव के लिये पैदल यात्रा आरंभ की थी। जिसे व्यापक जनसमर्थन प्राप्त हुआ।
6. 'भारत छोड़ो–इस देशव्यापी आंदोलन की शुरुआत 8 अगस्त 1942 को हुई, 'अगस्त क्रांति के नाम से विख्यात इस आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी ने 'करो या मरो' का नारा दिया था।[7] बॉयकाम में अस्पृश्यता की रुढि के विरोध के लिये किये गए सत्याग्रह के परिणाम स्वरूप अपर्ण–हिन्दुओं के लिये मंदिरो के प्रवेशद्वार खुले।

अपने जीवनकाल में ही किंवदंती बन चुके गांधी सच्चे अर्थो में एक विश्वमानव थे। विश्व राजनीति के केन्द्र में रहते हुए उन्होंने देश और विदेश की धरती पर अनेक आंदोलनों को स्वर और नेतृत्व दिया। उनकी सबसे विलक्षण उपलब्धि रही कि उन्होंने धर्म को राजनीति से अलग रखा तभी वे हर वर्ग हर समुदाय को साथ लेकर चल सके। अपनी दृढ़ संकल्पशक्ति, सच्चाई और अद्भुत प्रबंधनक्षमता से व जटिल मुद्दों को भी सरल रूप में जनता के मध्य स्वीकार्य बनाकर बड़े उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो सके। अपनी कथनी और करनी में साम्य रखते हुए उन्होंने अपने सैद्वांतिक दर्शन के व्यवहार में उतारा और मानवीय मूल्यों को केन्द्र में रखकर चलने की कार्यप्रणाली के बल पर उन्होंने धर्म के राजनीतिकरण नहीं बल्कि राजनीति के आध्यात्मीकरण का प्रयास किया जो एक जुझारु जननेता एवं एक सच्चा संत ही कर सकता था।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि ब्रिटिश शासन की अन्यायपूर्ण नीतियों के प्रतिकार के लिये महात्मा गांधी की अहिंसक पद्धति के प्रयोग और सफलता से समस्त विश्व परिचित है। उनके अहिंसा और सत्याग्रह संबंधी विचारों की मर्टिन लूथर किंग नेल्सन मंडेला, बराक ओबामा सहित अनेक राष्ट्राध्यक्षों ने अनेक अवसरों पर मुक्त कंठ से सराहना की है। भौतिक जगत से प्रयाण के सात दशकों की लम्बी अवधि को बाद, निरंतर व्याख्या पुर्नव्याख्या की प्रक्रिया से गुजर कर गांधी जी के विचारों की स्वीकार्यता लगातार बढ़ी है। जलवायु परिवर्तन, विनाशकारी शस्त्रास्त्रों की होड, आतंकवादी प्रवृत्तियों के उफान जैसी अनेक विश्व व्यापी समस्याओं के समाधान की दिशा में बढ़ने के संदर्भ में उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

## संदर्भ स्रोत :


- कालेलकर, काका साहेब, गाँधी दर्शन, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 1972
- शर्मा, वीरेन्द्र, भारत के पुनर्निमाण में गाँधी जी का योगदान, श्री पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1984
- कालेलकर, काका साहेब, 'अहिंसा, जीवन संस्कृति की नई दिशा, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1995
- वर्मा, आनन्दस्वरूप, दक्षिण अफ्रीका : गोरे आतंक के खिलाफ काली चेतना, नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1996
- सक्सेना, रमेश, गाँधी एक अध्ययन, विश्वभारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2009
- सिन्हा, मनोज (संपादक) – गाँधी अध्ययन, ओरियंट, ब्लैकस्वान प्रा०लि०, नई दिल्ली, 2010

# नैतिकता से ओतप्रोत गाँधी दर्शन

**डा० कामना जैन***

***सार संक्षेप***

*सत्य ही कहा गया है कि विचारों से दुनिया बदलती है, इसमें जहाँ घावों की भरने क असीम क्षमता होती है, वहीं सर्वनाश की भी ताकत होती है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में ऐसे नैतिक ज्ञान एवं सद्विचारों की परम् आवश्यकता है जो देश, काल, परिस्थिति से परे 'मानवता' के हित चिंतन की बात करते हों। गाँधी जी की महानता उनके जीवन काल तक ही सीमित नहीं है, वरन् वर्तमान परिस्थितियों में तो उसकी प्रासंगिकता पहले से भी कहीं अधिक बढ़ गयी है। गाँधी जी ने जिन नैतिक आदर्शों का सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्र में प्रयोग किया, वे चिरन्तन काल से चले आ रहे शाश्वत् मूल्य है। जिनमें सर्वोपरि है प्रत्येक प्राणी को ईश्वर की अनुकृति मानकर उसके साथ व्यवहार करना। सत्याग्रह, सर्वोदय, स्वराज एवं संरक्षकता आदि नैतिक आदर्शों को स्थापित कर वे समाज में परिवर्तन लाना चाहते थे।*

युग पुरूष महात्मा गांधी का जीवन, विचार, कर्मठता आदि सभी कुछ अनुकरणीय है। राष्ट्र सेवा और जन सेवा करते हुए उनका बलिदान अविस्मरणीय है। 21 वीं सदी में तो नैतिक सिद्धान्तों से ओत-प्रोत उनकी विचार धारा अत्यंत महत्वपूर्ण है। क्योंकि पिछली सदी में जिस असंतुलित वैचारिक मनोवृत्ति को लेकर राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानव समुदाय की समस्यायें बढ़ी हैं, उसके परिणाम हम वर्तमान में भुगत रहे हैं। गांधीवादी विचारधारा की अंतर आत्मा नैतिकता एवं आध्यत्मिकता से प्रेरित होने के कारण एक संतुलित समाज का निर्माण करती है और इसके बीज प्राचीन भारतीय संस्कृति, ग्रन्थों व जीवन शैली में सदैव से ही विद्यमान रहे है। इस तथ्य को स्वीकारते हुए गांधी जी स्वयं कहा करते थे, कि मैने किसी नवीन सिद्धान्त की सृष्टि नहीं की है, प्राचीन सिद्धान्तों को ही नवीन रूप में दोहराने का प्रयत्न किया है। इसलिए गांधी अपने विचारों को गांधीवाद के नाम से पुकारा जाना पसन्द नहीं करते थे। मार्च 1936 में सावंली में गांधी संघ में भाषण करते हुए उन्होंने कहा,''गांधीवाद नाम की कोई वस्तु नहीं है। मैं अपने पीछे कोई सम्प्रदाय छोड़कर नहीं जाना चाहता हूँ। मैं किन्ही नए सिद्धान्तों या किसी मत को चलाने का दावा नहीं करता। मैंने केवल अपने ढंग से आधारभूत सच्चाइयों को अपने दिन प्रतिदिन के जीवन एवं समस्याओं पर लागू करने का प्रयत्न किया है।.....विश्व को सिखाने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। सत्य और अहिंसा उतने ही पुराने हैं, जितने कि पर्वत। मैंने तो केवल इन दोनों को यथा संभव विस्तृत क्षेत्र में प्रयोग करने का प्रयत्न किया है।[1] गांधी जी ने गांधीवाद जैसी कोई नई विचारधारा नहीं बनाई। वरन् भारत की प्राचीन संस्कृति, वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता, विश्व के विभिन्न धर्मग्रन्थ, उत्कृष्ट लेखकों की पुस्तकों में से ही सद्जीवन एवं सर्वकल्याण के लिए आवश्यक नियमों जैसे-सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, मानव सेवा-माधव सेवा आदि को ना केवल हृदयंगम किया वरन् निःस्वार्थ भाव से किसानों, मजदूरों, हरिजनों, कुटीर उद्योगों में रत् लोगों के प्रति होने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई एवं अहिंसक माध्यमों से उनके शोषण का प्रतिकार किया।

इस संदर्भ में पट्टाभि सीता रमय्या का कथन था कि, ''गांधीवाद सिद्धान्तों का, मतों का, नियमों का, विनियमों का और आदेशों का एक समूह मात्र नहीं है, वरन् वह एक जीवन शैली या जीवन की

असि. प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, एस.एस.डी.पी.सी.(पी.जी.) कॉलेज, रुड़की (हरिद्वार), उत्तराखण्ड

समस्याओं के विषय में प्राचीन दशा को पुनः स्थापित करना चाहता है। इस तरह वह आधुनिक समस्याओं के लिए प्राचीन समाधान प्रस्तुत करता है।'[2] युग प्रवर्त्तक महात्मा गांधी के सभी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि विचारों में नैतिकता सर्वोपरि रही है। नैतिक विचारों द्वारा ही सभ्य समाज निर्मित किया जा सकता है। उनके लिए जीवन का प्रत्येक क्षेत्र नैतिक मर्यादाओं से शासित है।

**अहिंसा परमो धर्मः**– 'सत्य व अहिंसा मेरे दो फेफड़ों के समान हैं' कहने वाले गांधी जी ने नैतिक धारणाओं में अहिंसा को सर्वोपरि स्थान दिया। संसार के सभी धर्म हिंसा व द्वेष को त्याग करके अहिंसा व प्रेम का मार्ग अपनाने की शिक्षा देते हैं। गांधी जी का भी मानना था कि किसी भी विवाद का हल छल बल व हिंसा से नहीं निकाला जा सकता। तलवार के जोर से अगर आदमी कुछ ले लेता है तो उससे बड़ी तलवार से वह छीन भी लिया जाता है।[3] वैसे भी संसार में हिंसा भले ही देखने में शक्ति का भ्रम पैदा करें पर वास्तव में उसकी शक्ति बहुत खोखली होती है। गांधी जी के अनुसार 'मेरा पक्का विश्वास है कि हिंसा के आधार पर कोई स्थायी वस्तु निर्मित नहीं की जा सकती।[4] गांधी जी ने शांति की स्थापना और युद्ध को विराम देने के लिए युद्ध किए जाने वाले विचार को उपहास जनक बताया और कहा युद्ध मानव जाति के सिवाय किसी चीज को समाप्त नहीं करते।[5] वे साध्य की पवित्रता के साथ–साथ साधन की पवित्रता को भी अधिक महत्व देते थे। अहिंसा में सृजनात्मकता होती है, जबकि हिंसा में विनाश के बीज होते हैं। अतः वार्ता के द्वारा, उचित तर्कों के साथ अपने विरोधी को अपने विचारों को समझाने का प्रयास करना चाहिए। गांधी प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर की अनुकृति मानते थे, उनका प्रसिद्ध वाक्य था,''आदम खुदा नहीं, लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं'' अर्थात् मनुष्य ईश्वर नहीं है। लेकिन ईश्वरीय प्रकाश से किसी प्रकार भी अलग नहीं है।[6] इसलिए कोई भी व्यक्ति हृदय से खराब नहीं होता परिस्थितिवश बुरा बन जाता है।

अहिंसा के महत्व को स्वीकार करते हुए गांधी के अनुयायी, अमरीकी अश्वेत नेता मार्टिन लूथर किंग का विचार है कि ''आज के अत्यंत विनाशकारी अस्त्रों के युग में हमारे सामने दो ही रास्ते है–या तो हम अहिंसा को अपना लें या फिर अपने अस्तित्व को ही मिट जाने दें।''[7] आचार्य विनाबा भावे ने भी इसी तथ्य की पुष्टि करते हुए कहा था कि,''राजनीति देश को बचा नहीं सकती, लश्कर देश को और दुनिया को बचा नहीं सकता। केवल विज्ञान दुनिया को बचा नहीं सकता, वह दुनिया को बचाने में कुछ मदद् दे सकता है। जब सबके हृदय में करूणा का अनुभव आएगा, केवल तभी दुनिया का बचाव है।''[8]

**धर्मः मानव धर्म सर्वोपरिः**– महान भारतीय महाकाव्य लेखक वेद व्यास जी ने व्यक्ति को महत्व देते हुए लिखा था। 'नहिं श्रेष्ठ तरम् किंचित मनुसात्' अर्थात मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। मनुष्य सभी धर्मों से ऊपर है। धर्म शब्द का अंग्रेजी रूपान्तरण Religion लैटिन भाषा के Religere शब्द से बना है जिसका अर्थ है बाँधना या जोड़ना।[10] महात्मा गांधी ने इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए 4 मई 1940 में हरिजन में लिखा था,''धर्म व्यक्ति को ईश्वर से तथा व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ता है।'' इस विचार को आत्मसात् करते हुए ही गांधी ने अपना समस्त जीवन मानवता की सेवा तथा इसे एकजुट करने में लगा दिया। उन्होंने कहा,''यदि ईश्वर की उपासना करना चाहो तो संसार में विरक्त होकर हिमालय की कँदराओं में मत जाओ। जीवधारी प्राणियों के रूप में ईश्वर की संतान से प्रेम करना ईश्वर की सेवा है।''

आत्म साक्षात्कार की अपनी गहरी तलाश में विभिन्न मतों के धर्मग्रंथों से प्राप्त विचारों को गांधी जी ने उदारतापूर्वक अपनाया। यद्यपि वह स्वयं एक धर्म परायण हिंदू थे। गांधी जी के धर्म में रूढियों और कट्टरता के लिए कोई जगह नहीं थी। आध्यात्मिक ग्रंथों में भगवद्गीता को गांधी जी ने सर्वाधिक महत्व दिया था। ईसा मसीह का चरित्र उन्हें द्रवित करता था। सर्मन ऑन दे माउंट उनको प्रेरणा स्रोत भी था और जीवन निर्माण का मार्ग भी। उनकी गहरी आस्थाओं का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि उनके लिए मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में सर्वाधिक महत्वपूर्ण था मानवता की नि:स्वार्थ सेवा करना।[12] इसलिए गांधी जी मामूली आदमी के दु:ख दर्द को अपना समझते थे, उनका संघर्ष आम आदमी की बेहतरी के लिए था शासक के लिए नहीं। आम आदमी के साथ तादात्म्य स्थापित करने की जरूरत के बारे में गांधी जी कहते थे, ''सर्वप्रथम हमें उनके बीच जाकर उनके साथ रहना होगा और उनके दु:खों में शरीक होना होगा। उनकी समस्याओं को समझना होगा।[13]''

गांधी जी का मानना था कि धर्म का वास्तविक उद्देश्य है–मानव की सेवा और दु:खी मानव के दु:ख का निदान करके ही ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। उनका कथन था, ''मैं ऐसा धर्म चाहता हूँ, जो हमें आत्म विश्वास, राष्ट्र को स्वाभिमान तथा दु:खी और दरिद्र लोगो के दु:खों को दूर करने की शक्ति प्रदान करे। यदि आप ईश्वर को ढूँढना चाहते हैं, तो फिर मानव की सेवा करें।'' इसी प्रकार रोमां रोला ने भी गांधी के विषय में कहा था–'इसी सत्य का आधार लेकर उन्होंने अपनी तमाम इच्छाओं और आंकाक्षाओं, रागद्वेष, बुद्धि और विश्वास, ज्ञान और कर्म को मानव की निरंतर सेवा में लगाकर अपने आपको शून्य में विलीन कर देने की महान साधना की थी।[14] गांधी जी का मानना था कि अहं के टकराव तभी समाप्त हो सकते है जब कि मनुष्य स्वार्थ, अभिमान, ईर्ष्या आदि छोड़कर अपने को शून्य बनाने तक नम्र बनता है। गांधी जी ने जब अपने को इस तरह बिल्कुल शून्य बनाया तब जाकर दुनिया ने उनको जीते जी महात्मा के तौर पर पहचाना और दुनिया के अच्छे से अच्छे लोगों ने उनके रास्ते पर चलकर धन्यता का अनुभव किया।[15]

**सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में नैतिकता** – गांधी जी का विचार था कि आत्म चेतना व नैतिकता पूर्ण विचारों द्वारा ही एक सभ्य समाज का निर्माण किया जा सकता है। व्यक्ति और समाज का विकास पारस्परिकता के आधार पर ही संभव है। व्यक्ति के विकास के लिए समाज द्वारा ऐसी सुविधायें उपलब्ध कराना आवश्यक है, जो लोगो में भाईचारे, पारस्परिकता, प्रेम, सहयोग और त्याग में वृद्धि कर सके। इस सम्बन्ध में गांधी जी ने पश्चिमी उपयोगितावाद के 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की विचार धारा को त्यागकर 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' को आत्मसात् किया और सर्वोदय के सिद्धान्त को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान कर जीवन पर्यन्त सर्वोदय की भावना से कार्य किया। अपनी आत्म कथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' में महात्मा गांधी ने स्वीकार किया कि उन्होंने सर्वोदय के नियमों को निम्न प्रकार से जाना है –

1. सबके कल्याण में ही हमारी भलाई है।
2. नाई, वकील, सबका कार्य महत्वपूर्ण है।
3. सादा, मेहनत, मजदूरी से जीवन यापन करने वाले किसान का जीवन ही वास्तविक जीवन है।[16]

इसलिए शारीरिक श्रम हो महत्व देते हुए उन्होंने लिखा है–जो व्यक्ति रोटी के लिए श्रम नहीं करता

उसे रोटी खाने का कोई अधिकार नहीं है। बौद्धिक श्रम के साथ-साथ शारीरिक श्रम भी अनिवार्य होना चाहिए। अन्यथा शारीरिक श्रम करने वाले अपने आपको हीन समझने लगेंगे। अत: जो व्यक्ति बौद्धिक श्रम करतें हैं उन्हें भी कुछ ना कुछ शारीरिक श्रम करना अनिवार्य होना चाहिए जिससे शारीरिक श्रम का गौरव बढ़ सके तथा इसे व्यक्ति के नैतिक कर्त्तव्य का दर्जा प्राप्त हो सके।[17]

समानता के सिद्धान्त को मानते हुए गांधी जी ने भारत में स्मृतिकाल से चली आ रही 'छूआछूत प्रथा को एक कलंक माना और इसका प्रतिकार किया। गांधी जी ने 'ईशावास्योपनिषद' में उल्लिखित मंत्र-'ईशावास्यं मिदं सर्वम् यत् किञ्च जगत्यां जगत्'[18] अर्थात् इस सृष्टि के कण कण में ईश्वर का वास है, का हदयंगम् किया और स्वयं मलिन हरिजन बस्तियों में रहकर इसे समूल उखाड़ने का प्रयत्न किया। उनके शब्दों में ''अस्पृश्यता का मूल हमारे धर्म में नहीं है। कुछ लोगों के झूठे अहंकार ने ही छूआछूत को जन्म दिया है। छूआछूत कोई ईश्वरीय रचना नहीं है यह तो एक नकली चीज है, जिसे देवता ने नहीं बल्कि शैतान के दिमाग ने बनाया है।''[19] समानता के सिद्धान्त के अन्तर्गत गांधी जी सामाजिक पुनर्निर्माण हेतु स्त्री पुरुष समानाधिकार व सह अस्तित्व के विचार को बढ़ावा देते है। एक अन्यायपूर्ण समाज की स्त्री जो कि खुद शोषित, पीड़ित, भेदभाव की शिकार है वह समाज को क्या दे सकती है? इसके विपरीत सामाजिक न्याय की स्थापना से पोषित अधिकार सम्पन्न स्त्री अपने परिवार व समाज को सुसंस्कृत, संस्कारवान एवं अनुशासित बनाने की दिशा में अग्रसर कर सकेगी।

गांधी जी अपने विचारों को राजनीति के माध्यम से साकार स्वरूप देना चाहते थे। गांधी जी का आदर्श है 'राम राज्य'। इसका तात्पर्य है-धर्म,न्याय व प्रेम का राज्य। गांधी जी के शब्दों में उसे अहिंसक स्वराज्य कहना चाहिए अर्थात् ऐसा स्वराज्य जिसमें राष्ट्रीय जीवन इतना पूर्ण हो जाए कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने पर नियंत्रण रखे। यह एक सुसंस्कृत अराजकता की अवस्था होगी, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपना ही शासक होगा। वह स्वयं ही अपना नियमन इस प्रकार करेगा जिससे कि पड़ोसी के हिम में बाधा ना हो। गांधी जी का मानना था कि केंद्रीकरण से जब शक्ति बढ़ती है तो यह हिंसा व शोषण को बढ़ावा देती है। इसकी अपेक्षा अहिंसक आचरण द्वारा शोषण व अन्याय को समाप्त कर एक उत्तम समाज का निर्माण किया जा सकता है। इस हेतु गांधी जी ने स्वराज का विचार प्रस्तुत किया। यह एक नैतिक राज्य होगा, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की नैतिकता उच्च स्तर पर होगी। जिसके आधार पर वह अपने लोभ, स्वार्थ, आकांक्षाओं को इतना आत्म नियंत्रित कर लेगा की उसके द्वारा उसके सहनागरिकों के हितों को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचेगी।

अधिक से अधिक शासन का, कार्य उन आत्मनियंत्रित इकाइयों के संयोजन का है। 'सूत्रे मणिगणा इव' अर्थात जैसे धागे में मनके पिरोए होते है वैसे ही राज्य में आत्मनियंत्रित व्यक्ति संघटित हो जाते हैं।[20] इसी प्रकार अपने आर्थिक विचारों को प्रतिपादित करते हुए भी गांधी जी ने नैतिकता का मार्ग नहीं त्यागा। आधुनिकीकरण एवं औद्योगीकरण की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि इसके कारण गांवो में लघु कुटीर उद्योग नष्ट हो गए है। साथ ही समाज में बेरोजगारी, निर्धनता, व्यक्तिवादिता बढ़ रही है। स्वराज प्राप्ति के लिए आत्मनिर्भरता आवश्यक है और आत्म निर्भरता लाने के लिए नागरिकों को स्वावलंबी बनकर केवल स्वनिर्मित सामान का ही प्रयोग करना होगा। स्वदेशी को अपनाए बिना ना तो देश को आर्थिक गुलामी से मुक्त किया जा सकता है और ना ही राजनीतिक गुलामी

से। गांधी जी सम्पत्ति संरक्षण के विरोधी नहीं थे, वरन् अपरिग्रह, अस्तेय आदि नैतिक सिद्धान्तों को अपनाने के पश्चात् जो संपत्ति अर्जित की गई है, उसका जन कल्याण में प्रयोग करना चाहिए और इस सम्बन्ध में गांधी जी का संरक्षकता अथवा न्यास सिद्धान्त एक अनुपम देन है।

**निष्कर्ष**- गांधी जैसे नैतिकता एवं आध्यात्मिकता से ओत प्रोत महापुरुष इस संसार में विरले ही मिलते हैं। सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उन्होंने केवल प्रवचन ही नहीं दिए वरन् स्वयं उसे अपने जीवन में उतारा भी। अहिंसा रूपी अस्त्र द्वारा देश को विदेशी शासन की बेड़ियों से तो मुक्त कराया ही साथ ही देश के अंदर प्रचलित सामाजिक बेड़ियों यथा छुआछूत, स्त्री पुरुष असमानता धार्मिक भेदभाव आदि को भी मिटाने का प्रयास किया। उन्होंने बौद्धिक श्रम के साथ-साथ शारीरिक श्रम को भी महत्व दिया। अपना कार्य स्वयं करके प्रेरणास्रोत भी बने। सत्याग्रह, सर्वोदय, स्वराज्य, संरक्षकता आदि सिद्धान्तों द्वारा देश को नवीन दिशा देने का प्रयास किया। प्राचीन ऋषि मुनियों ने गहन तपस्या व स्वाध्याय करके जिस नैतिक चिंतन की रूपरेखा समाज को प्रदान की गांधी जी ने उसे साकार रूप देने का प्रयास किया। अब गांधी की उत्तराधिकारी वर्तमान पीढ़ी का यह उत्तरदायित्व बनता है कि समाज में नैतिकता की नींव को मजबूत किया जाए और उसके ऊपर खड़ी मानवता द्वारा एक, महान, मजबूत, आदर्श राष्ट्र का निर्माण किया जा सके।

**संदर्भ सूची**


1. जौहरी, जे.सी., तुलनात्मक राजनीतिक सिद्धान्त, एस.बी.पी.डी., पब्लिकेशन्स, आगरा, 2019, पृष्ठ-194
2. उपरोक्त, पृष्ठ-195
3. हरिजन सेवक, 8 अगस्त 1946
4. यंग इंडिया, 2 जुलाई 1939
5. सक्सेना, रमेश, गांधी एक अध्ययन, विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-213, 2009
6. सिंह, रामजी, गांधी एवं मार्डन वर्ल्ड, क्लासिकल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1988, पृष्ठ-7
7. गाबा, ओ.पी., राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा, मयूर पैपर बैक्स, नोएडा, पृष्ठ-321
8. सक्सेना, रमेश, पूर्वोक्त, पृष्ठ-205
9. सिंह, रामजी, पूर्वोक्त, पृष्ठ-3
10. शर्मा, हरीश चंद्र, प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार तथा संस्थाएं, कॉलेज बुक डिपो जयपुर, 1990, पृष्ठ-48
11. शर्मा, शंकर दयाल, विश्व धर्म और विश्व संस्कृति, पृष्ठ-48
12. कोबिंद, राम नाथ, महात्मा गांधी- एक उम्मीद दुनिया की, हिन्दुस्तान, 30 जनवरी,2020
13. पालखी वाला, नाना, आज का भारत, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, 2006 पृ0-157
14. दत्त, धीरेन्द्र मोहन, महात्मा गांधी का दर्शन, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1981 पृष्ठ-49
15. भट्टाचार्य, प्रभात कुमार, गांधी दर्शन, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर 1972, पृष्ठ-67-68
16. गांधी, मोहनदास कर्मचंद 'संत्य के साथ मेरे प्रयोग, अनुवादक काशीनाथ त्रिवेदी नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबा, 2014 पृ-271
17. अग्रवाल, जी. के., समाजशास्त्र, एस.बी.पी.डी. पब्लिकेशन्स, आगरा, पृ0-174
18. ईशा वास्योपनिषद्, 1
19. अग्रवाल, जी.के., पूर्वोक्त, पृष्ठ-173
20. सुमन, रामनाथ, गांधी जी के विचार, पृष्ठ-2-4

# चंपारण सत्याग्रह में गांधी: एक अवलोकन

**डॉ० शालिनी***

***शोधसार***

*महात्मा गांधी न तो एक दार्शनिक थे जिन्होने गहन अध्ययन एवं मनन के पश्चात् एक सुव्यवस्थित दर्शन प्रस्तुत किया हो – न ही वे एक राजनीतिज्ञ थे जिन्होने राजनीति को राजनीति मानकर एक नेता की भूमिका निभायी हो – और न ही वे एक सन्त थे जिन्होने इस जगत को मिथ्या मानकार अपने को ब्रह्म में लीन कर दिया हो। किन्तु अजीब बात है वे यह सब कुछ न होते हुए भी, यही सब कुछ थे। अपने जीवन दर्शन को व्यवस्थित रूप देने का अवकाश नहीं था फिर भी दार्शनिक मुद्रा में कठोर सिद्धान्तों का प्रतिपादन उन्होंने किया। राजनीतिज्ञ न होते हुए भी उन्होने अपेन को देश और विदेश की राजनीति से हर क्षण सम्बद्ध रखा। गुफावासी संसार त्यागी संत न होते हुए भी उनका मसीहायी अन्दाज प्रखर बना रहा। उनका सर्वव्यापी व्यक्ति आक्षितिज फैला रहा तथा उनके कृतित्व ने मानव जीवन के हर पहलू को साधिकार आत्मसात् किया।*[1]

## 1917 का चंपारण सत्याग्रहः

1915 में दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश आने पर गांधी जी का भव्य स्वागत किया गया। गांधी के प्रति शिक्षित ही नही अपितु अशिक्षित भारतीयों में भी एक सम्मोहन भाव बढ़ता जा रहा था गोखले ने भी दक्षिण अफ्रीका के संघर्षो के समर्थन में जनमत जाग्रत करते समय भारतीयों को गांधीजी के बारे में काफी परिचित करा दिया था। भारतीयों ने दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए ही अपने भावी एवं दिव्य प्रकाश से युक्त नेता के रूप में उन्हें अपने मन में बैठा लिया था क्योंकि दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी के संघर्षो की जानकारी भारत के काफी बड़ी जनसंख्या तक पहुंच रही थी। परन्तु भारत लौटने के बाद गांधी जी सीधे किसी मामले में नहीं उलझे। इनका विचार था कि किसी भी मामले में तक तक हस्तक्षेप नही करना चाहिए जब तक कि उसके बारे में पूर्णरूप से जाँच–पड़ताल न कर ली जाए। इस कारण वे देश का दौरा करते रहे और अपने आश्रम को अहमदाबाद में व्यवस्थित करने की कोशिश करते रहें दूसरे वर्ष 1916 में भी सक्रिय राजनीति से दूर रहे।[2] 14 दिसम्बर 1916 को लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन के समय गांधीजी किशोर बाबू से मिले जो बिहार के एक कार्यकर्त्ता थे और जिन्होंने गांधी जी की चम्पारण के बहु पुरातन कृषि–समस्या से अवगत कराया था और उन्हें चम्पारन आने के लिए आमन्त्रित किया था। गांधी अप्रैल 1917 में चम्पारन गए। चम्पारन जिले में काम करने वाली इन फैक्ट्रियों या पेढियों को दो वर्गो में बांटा जा सकता है–

### 1. वे जिनके पास नील की खेती नहीं थी –

जिन पेढियों ने नील की खेती कभी नही कराई उन्होने कई अबवाब वसूल किये है (अबवाब किसानों से वसूल किये जाने वाले एक प्रकार के टैक्स है, जिन्हें इस इलाके में अलग–अलग जगहों में कई अलग–अलग नामों से पुकारा जाता है) और इस तरह जो रकम वसूल की गई है वह कम–से–कम किसानों द्वारा दिये जाने वाले लगान के बराबर तो है ही। इस प्रकार के कर वसूल करना गैर–कानूनी ठहराया जा चुका है, किन्तु वह बन्द नहीं हुआ है।

*प्रवक्ता, (अंशकालिक) राजनीति विज्ञान विभाग, एस.एस.डी.पी.सी.(पी.जी.) कॉलेज, रुड़की (हरिद्वार), उत्तराखण्ड

## 2. वे जिनके पास नील की खेती थी।

नील की खेती कराने वाली फैक्ट्रियाँ नील की खेती या तो तिनकठिया' या 'खुश्की' पद्धति के अन्तर्गत कराती रही है। तिनकठिया की पद्धति ज्यादा प्रचलित रही है और किसानों को सबसे ज्यादा तकलीफ उसी से हुई है। उसका रूप समय के साथ बदलता रहा है। उसका आरम्भ नील से हुआ था, किन्तु धीरे-धीरे उसने सभी फसलों को अपनी लपेट में ले लिया है। वह किसान की जमीन से सम्बद्ध ऐसी बाध्यता है जिसके कारण किसान को जमींदार की मर्जी के अनुसार अपनी जमीन के 3/20 हिस्से पर कोई खास फसल उगानी पड़ती है और इसके एवज में उसे निर्दिष्ट एक मुआवजा दिया जाता है। इस प्रथा का कोई कानूनी औचित्य नहीं दिखायी पड़ता है। किसानों ने इनका सदैव विरोध किया है लेकिन उन्हें बल-प्रयोग के आगे झुकना पड़ा। लेकिन जब कृत्रिम नील निकली और खेती से उत्पन्न स्थानीय नील की कीमत गिर गई तो जमींदारों ने नील के पटट्ों को रद्द करना चाह। इसलिए उन्होंने अपना नुकसान किसानों के सर थोपने की तरकीब ढूँढ निकाली। नील की खेती कराने का अपना अधिकार छोड़ने के एवज में उन्होंने पट्टेदार किसानों से लगान वसूल किया जो प्रति बीघा रू० 100 तक था।[3]

महात्मा गांधी का चम्पारण में आगमन जिन समकालीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में हुआ था, वह अत्यन्त मार्मिक थीं, जुलाई 1917 में 'चम्पारण एग्रेरियन कामेटी' का गठन किया गया। गांधी इस समिति के सदस्य थे इस समिति के प्रतिवेदन पर चम्पारण में 'तिनकठिया प्रथा' को समाप्त कर दिया गया। किसानों से अवैध रूप से वसूले गए धन का 25 प्रतिशत वापस कर दिया गया। 1919 ई० में 'चम्पारण एग्रेरियन अधिनियम' पारित किया गया इस अधिनियम के पारित होने से चम्पारण के किसानों की स्थिति में सुधार होने लगा।[4] 1917 में कृषकों के निमित्त पहली बार असहयोग की योजना गांधी जी ने कार्यान्वित की और उन्हें सफलता भी मिली। इस घटना से भारतीयों का ध्यान गांधी जी की ओर आकृष्ट होने लगा।[5]

गांधी की पद्धति को अपनाने का अर्थ आज संसार में रूढ़ पद्धति के स्थान पर एक बिलकुल अलग पद्धति अपनाना है। इस बात को भुलाकर चलना कठिन है। यह भी याद रखना चाहिए कि इस पद्धति से कमतर किसी भी पद्धति में आज की समस्याओं को हल करने शक्ति नहीं है। हम इस पद्धति को अपनाते हुए यह भी नहीं कर सकते कि इसमें से जो चाहें ले लें, जो चाहे छोड़ दें। संपूर्ण परिणाम के लिये इसे इसकी समग्रता में ही ग्रहण करना पड़ेगा। अस्तु, गांधी जी के अथक् प्रयास एवं प्रेरणा से चम्पारण में नील उत्पादकों के शोषण एंव उत्पीड़न का दौर समाप्त हुआ।[6]

**सन्दर्भ-सूची**


1. भ्टटाचार्य, प्रभात कुमार, गांधी दर्शन, कॉलेज बुक डिपो जयपुर, 1972-73, पृ.स.-01
2. सक्सेना, रमेश, गांधी एक अध्ययन, विश्व भारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2009, पृ.स. 8-9
3. कालेखकर, काका साहब, बनारसी चर्तुवेदी, गांधी शांति प्रतिष्ठान तथा सस्ता साहित्य मण्डल का संयुक्त प्रकाशन, नई दिल्ली, 1967, पृ.स. 298-299
4. प्रतियोगिता दर्पण, सितम्बर, 2017, पृ.स. 89-90
5. डॉ० जोशी, अरविन्द/गांधी विचारधारा का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव/कुँज बिहारी लाल पचौरी, मथुरा, 1973, पृ.स. 33-34
6. आचार्य, कृपलानी, जे.बी., श्री प्रकाश, गांधी व्यक्ति विचार और प्रभाव, सस्ता साहित्य मण्डल, 1966 पृ.स. 483-484

# कबीर और गाँधी: विचारों की सामाजिक समन्वयता

**डा० सीमा राय***

***शोध सार***

*किसी विचार या दर्शन की प्रासंगिकता इस बात से निर्धारित होती है कि उससे समकालीन समाज की समस्याओं को सुलझाने में कितनी मद्द मिलती है। लोककल्याण तथा आत्मकल्याण दोनो उद्देश्यों की प्राप्ति के बारे में महात्मा कबीर एवं गांधी जी के विचारों में अद्भुत साम्य है। कथनी में करनी में एकरूपता, दलितो, पिछडों का कल्याण, छुआछूत भेदभाव सरीखी सामाजिक बुराईयाँ, सामाजिक सौहार्द एवं श्रम की महत्ता आदि अनेकों विषयों पर दोनों के विचारों में समानता है। मानव-तत्व को सर्वोपरि मानना इस दोनों महापुरुषों की विचार धाराओं में समानता का कारण है।*

जब-जब संसार में अधर्म, अंहिसा की घटना की गति बढ़ी है तब-तब लोकरक्षक स्वरूप धारण कर देवताओं ने मनुष्य का उद्धार करने अवतार रूप में इस धरती पर जन्म लिया। युगपुरुष के रूप में भक्तिकाल में निर्गुण उपासक संत कबीर एवं आधुनिक काल में महात्मा गाँधी जन सामान्य की भावनाओं के सच्चे प्रतिनिधि हुए है।[1] सन् 1936 ई0 में कि हरिजन यात्रा में जब महात्मा गांधी काशी पहुँचे थे तब कबीर मठ में उनसें यह सुनकर कि मेरी माता कबीर पन्थी थी, उपस्थित जनसमुदाय को विस्मय सा हुआ था। परन्तु जो लोग गाँधी एवं कबीर की विचार धारा से परिचित है उनके लिए इसमें विस्मय की कोई बात नही, क्योंकि वे जानते है कि उन दोनो में कितना अधिक साम्य है। गांधित्व की गंगा का गोमुख मूलत: कबीर की शिक्षाओं में है, जिन्हें उन्होंने माता के दुग्ध के साथ पान किया था और जो इसी कारण उनकी नस-नस में व्याप्त है।[2]

गांधी की सबसे बड़ी विशेषता जो उन्हें कबीर के साथ ले जाकर रखती है उनकी आध्यात्मिक प्रेरणा है। जैसे कबीर अजपा जाप के द्वारा साँस-साँस में राम नाम का जप करना विधेय समझते है उसी प्रकार गांधी भी । कबीर कहते है- ''सहस इकीस धसै धागा निश्चत नाके पोवे''-उसी प्रकार गांधी जी कहना है कि-''राम नाम इकतारा तो चौबीसों घण्टे, सोते हुए भी श्वास की तरह स्वाभाविक रीति से चलता रहना चाहिए।''[3] उनके उपदेशों की सरसता स्वयं ही काव्य बन गयी है। वह ईश्वर को अव्यक्त, अनुपम कहते है। निराकार ब्रह्म की अकथनीयता का निरूपण इस प्रकार करते है-

**''तुम जिनी जानौ गीत है, यह निज ब्रह्म विचार। केवल कहि समुझाइया, आतम साधन सार।।''**[4]

कबीर की ही भाँति उनके लिए सत्य ही एकमात्र परमात्मा है। सत्य के प्रकाश में ही वे जगत की बातों को देखना चाहते है। प्रत्येक कार्य के लिए वे उसी की अनुज्ञा चाहते है और इसी के आदेश के अनुसार आचरण करने का प्रयत्न करते रहते है फिर चाहे सारी दुनिया के विरूद्ध जाना पड़े। इसी अभिप्राय से कबीर अपने को 'सत्य नाम का उपासक' और गांधी अपने जीवन को 'सत्य के प्रयोग' कहते है।[5]

इस प्रकार गांधी ने जिस तरह विभिन्न सामाजिक उद्देश्यों, जैसे अस्पृश्यता उन्मूलन और मन्दिरों में परिजनों के प्रवेश के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व किया, वह निश्चय ही आधुनिक भारत में मानवधिकारों के इतिहास में महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यही गुण हमें कबीर में भी देखने को मिलता है वें कवि ही नही, सच्चे समाजसुधारक भी थे।[6]

*प्रवक्ता (अंशकालीन), हिन्दी, एस.एस.डी.पी.सी.(पी.जी.) कॉलेज, रुड़की (हरिद्वार), उत्तराखण्ड

कबीर ने प्राचीन रूढ़ियों में सुधार कर समाज को परिष्कृत रूप प्रदान करने की चेष्टा की। ईश्वर के सर्वव्यापी रूप का गुणगान किया। उनका लक्ष्य जनता की धर्मान्धता, पारस्परिक वैमनस्य, मिथ्याचार तथा प्रदर्शन आदि कुप्रवृत्तियों का परिष्कार एवं परिमार्जन करना था। कबीर का पदानुसरण करते हुए गांधी ने इस स्थिति के निराकरण का प्रयत्न किया है। इसी ने दोनो को पददलित ञ्राूद्रों का बंधु बनाया है। अस्पृश्यता को वे हिन्दू जाति का कलंक मानते है। 'अछूत अछूत नहीं है। उन्हें अछूत मानकर हम स्वयं अछूत बन रहे है।'[7]

लोक कल्याण तथा आत्म कल्याण दोनों की दृष्टि से कबीर और गांधी दोनो ने गरीबों को अपनाया है। दैन्य गरीबी आध्यात्मिक जीवन की एक बहुत बड़ी आवश्यकता है। गोलमेज कॉन्फ्रैंस के दिनों जिस समय गांधी जी वंदन गरीबी पर व्याख्यान दे रहे थे, उस समय ऐसा जान पड़ता था मानों मुँह से कबीर बोल रहे है। यह गरीबी मनुष्य को परावलंबी नही स्वावलंबी और उद्योगी बनाती है। गांधी जी उद्योग की महिमा से घर-घर में शान्ति और सन्तोष का साम्राज्य देखना चाहते है। परिश्रम का उनके मत में आध्यात्मिक महत्व है। उनका कहना है कि दरिद्र भारत में परिश्रम ही परमात्मा है। परमात्मा का आदेश है कि आदमी परिश्रम करके खाये जो बिना काम किये खाता है उनके मन में चोर है। कबीर का भी यही मत है। कबीर स्वयं करघे का कपडा बुना करते थे। महात्मा गांधी का चरखा परिश्रम की आवश्यकता का ही द्योतक है। वह सब उद्योगों का प्रतीक है। स्वदेश-आन्दोलन वस्त्र से आरम्भ हुआ है। इसलिए चरखे का प्रतीक स्वाभाविक ही था। फिर भी क्या वह आश्चर्यजनक संयोग नही कि  गांधी ही के हाथ से राष्ट्रीयपताका का एक ऐसा प्रतीक प्रतिष्ठित हुआ जिसका कबीर के आनुवंशी पेशें से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है।

गांधी ने रचनात्मक कार्यक्रम के माध्यम से एक निर्भीक आत्मनिर्भर तथा मानवतावादी समाज को जन्म देने का प्रयास किया। उन्होंने राष्ट्रीय संग्राम के साथ-साथ इन कार्यक्रमों के जरिए भारत को एक सूत्र में बांधने, सांप्रदायिक सद्भाव का विकास करने और अमीर-गरीब का भेद मिटाने का प्रयास किया। गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम में अट्ठारह कार्य शामिल थे। इनमें प्रमुख थे साम्प्रदायिक एकता, अस्पृश्यता निवारण, शराब बंदी, ग्रामोद्योग का विकास, बुनियादी शिक्षा, नारी उत्थान तथा आर्थिक समानता।[8]

गांधी के जीवन की सबसे बड़ी महात्वाकांक्षा हिन्दु मुस्लिम एकता के लिए प्रभावी नेतृत्व प्रदान करना था किन्तु उन्हे सबसे बड़ी असफलता इसी क्षेत्र में मिली। उनके अनुसार ''धर्म वह है जो मनु य की प्रकृति को बदल दे। जो अंतस् को सत्य से बांध दे और जो हमेशा शुद्धीकरण करता रहे। मनुष्य की प्रकृति में वह स्थायी तत्व महत्वपूर्ण है जो अपनी सम्पूर्ण अभिव्यक्ति कके लिए किसी बात को आदत नही मानता।''[9] यदि कबीर के शब्दों में गांधी के धर्म का सार बतलाना चाहें तो कह सकते है-''साई सेंती साँच रहु, और सूँ सुध भाई।'' अर्थात् परमात्मा में सच्ची लगन और प्राणिमात्र के साथ शुद्ध व्यवहार-यह धर्म का सार है। कबीर भी सब धर्मो में से पाखंड को हटाकर धर्म के इसी शुद्ध स्वरूप को लोगो के सामने रखना चाहते थे।[10]

गांधी और कबीर कथनी और करनी में पूर्ण साम्य के समर्थक है। जो कहते है वही करते भी है। वें वचन और कर्म-सब में सामजस्य बनाये रखते है। कबीर की भांति गांधी भी राम-नाम की महिमा

खूब गाया करते है। उनका भी राम से अभिप्राय दाशरथि राम से न होकर पर ब्रह्म सत्य राम से है जो अज, अनादि और अनाम है। गांधी जी के राम सर्वव्यापी प्रभु है राम जिनको वे पूजते है, उनकी कल्पना का है, न तुलसी-रामायण का न वाल्मीकि का। ईश्वर का अवतार है। मनुष्य को यदि अपने इस तात्विक महत्व का सच्चा अनुभव हो जाये तो वह कितना ऊँचा उठ सकता है, सब राम और कृष्ण हो सकते है। गांधी का यह व्यवहार और प्रयोणानुमोदित संदेश अन्याय और अत्याचार के लिए खुली ललकार है।[11]

किसी भी विचारक या दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता या सार्थकता इस बात से तय होती है कि हमारी समकालीन समस्याओं या संकट को सुलझानें में हमे उससे कितनी मदद मिलती है? कबीर ने हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक सद्भाव की एक युगीन तथा महत्वपूर्ण समस्या को वाणी दी है और इसमें संदेह नही कि जब तक इन दोनों जातियों में सौमनस्य एवं सौहार्द नही हो जाता स्थायी शांति की कल्पना नही की जा सकती है कबीर ने इस समस्या का समाधान धर्म और अध्यात्म मे देखा है और आज के समाजशास्त्री इसका समाधान अर्थ में ढूँढते है। समाजशास्त्रियों के विचार में आर्थिक विभिन्नता भी साम्प्रदायिकता की जननी है।[12]

गांधी की शांति प्रसारक वाणी जगत् के कोने-कोने मे पहुँच चुकी है। सारा जगत आज उन्हें एक स्वर से इस युग का सबसे बड़ा महापुरूष मानता है। मुँह से कहने में चाहे कोई हिचक, परन्तु रंक से लेकर सम्राटों तक हृदय में उनके प्रति अटूट श्रद्धा अंकित है। कबीर का नाम भी झोपडियों से लेकर महलो तक में अत्यन्त आदर के साथ लिया जाता है। इसका कारण यह है कि दोनों भारतीय आध्यात्मिकता के सच्चे प्रतिनिधि है। भारत अग्रजन्माओं का देश है, जो अपने चरित्र से संसार को शिक्षा देते रहे है। भारत का यह अग्रजन्वत्व पांच शताब्दी पहले कबीर के रूप में प्रकट हुआ था और आज गांधी के रूप में प्रकट हुआ है। परमात्मा की जो विभूति मानवता का जो महत्व पन्द्रहवी शताब्दी में कबीर कहलाया, वही आज गांधी है। सिर्फ आवरण का भेद है, तथ्य का नही।[13]

यदि कबीर अपनी ही कविता के समान, सीधी-सादी भाषा में उल्लिखित आदर्श है तो गांधी उसकी और भी सुबोध क्रियात्मक व्याख्या। यदि प्रत्येक व्यक्ति इस विशद व्याख्या की प्रतिलिपि बन सके तो जगत् का कल्याण हो जाए।

**सन्दर्भ सूची**


1. वर्मा, रामलाल, युगपुरूष कबीर, पृ0 सं0-132
2. जुगरान, डा0 आशा, निबन्ध तथा स्फुट गद्य विद्यायें, पृ0 सं0-21
3. हरिजन बंधु में ब्रहमनार्थ शीर्षक निबन्ध, कल्याण भाग 14 पृ0 सं0-14
4. वर्मा, रामचन्द्र, युग पुरूष कबीर, पृ0 सं0-95
5. सिन्हा, मनोज, गांधी अध्ययन, पृ0 सं0-55
6. वर्मा, रामलाल, युग पुरूष कबीर, पृ0 सं0-43
7. जुगरान, डा0 आश4, निबन्ध तथा स्फुट गद्य विद्यायें, पृ0 सं0-224
8. गांधी, एम0 के0, सम्पूण्र वाड्मय, भाग-58, 1947, पृ0 सं0-238
9. गांधी, एम0 के0, सम्पूण्र वाड्मय, भाग-58, 1947, पृ0 सं0-238
10. जुगरान, डा0 आशा, निबन्ध तथा स्फुट गद्य विद्यायें, पृ0 सं0-23
11. वही, पृ0 सं0-120
12. वर्मा, रामलाल, युगपुरूष कबीर, पृ0 सं0-176
13. वर्मा, रामलाल, युगपुरूष कबीर, पृ0 सं0-161

# गांधी जी के विचारों की वर्तमान में प्रांसगिकता

**श्रीमती नेहा शर्मा***

***शोधसार***

*महात्मा गांधी केवल आदर्शवादी और स्वप्नदृष्टा ही नहीं बल्कि दूरदर्शी भी थे। गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, शोषण, जैसी समस्याओं से देश तब भी ग्रसित या और आज भी भारतीय समाज व वैश्विक परिदृश्य इनसे मुक्त नहीं है। तत्कालीन समाज की सामाजिक आर्थिक समस्याओं के संबंध में गांधी जी ने अद्‌भुत संकल्पशक्ति व क्षमता के साथ कार्य किया। पर्यावरण संबंधी उनके विचार तो अपने समय से काफी आगे थे। जिनमें सम्पूर्ण मानवजाति के हित को दृष्टिगत रखते हुए प्रकृति व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की बात की गई। मानवतत्व केन्द्र में रहने के कारण उनके विचार, वर्तमान विश्व में अपनी प्रासंगिकता बनाये हुए है।*

हम इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश कर गये है। वर्तमान समय मुक्त व्यापार व खुली अर्थव्यवस्था का हैं लेकिन इन आधुनिक आर्थिक विचारों को बल 18 शताब्दी में पश्चिम में हुई औद्योगिक क्रान्ति से मिला। गांधी जी, देश के विकास को बल देने के लिए भरसक प्रयत्न किये। उनका विश्वास था कि समाज का विकास और जनकल्याण तभी संभव है जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति देश को अपना परिवार स्वीकार करे। गांधी जी का स्वप्न था कि स्वतंत्र भारत में ग्रामवासियों का जीवन स्तर सुधरेगा। पुरूष व महिलायें समान अधिकार पायेंगे। भारत को आजाद हुए 60 वर्ष से अधिक हो चुके है लेकिन अभी तक बेरोजगारी गरीबी और असतुंलित विकास से समाज अस्तव्यस्त हो रहा है। आम जनता के जीवन स्तर को सुधारने से पहले भारत के परंपरागत क्षेत्रों में श्रमिकों की स्थिति को सुधारकर बेरोजगारी को कम किया जा सकता है। उससे गरीबी स्वयं ही दूर हो जायेगी व असंतुलित विकास की समस्या भी दूर हो जायेगी। गांधी जी केवल आदर्शवादी व स्वप्नदृष्टा ही नही थे बल्कि वे दूरदर्शी भी थे। उन्होने भारतीय जनजीवन को केवल देखा ही नही बल्कि उसको परखा भी था। ब्रिटिश काल में शोषण व पराधीनता के दंश ने भारतीय अर्थव्यवस्था को अवनति की और अग्रसर किया। इसे देखकर उनका अन्तः मन कराह उठता था। गांधी जी के अन्दर देश की सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक अवनति को दूर करने के लिए अपार मनोबल था। इसी लिये उनके मुँह से निकला प्रत्येक शब्द जनचेतना जाग्रत करता था। उनका व्यक्तित्व चुंबकीय प्रभाव से युक्त था। उनके विचार, उनका चिंतन और मनन उनके अनुभव और सर्वाधिक महत्वपूर्ण उनकी दूरदर्शिता समष्टि हित की भावनाओं के दर्पण थे। गांधी जी की दूरदर्शिता उनके विचारों में निहित है। उनके विचार भूतकाल में ही नही वर्तमान में भी सत्यता की कसौटी पर खरे उतरते है। गाँधी जी की विचार श्रृंखला से कुछ प्रमुख विचार निम्नवत् हैं –

**प्रजातंत्रः**– गांधी जी जितने अच्छे विचारक थे उतने ही अच्छे राजनीतिज्ञ भी थे। गांधीजी, राज्य का आधार अहिंसा मानते थे। गांधी जी प्रजातंत्र के पक्षधर थे। गांधी जी का परिकल्पित समाज राजकीय नियमों से नही बल्कि आत्म अनुशासन से संचालित होता था। आज भी भारतीय शासन प्रणाली प्रजातांत्रिक ही है जो गांधी जी के विचारों से मेल खाती है।

**विकेन्द्रीकरण :**– गांधी जी केन्द्रीकरण के विरोधी थे क्योंकि इसमें सारी शक्ति समाज के कुछ लोगो के हाथों में केन्द्रित हो जाती है जो समाज में आर्थिक असमानता व एकाधिकारी प्रवृत्ति को बढावा देती है और शक्ति का दुरूपयोग होता है। केन्द्रीयकरण से व्यक्तिगत उद्यम समाप्त हो जाता है। गांधी जी

*प्रवक्ता (अंशकालीन), अर्थशास्त्र, एस.एस.डी.पी.सी.(पी.जी.) कॉलेज, रुड़की (हरिद्वार), उत्तराखण्ड

विकेन्द्रित समाज की स्थापना के लिए स्वायत्तापूर्ण ग्राम समुदाय को आवश्यक मानते है। गांधी जी का विकेन्द्रीकरण का विचार वर्तमान समय में भी सत्य है। देश के विकास के लिये केन्द्रीकरण के बजाय विकेन्द्रीकरण की नीति को अपनाया जाता है। पिछड़े क्षेत्रों के विकास के लिये अनेक सहायता अथवा अनुदान पैकेज प्रदान किये जाते है।

**स्वदेशी :** गाँधी जी का स्वदेशी का विचार व्यक्ति को धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक धरातल पर बांधता है। गांधी जी ज्यादा से ज्यादा उन वस्तुओं का उपयोग करवाना चाहते थे जो अपने देश में निर्मित होती है। वास्तव में गांधी जी का स्वदेशी सिद्वान्त अपने देश के गृह उद्योगों की रक्षा के लिये था। लेकिन इसका कदापि यह अर्थ नही है कि गांधी जी विदेशी वस्तुओं के विरूद्ध थे। वे वस्तुयें जिनका उत्पादन अपने देश में जटिल व अत्याधिक खर्चीला है और जिसमें समय भी अत्यधिक लगता है ऐसी विदेशी वस्तु को स्वीकार करने के विरुद्ध नहीं थे। वे अपने देश में उपलब्ध सीमित साधनों के सर्वोत्तम उपयोग पर बल देते है।

**औद्योगीकरण संबंधी विचार :-** गांधीजी भारी उद्योग व यन्त्रीकरण के विरोधी थे। क्योंकि जितना यन्त्रीकरण होगा मानव श्रम का मूल्य उतना ही गिरता जायेगा। दूसरी और भारी उद्योगो से पूंजी का केन्द्रीकरण बढ़ जाता है। जिससे बड़े शहर बसते जाते है और जनसंख्या का पलायन गांव से शहर की ओर होता जाता है। गांधी जी अपनी औद्योगीकरण की नीति में कुटीर उद्योगो व विकेन्द्रीकरण के पक्षधर थे। यह विचार वर्तमान में भी प्रासंगिक है। क्योंकि भारत जैसे जनसंख्या बहुल व कृषि प्रधानता वाले देश में श्रम प्रधान तकनीक ही उत्पादन के लिये उपयुक्त है।

**नारी विषयक दृष्टिकोण :-** गांधीजी ने महिलाओं के विषय में एक विशेष नजरिये की शुरूआत की। वे पारिवारिक सम्पत्ति में बेटा व बेटी को समान हक देने के पक्षधर थे। लेकिन उनके अनुसार लैंगिक समानता से तात्पर्य व्यवसाय समानता नही है बल्कि वह पुरूष और महिलाओं के बीच कार्यो के विभाजन करते है। गांधी जी के स्त्री के सम्बन्ध में विचार वर्तमान में भी सत्य है। वर्तमान में भी स्त्रियों को पुरूषों के बराबर सम्पत्ति का अधिकार दिया गया है।

**पर्यावरण :** पर्यावरण संबंधी जागरूकता कोई नया विषय नही है। कौटिल्य जैसे विचारक ने चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में ही कहा था कि किसी साम्राज्य का स्थायित्व उसके पर्यावरण पर निर्भर करता है। गांधी जी का ग्राम्यकरण का विचार पर्यावरण के प्रति उनकी चिंता को व्यक्त करता है। गांधी जी के विचार केवल भारत के लिए ही नही बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए प्रासंगिक है। क्योंकि वह प्रकृति व मानव के बीच सामजंस्य बिठाना चाहते है। गांधी जी का पर्यावरण का विचार उनके समय से बहुत आगे था। गांधी जी वृक्षारोपण के समर्थक रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के विरोधी, शहरीकरण पर नियंत्रण पेट्रोलियम पदार्थो के प्रयोग पर रोक आदि के पक्षधर थे। गांधीजी का तर्क था कि लोगों को यह अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि पृथ्वी पर उपलब्ध संसाधनों पर मानव सहित सभी जीवों का अधिकार है और ये साधन केवल उसी पीढ़ियों के लिए नही बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिये भी संरक्षित रहने चाहिए।

**वितरण :-** गांधी जी का मानना था कि समाज में सामाजिक उत्पादन और राष्ट्रीय लाभांश में से सबसे पहला हिस्सा सबसे ज्यादा जरूरतमंद का होना चाहिए अत: जनसंख्या की आवश्यकताओं को देखने

हुए गांधी जी राष्ट्रीय लाभाशं के साथ-साथ उत्पादन और उत्पादित वस्तुओं का न्यायोचित वितरण करने के पक्षधर थे।

**धन:**- गांधीजी के अनुसार धन मनुष्यों के लिए है मनुष्य धन के लिए नही है उनका मानना है कि आर्थिक व्यवस्था का मुख्य लक्ष्य जनकल्याण है सुखी और संतुष्ट जन देश के सच्चे विकास द्योतक है अत्यधिक भौतिकवादी दृष्टिकोण जीवन में जटिलतायें, असंतोष, अनेक बुराईयों व शोषण का कारण बनता है अत: गांधी जी सरल व सादगी पूर्ण जीवन जीने पर बल देते थे।

**ऊर्जा:**- ऊर्जा की कमी वर्तमान में एक समस्या बनी हुई है। गांधी जी ने ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों एवम् इनके प्रयोग पर बल दिया। यद्यपि उस समय इस ओर इतना ध्यान नही दिया गया। लेकिन वर्तमान में गांधी जी का ऊर्जा संरक्षण का विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

**खादी:**- गांधी जी का खादी का विचार श्रम बहुल तकनीक द्वारा अधिकाधिक रोजगार उत्पन्न करने के विचार पर आधारित है। खादी का उत्पादन प्रत्येक गांव में सामान्य जनता द्वारा किया जाता है। जिससे श्रमिकों को रोजगार मिलता है। छोटे-छोटे उद्योगों में उत्पादन होने पर श्रमिकों का शोषण भी नही होता गांव में उपलब्ध संसाधनों का ही प्रयोग होता है। खादी लोगों में स्वदेशी भावना जाग्रत करती है।

**निष्कर्ष:**- गांधी जी के ऊपर वर्णित विचारों के अध्ययन से स्पष्ट है कि गांधी जी का भारत के लिये जो नजरिया था वह उनके दूरदर्शी दृष्टिकोण को दर्शाता है। जिन समस्याओं का जिक्र गांधी जी 60 वर्ष पूर्व कर गये उनकी वर्तमान में विद्यमानता गांधी जी की दूरदर्शिता के साथ-साथ उनके विचारों की वर्तमान में प्रांसगिकता को दर्शाती है। अत: हमें आत्मनिरीक्षण कर गांधी जी के विचारों को गंभीरता से समझने की आवश्यकता है। व्यापक स्तर पर उद्योग धंधे लगाये जाने चाहिये और इसमें लघु उद्योगों पर जोर देना चाहिए। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था उन्नत होगी और उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग होगा। वर्तमान विश्व की बढ़ती मानवीय आवश्यकताओं, गरीबी, आर्थिक विषमता व पर्यावरण प्रदूषण व आतंकवाद जैसी अनेक समस्याओं का हल गाँधी दर्शन में निहित है।

**संदर्भ स्रोत**-


- Kripalan, J.B., Gandhi : His Life and Thoughts, : Ministry of Information and Broadcasting, Government of Inida
- 'गांधी साहित्य पंद्रह अगस्त के बाद' 1963, सस्ता साहित्य मंडल- प्रकाशन
- गुप्त, देवेन्द्र कुमार, 'आज के सवाल गांधी के जवाब', सस्ता साहित्य मंडल- प्रकाशन
- हिंद स्वराज (महात्मा गांधी का जीवन दर्शन) अनुवादक कालिका प्रसाद, सस्ता साहित्य मंडल- प्रकाशन
- सिन्हा, मनोज, 'गांधी अध्ययन', ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड
- सक्सेना, रमेश, 'गांधी एक अध्ययन' विश्वभारती पब्लिकेशन्स, 2009

# Gandhiji's Humanism in the Present World

**Dr. Anupma Garg***
**Dr. Preeti Agrawal****

***Abstracts***

*Defence has been synonymous with destruction, democracy serves as the spring board of dictatarshiip and develpment has been our threatening to the entire ecological balance. Nuclearism at the global level and terrorism at the local and national level have created a culture of violence. In such a "darkling plain.....where ignorant armies clash by night," Gandhiji's teachings alone can be the "carolings of the ecstatic sound" to avert the nuclear winter and ugly faces of thoughtless violence, religious fundamentalism and exploitation.*

The name of Mahatma Gandhi is a permanent presence in our day-to day life. From the kingdom of truth and non violence to the territory of swaraj; from the field of religion to the domain of frugality and simplicity; from the world of politics to the ecosphere of wellness; we have been following the foot steps of Mahatma, without realising. He can be found in every text of history, annonates, political and social debate based on the modern issues. Even he can be seen smiling at student in hallways or breathing in the freedom songs we sing. Moreover we touch him everytime we use a currency note. Although Gandhi stands nowhere in the modern civilisation, yet he has emerged as the greatest messiah of the modern world.

Gandhi was a man who was born to the parents of India, studied in England, flowered in South Africa. His return in India in 1915 was already a global citizen in Indian dress. At that time he was a man who actively engaged with individuals of all colours, creed and class across the world. His intellect was hungry for Truth; heart hungry for Love; soul hungry for Liberation. He picks up Truth from every jewel, the human civilisation has offered-from every creed and religion, from every region and period, from every visionary a prophet, a poet, a scientist, a saint, a sufi, a revolutionary. The legacy of such a 'Yugpurush' that is left by him will live in the annals of history for ever till the end of human civilisation.

## Gandhi's Humanism -

Gandhiji has a strong base in Indian philosophy and Indian philosaphy considers personal purification. Gandhiji stretched this element to social level and introduced simple life doing one's work oneself and fasting as social and political virtues. Gandhi was a saint as well as social revolutionary. Therefore, he did not try to escape from politics nor politics could ever contaminate him. He did not find any dichotomy between the spiritual and social life. To him, life is a unity. It cannot be "divided into watertight compartments called social, political and religious. The spiritual law does not work in a field of its own.

"On the contrary, it expresses itself only through the ordinary activities of life." Human life being an undivided whole, no line could ever be drawn between different

*Associate Professor, English, S.S.D.P.C. Girls (P.G.) College, Roorkee, Haridwar (U.K.)
**Lecturer in English, R.B. Public School, Agra (U.P.)

comparments nor between ethics and politics. He plainly told a group of missionaries in 1938, "I would not be leading a religious life, unless I identified myself with the whole of mankind and I could nor unless I took part in Politics.....I don't know of any religion apart from activity."

Gandhi maintained that truth is God. If truth exists, God also exists. Gandhi's truth included a number of individual and social values. This truth will lead to right kind of social and ethical transformation. It was through 'Ahimsa' that Gandhi established link between his social activism and suffering. The Idea of 'Sewa' or self is derived from the idea of 'Atman' or soul. He stretched this idea to Swaraj (Self rule) and came to his notion of freedom. He wanted such a social system where individual will have freedom to make his decisions. He worked for such an economic order where production and distrubution functions of the society would be decentralised. An individual is not a fragmented personality and should not be viewed only as a worker or a labourer. He believed that men are born equal but they are also different. So there should be a harmonious relations between them. Greed for power to dominate others results in destroying 'Swaraj' for many. He believes that if we give up this greed, dignity, courage, love, decency and kindness peace will prevail in the world. To him the service of Man is the best worship of God He Says, "If you want to find God serve Man" Emphasising this point, He says, " If I could persuade myself that I should find him in a Himalayan cave I would proceed there immediately. But I know that I cannot find him apart form Humanity." His famous dicturn is, " Adam Khuda Nahi lekin khuda ke Noor Se Adam Juda Nahin" i.e. Man is not God, but neither he is different from the light of God.

**The Context in 21st Century**

The rising defferentiation between classes and nations has started creating deeprooted problems and stresses and strains in social sturcture. For this, Gandhian belief in absolute oneness of God and therefore also of humaity can be applied as a Legacy. He says, man simply changes his clothing when he changed his religion.

If the world believes in his philosophy that every man is the incarnation of God, We could easily be far away from terrorism. With the rise in terrorism and civil society groups, more and more govenments world over are becoming autocrats in the name of law and order.

The local self government institutions are becoming weaker. Consequatly individual is devoid of Swaraj (freedom) and certain hegemony groups are promoted. This issue of terrorism can be solved through ethical humanist way. Terrosism is ideologically and politically organised violence. This cannot be solved by weapons or nuclear power. Inclusion of extremists; groups stakeholders; anlaysis satyagrahas, arbirtration, mediation and moral appeal only would work. We have to address all the issues of social injustice if we want a not violent social order. We will also have to support all non-violent movements seeking social justice. Man and world has to learn how to live in harmony with other people and nature through Gandhiji's Himanism.

**References**

1. Mishra Premanand (2014) Gandhian Humanism in Twenty First century Sardar Sheher, IASE University.
2. Gandhi M.K. (2011) An Autobiography or The Story of My experiments with Truth Ahemedabad, Navjivan.
3. Ganguly B.N. (2006) Social philosophy of Gandhi, New Delhi National Gandhi Museum.
4. Singh Ramjee Gandhi and the Modern world, 1988, Classical Publishing company, New Delhi.
5. Kriplani J.B., Gandhi His Life and Thought, 2055, Publications Division, Ministry of Information and Broad casting, Govt. of India.
6. Dass B.C and Mishra G.P., Gandhi in To-Day's India, 1979, Ashish Publishing House, New Delhi.

# A Comparative Study on Marketing Strategies of Public Sector and Private Sector Banks

**Dr. Kulwant Singh Pathania*** **Mr. Mohit Prakash****

**Abstract**

*Marketing strategy is very significant area that particularly needs to be carefully examined by the policy makers of banks. This stems from the need to improve the performance and ensure sustainable growth of banks as competition in the banking industry increases. A sound marketing strategy becomes imperative for banks. It not only operate in an environment where service quality and financial returns are perceived as the essential criteria from customers' viewpoint, but they must also compete with conventional banks which are known to have better experience and expertise in the banking business. Nowadays banks have a very strong belief that effective marketing strategies applied in the bank reducing the cost of services provided to customer and raise the quality of banking services provided, and to influence the response to the client alone can assure the future of banking business. The paper examined the marketing strategies adopted by both Public Sector and Private Sector Banks in H.P. In this competitive era, it is imperative that banks maintain a strong clientele. Thus the orientation of banks should be with a much wider focus in relation to consumer and market needs, and the consequent marketing strategies.*

***Key Words: Marketing Strategies, Banking sector, Marketing, Marketing Practices.***

## Introduction

Financial institutions act as a channel through which the financial surplus of saving group in society are collected and then redistributed to groups in a society, which have a financial deficit. Within the financial services sector, the banks constitute an important segment of financial intermediaries as is evident from the fact that the aggregate deposits of banking sector as a whole constitute approximately 80 per cent of the total money supply in Indian economy.

The strong economic system is the basic necessity for every nation. The progress of the nation is entirely dependent on the resources that constitute the economy like business, Industries, power generation, transportations, communications rural developments, tourism, horticulture, agriculture and its allied activities. All these big elements of the economy are interrelated and interdependent to each other. But banking sector is the foundation pillar for all these essential components that constitute the nation's economy. A sound and effective banking system is an essential need of a healthy economy.

At the beginning of the 21st century, banks across the world have become complex financial organizations that offered a wide variety of services to international markets. Supported by technology, banks are working to identify new business places, to develop customized services, to implement innovative strategies and to capture new market opportunities. For the banks, technology has emerged as a strategic resource for achieving higher efficiency, control of operations, productivity and profitability. This has instigated

*Director ICDEOL & Professor Faculty of Commerce and Management, HPU Shimla
**(Assistant Professor in Department of Commerce,G.D.C. Rampur Bsr.)

the banks to take-up technology to meet the increasing customer satisfaction and to face stiff competition. Therefore, Indian banks now have to develop modern banking services with world class service standard for satisfying their customers. Banks have witnessed an amazing change in the Indian banking sector as a part of the financial sector reforms. Today, growing competition in the banking sector has moved towards customers' centric banking. The competition has forced into a new marketing policy in the banking sector. One of the major determinants of banking services is the customer satisfaction, which can be enhanced by using modern banking services.

Concept "Bank Marketing" is the combination of two different words, Bank and Marketing. In a true sense, it is application of marketing principles in the banking services or conceptualization of marketing in the decision-making process of banking organization.

The marketing approach involves anticipating, identifying, reciprocating (through designing and delivering customer-oriented services), and satisfying the customer's needs and wants effectively, efficiently and profitably. Banking is a personalized service-oriented industry and hence should provide services, which satisfy its customer's needs. These customers come from different strata of economy. Naturally, the need of each group of customers is different from that of the others. It is therefore, necessary to identify different groups of customers, find out their needs, design the schemes to suit their needs and deliver these schemes in the best possible manner.

The new marketing concept revolves around consumer satisfaction. Every business wants to grow consistently. It wants to attain a growth, which knows no end. The consumer satisfaction is the basis of all business actions with a view to earn more profits which continue to grow.

According to the new concept about marketing the theory of banking says that the banks exist or the customers; the most important person is the customer; that the customer is the purpose of business and is the most welcome and valued person on its premises.

'The customer is the king' Today each and every bank chants 'the customer is king' mantra. It was quite a different story not so long ago. New marketing concept applied to a bank means that the bank should continue to create new services for the use of customers and deliver the existing services to consume most effectively.

Bank marketing must be customer-oriented. Owners, whose return is to measure primarily by profits that the banks earn, supply the banks with equity capital. This is not to say that banks should ignore serious community problems because they are not profitable to the banks.

**Objectives of Study**

1) To analyse the comparative marketing practices adopted by Public and Private Sector Banks

2) To evaluate the customer satisfaction level of customers regarding the available marketing practices of Banks
3) To identify the problems experienced at different levels and recommend suggestions to strengthen the marketing practices and strategies in Banking Sector.

## Hypothesis

Within the framework of the above objectives, the thesis seeks to test the following important hypothesis:

1) That the marketing practices followed by public sector banks and private sector banks are same.
2) That there is no difference in the level of customer satisfaction in both two sectors of banks.

## Research Methodology

Research methodology helps us to systematically solve the research problem. Every kind of research study indicates with defining the research problem. Formulation of the problem is the first and vital step in research. To achieve the first objective, i.e. to hold a comparative examination of the current marketing strategy deployed by Public and Private Sector Banks. We will conduct a survey of 100 top marketing executives from the already selected banks.

To attain the second objective, i.e., to evaluate the perception of customers regarding the available marketing practices of Banks a field survey of customers of both sector banks will be conducted. A sample of 600 customers will be taken on simple random sampling.

To fulfill the third objective, i.e. to identify the problems experienced at different levels and recommend suggestions to strengthen the marketing practices and strategies in Banking Sector.

## Research Design

Research design is the plan structure and strategy of investigation conceived so as to obtain answers to research questions. It is an arrangement of the essential conditions for collection and analysis of data in a form that aims to combine relevance to research purpose with economy in procedure. Research design attempts to systematically solve research problems. It is used for conducting research and compiling data. It provides an empirical and logical basis for drawing conclusion. To accomplish the objectives of study both primary and secondary data will be needed.

## Data Interpretation and Analysis

**Table 1 : Profile of the Bank Officials (N =100)**

| Variables | | Public Sector Bank | | Private Sector Bank | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | Frequency | Percent | Frequency | Percent |
| Gender | Male | 23 | 46 | 30 | 60 |
| | Female | 27 | 54 | 20 | 40 |
| Age | Below 30 years | 4 | 8 | 4 | 8 |
| | 30-40 years | 12 | 24 | 13 | 26 |
| | 40 -50 years | 22 | 44 | 27 | 54 |
| | Above 50 years | 12 | 24 | 6 | 12 |
| Designation | DGM | 3 | 6 | 3 | 6 |
| | AGM | 5 | 10 | 7 | 14 |
| | Chief Manager | 8 | 16 | 8 | 16 |
| | Senior Manager | 15 | 30 | 15 | 30 |
| | Branch Manager | 14 | 28 | 13 | 26 |
| | Assistant Manager | 5 | 10 | 4 | 8 |

The gender of the respondents is one of the most important profiles of the customers. Since the gender may play an important role in the performance of the customers. This profile considers towards the current marketing practices deployed by public and private sector banks.

**Table 2 : Marketing Strategies adopted by the public and private sector banks**

| Marketing Strategies adopted by the bank | Public Sector Bank | | Private Sector Bank | |
|---|---|---|---|---|
| | Number of respondents | Ranking | Number of respondents | Ranking |
| **Product** | 31 | 4 | 39 | 2 |
| **Price** | 35 | 3 | 42 | 1 |
| **Place** | 39 | 2 | 25 | 4 |
| **Promotion** | 43 | 1 | 37 | 3 |

***Source:*** *Various Questionnaires from Respondents*

From the above study it is clear that most of the bankers in public sector bankers i.e., 43 are in the opinion that promotion (1st in ranking) regarding strategies are most influencing strategy in comparison of other marketing strategies. 39 bank executives have the view that they are adopting place as the marketing strategy tool (2nd in ranking). 35 bank executives felt that they are focusing in price as the marketing strategy (3rd in ranking). 32 bank executives opined that they are adopting product as the marketing strategy (4th in ranking).

In case of private sector banks, 42 bank executives opined that they are adopting marketing strategies related to price (1st in ranking), 39 bank executives viewed that

they are adopting product related marketing strategy (2nd in ranking). 37 bank executives opined that their marketing strategies are related to promotion (3rd in ranking). 25 bank executives viewed that they are adopting marketing strategy related to place (4th in ranking).

**Table 3 : A Comparison of Knowledge regarding the Banking Product/ Services of Public Sector Banks and Private Sector Banks**

| Statement | Public Sector Bank | | | | Private Sector Bank | | | | *t* value |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | $\bar{X}$ | σ | Ske. | Kurtosis | $\bar{X}$ | σ | Ske. | Kurtosis | |
| **ATMs** | 4.9267 | .35831 | -7.132 | 63.668 | 4.8333 | .46864 | -2.871 | 7.462 | -5.205 |
| **Electronic Fund Transfer** | 4.1700 | .70433 | -.946 | 2.374 | 4.2433 | .62081 | -.217 | -.594 | -4.468 |
| **Electronic Bill Payment** | 4.1500 | .70414 | -.914 | 2.295 | 4.2000 | .62286 | -.167 | -.553 | -5.251 |
| **E-Cheque** | 2.7467 | 1.18625 | .840 | -.668 | 4.0800 | .77174 | -1.369 | 3.597 | -4.014 |
| **Internet Banking** | 4.0967 | .73197 | -.719 | .754 | 4.2400 | .61942 | -.209 | -.585 | -4.468 |
| **e-Investment** | 2.5100 | 1.09265 | 1.174 | .382 | 3.9400 | .92697 | -.996 | .870 | -3.234 |

***Source:*** *Various Questionnaires from Respondents*

The Table 3 reveals that 94.33 percent of the respondents very frequently use the ATM. Further, the application of chi-square test reveals a significant difference in the opinion of the customers regarding the usage of ATM, as the calculated value is greater than the table value 13.28 at 1 percent level of significance. The Table 3 reveals the rating scale given to respondents regarding the Electronic Fund Transfer. It is observed that the mean value of the views with regard to this is 4.17. It is higher than the mean standard score 3 in five point scale. The variation in mean score is 0.70433. This shows that the frequency of the respondents regarding the ATM usage is ranging between high to very high.

Further, while analyzing the views of the respondents regarding the use of Internet banking, it is noted that the respondents do use Internet banking. The mean value support the above opinion. It is higher than the mean standard score which shows that the opinion of the respondents is ranged from very high to high. The standard deviation and skewness of response supports the above analysis. It reveals that there is a significant difference between the opinions of the respondents regarding the use of Internet banking.

The mean score of the responses relating to electronic bill payment is 4.1500 which is higher than the average standard score 3 on the five-point scale. The standard deviation is .70414 and skewness is -.914 which shows that opinion ranges between very high to high.

The table 3 exhibits the mean score of responses relating to e-cheque is 2.7467 which is slightly lower than the average standard score. The variation in opinion is recorded at 1.18625. Further while analyzing the views regarding of customers to the e-investment

it is noted that most of the respondent are not acquaint to do e-investment. The mean value 2.4633 supports the analysis. The standard deviation is 1.09265 and skewness is 1.174.

**Table 4 : Customers Opinion, Perceiving the Internet Banking in Public Sector Bank and private sector banks**

| Statement | Public Sector Bank | | | | Private Sector Bank | | | | *t* value |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | $\overline{X}$ | σ | Ske. | Kurtosis | $\overline{X}$ | σ | Ske. | Kurtosis | |
| Internet Banking enables to conduct financial transaction more quickly | 4.8417 | .39866 | -2.464 | 5.574 | 4.8263 | .38970 | -1.928 | 2.359 | .118 |
| Internet Banking improves one's effectiveness in conducting banking transaction | 3.8577 | 1.09076 | -.517 | -1.043 | 4.2132 | .86720 | -.897 | .027 | -.244 |
| Internet Banking provides convenience since it is available 24 hours, 7 days of the week | 4.7101 | .48172 | -1.270 | .408 | 4.6822 | .47480 | -.897 | -.909 | -1.000 |
| Internet Banking is time saving as compared to traditional banking | 4.3908 | .88746 | -1.473 | 1.515 | 4.4651 | .80896 | -1.620 | 2.362 | -.387 |
| Internet Banking is easy to use | 3.8250 | .97382 | -.465 | -.744 | 3.9922 | .89091 | -.684 | -.177 | .118 |

***Source:*** *Various Questionnaires from Respondents*

It is evident from the table 4 that the mean value, i.e. 4.8263 of the customers' opinion regarding internet banking enables to conduct financial transaction more quickly is higher than the mean standard score. The standard deviation, i.e., .38970 the skewness and the kurtosis are -1.928 and 5.574 respectively. It depicts that the majority of the opinion is divided between agree and strongly agree responses.

It is observed that the majority of the customers are of the opinion that internet banking improves one's effectiveness in conducting banking transaction. The mean value, i.e. 4.2132 of the responses supports the above view.

It is observed that the respondents agree with this opinion that Internet Banking is time saving as compared to traditional banking. The mean score 4.4651 which shows that the opinion of the respondents is ranged from strongly agree to agree. The standard deviation .47480 and skewness -.897 of response supports the above analysis.

It is quite evident from table the 6.20 that the mean value of the responses relating to internet banking is easy to use is 3.9922.The standard deviation .89091, and skewness -.684, which shows that variation is towards higher side of the mean standard score. The mean value, standard deviation and kurtosis support our findings.

As it is evident from the table that the employees of both public sector and private sector bank firmly believe that the training imparted to them increased the overall productivity of the bank, improved efficiency of the bank, employees are more comfortable, Improved House Keeping and Improvement in customer service or satisfaction. Much disparity could not be found in the comparative mean score of public sector and private sector bank.

The comparative study, however, reveal that the comparative mean score in three point scale of responses of public sector and private sector banks are 1.500 and 1.1600, 1.5800 and 1.5600 respectively. While mean score are more of private sector banks with the mean responses of 1.5600 and 1.5200, 1.6400 and 1.6000 respectively.

On the whole, it can be said that the responses are more inclined towards the favorable side of the average mean.

**Table 5 : Factors being considered while formulating promotional strategies**

| Statement | Public Sector Bank | | Private Sector Bank | |
|---|---|---|---|---|
| | No of Respondents | Ranking | No of Respondents | Ranking |
| Becoming a market leader by introducing new innovative products | 40 | 2 | 47 | 2 |
| Just follow other banks | 12 | 5 | 6 | 5 |
| Do some modifications in your existing schemes as per market needs | 42 | 1 | 44 | 1 |
| Remove the existing schemes which are rendered inefficient or costly to the bank | 22 | 4 | 20 | 4 |
| Feedback received from your branches on different aspects | 37 | 3 | 43 | 3 |

***Source:*** *Various Questionnaires from Respondents*

The analysis of bankers on the basis of factors being considered while formulating promotional strategies depicts that out of total respondents in the public sector bank 42 bankers considered that some modifications in the existing schemes as per market needs(1st in ranking), 40 bank executives have considered that becoming a market leader by introducing new innovative products (2nd in ranking), 37 respondents have considered that feedback received from your branches on different aspects( 3rd in ranking) Remove the existing schemes which are rendered inefficient or costly to the bank (4th in ranking), 12 bankers have considered just follow other banks while formulating own banks promotional strategy (5th in ranking).

In case of private sector banks on the basis of above analysis 47 respondents have considered that becoming a market leader by introducing new innovative products is the main factor in their promotional strategies (1st in ranking), 44 bankers have considered that some modifications in existing schemes as per market needs (2nd in ranking), 43 bankers have considered that they will formulate the strategies on the basis of feedback received from different branches on different aspects (3rd in ranking), 20 bankers have considered the to remove the existing schemes which are rendered inefficient or costly to the bank (4th in ranking), 6 bankers have felt that just follow other banks (5th in ranking)

**Rating Given by Respondents regarding their satisfaction level to overall services of the bank**.

Table 6 clearly shows that as per respondents' opinion regarding Internet banking in banking industry rating given by very satisfied, satisfied, somewhat satisfied and not at all satisfied with 1 percent, 15.3 percent, 75 percent and 8.7 percent respectively. In short, it can be concluded that customers of public sector banks were not happy with the overall services. The mean score and standard deviation also support our findings. The calculated values of Chi-square test of goodness of fit are more than the table value at 1 percent level of significance for different attributes and the null hypothesis is rejected. It reveals that the opinions of the respondents also support our result.

**Table 6 : Rating Given by Respondents regarding the overall service of the Public sector banks**

| Rating Scale | | Frequency | % of Respondent | Mean Score/Chi Square Value |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Very satisfied | 3 | 3.0 | Mean = 2.9133 |
| 2 | Satisfied | 6 | 6.0 | S.D. =.52288 |
| 3 | Somewhat Satisfied | 75 | 75.0 | Chi Square Value = 412.347 |
| 4 | Not at all satisfied | 16 | 16.0 | |
| **Total** | | 100 | 100.0 | |

***Source:*** *Various Questionnaires from Respondents*

Table 6 clearly shows that as per respondents' opinion regarding Internet banking in banking industry rating given by very satisfied, somewhat satisfied and not at all satisfied with 8.3 percent, 60.7 percent and 29.0 percent and 2.00 percent respectively. In short, it can be concluded that customers of private sector banks were happy with the overall services. The mean score and standard deviation also support our findings. The calculated values of Chi-square test of goodness of fit are more than the table value at 1 percent level of significance for different attributes and the null hypothesis is rejected. It reveals that the opinions of the respondents also support our result.

**Table 7 : Rating Given by Respondents regarding the overall service of the Private sector banks**

| Rating Scale | | Frequency | % of Respondent | Mean Score/Chi Square Value |
|---|---|---|---|---|
| 1 | Very satisfied | 25 | 8.3 | Mean = 2.2467 |
| 2 | Satisfied | 182 | 60.7 | S.D. =.62754 |
| 3 | Somewhat Satisfied | 87 | 29.0 | Chi Square Value |
| 4 | Not at all satisfied | 6 | 2.0 | =251.387 |
| Total | | 300 | 100.0 | |

***Source:*** *Various Questionnaires from Respondents*

**Rating scale of overall services of banks**

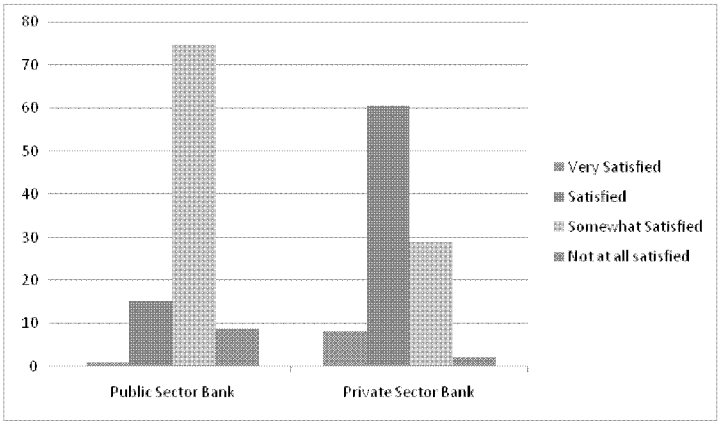


## Conclusion

The globalization of financial markets has gained additional momentum as a result of liberalization programme and adoption of new technologies. The period of last five decades has witnessed many economic developments in India. Financial sector reform specially banking reforms made a departure from regulated banking to market oriented banking. One of the important objectives of reform in financial market was to improve efficiency of banking system. An attempt has been made to suggest the banks to explore new marketing strategies for enhancement of customer satisfaction and performance of banks under the competitive conditions.

Innovative product or services is one of the powerful means of performing banking operations from office desks or home by customer. Due to increased usage of innovative product or services of private sector banks could increase their clientele. To increase its usage, awareness among public sector bank customer has to be increased and such services have to be customised, so that the customers of public sector banks avail the benefit of these products or services.

Internet banking is one of the powerful means of performing banking operations from office or home by customer. The important thing about the internet banking is that it not only improves efficiency and increases client's satisfaction, but also adds to the bank profitability by cutting down the operational costs. As far as the usage of internet banking by public sector bank customers are concerned they are more reluctant for the usage of it.

Banks of both sectors accepted the significant need of training claimed that training was being imparted to their employees. Both sector banks have claimed that this area needs to be strengthened with specialization in customer care. As the employees working at the counters of the banks determine the magnitude of success of the public relation activities

The cost of retaining an existing customer is just one tenth of the cost of making new customers. Hence all the bankers strongly hold the opinion the need to retain the existing customers. Regular feedback from customer about the services, personal visit and personal relationship are commonly used as important tool to maintain the existing customers.

While formulating promotional strategies respondents in the public sector bank most of the bankers considered that there is the need of some modifications in the existing schemes as per market needs. As they felt that their market needs are not up to the actual need.

Survey of the customer has revealed that as far as overall satisfaction level is concerned 60.7 % customers of public sector banks are satisfied and only 15.3% customers are satisfied of public sector banks. Executives of public sector bank tried to justify their situation with the fact that they have to do social banking too and serve a large clientele base. Moreover the lower level staff of public sector banks is less qualified. All this naturally result in somewhat lower customer satisfaction.

**Referemces**

1. Kalam, A.P.J. and Rajan, Y.S. (1998). India 2020: A vision for the new millennium. Penguin books, New Delhi.
2. Pearline, B. Sheeba. (2015). A Comparative Analysis of Modern Banking Services Extended by Private and Public Sector Bank in Tirunelveli District. Manonmanian Sundaranar University Tirunelveli, Feb. India. P.
3. Report of Internet banking in India (2010-11). <http://www.bank net India. com/banking/basic.htm>
4. Bank Net, "Banking Basics" (2003). Bank Net India, 19 June. <http: // www. Banknetindia.com/banking/bbasis.htm>
5. Vaish, M.C. (1996). Nature and importance of commercial banks. Money, Banking, Trade and public finance, New Delhi: New age international (P) limited.
6. Husain, Farhat (1986). Public commercial Banking in India. New Delhi: Deep & Deep publications.
7. Husain, Farhat (1986). Public commercial Banking in India. New Delhi: Deep & Deep publications.

# Indian Handicrafts and its Marketing

**Dr. Alka Arya***

***Abstract :***

*Indian handicraft is an unique expression of creativity and are known the world over for its rich variety. grace and distinct craftsmanship. These offer immense opportunities for employment and exprots. All the virtues notwithstanding handicraft industry is facing a lot of challenges due to lack of advanced technoogy and proper marketing facilities. Government has under taken various measures to support handicraft business but a lot more has to be done so that Indian handicrafts are able to face stiff market competition and carve a niche for themselves in the global market.*

India has a history of rich and diverse tradition of art and culture, which always occupies a specific place owing to its unique style of beauty and dignity. Handicrafts are exclusive expression of a particular culture of a country or a community through local craftsmanship and materials. In other words we can say that handicrafts are the items made by hand often with the use of simple tools and generally artistic and traditional in style. These items are usually decorative and have a particular use. It is true that Indian handicrafts have very ancient origin, and are popular around the world for its creativity, exquisite craftsmanship and high quality products. It represents a rich Indian cultural heritage and distinguish skills that are transferred from generation to generation.

There are numerous variety of handicraft in India which are made with attractive designs and meticulous craftsmanship. Some of the important types of handicraft in India are –

1. **Wooden Craft:-** Wooden Craft of India is famous across the world. some states of Kerala, Jammu & Kashmir, Uttar Pradesh and Assam are the main Producers of wood crafts items. Saharanpur in Uttar Pradesh is famous for its wood works and also known as 'wood city of India.'
2. **Metal Craft :-** Metal Craft of India like engraving, enameling and filigree cutwork on different kind of metal such as silver, brass, copper, bronze and aluminum etc. are glorious handicraft of India. Uttar Pradesh, Madhya Pradesh and Andhra Pradesh are famous for its metal craft works.
3. **Marble and Soft Stone Craft :-**India's unique stone craft is appreciated all around the world and can be seen in various historical buildings in India. Agra, Jaipur, Jodhpur and Chennai etc. are few famous cities for this craft.
4. **Textile Printing :-** India is famous since centuries for its different types of hand printed textiles include tie and dye, block printing, screen printing and other hand painted fabrics. Major centres for unique textile printing are Gujarat, Rajasthan and Uttar Pradesh etc.
5. **Embroidered Articles :-**Indian embroidered goods have its distinct and rich style. Hand embroiderd fabrics, bags, purses, footwear etc. are artistically decorated using

*Associate Professor, S.S.D.P.C. Girls (PG) College, Roorkee

needle and yarn. Kashmiri work, zardozi, chikankari, Phulkari, Kantha and Parsi work are some of the embroidery style being practiced in India. Main centers are Kashmir, Lucknow, Jaipur, Kolkata, Bikaner, Amritsar etc.

6. **Paper Mache Craft :-**The art of making articles of paper Mache, is an unique craft that evolved during the Mughal period and today being practiced by a large numer of artisans in India. A large variety of utility and decorative items of paper mache such as boxes, flower vases, toys, household utensils and face masks in different shapes, size and attractive colours are popular in market. Kashmir is well known for this craft work.
7. **Leather Craftwork :-** It is the practice of making leather into artistic craft work using shaping and colouring techniques. It is mostly practiced in Kolhapur, Indore and Kanpur cities .
8. **Handmade Jewellery :-** Indian handmade jewellery is considered to be highly artistic. India is one of the major suppliers of fashion jewellery. Beside metal, stones, wood, thread, paper, plastic beads, horn, bone lac and other materials are also extensively used for manufacturing attractive jewellery. Jaipur, Hyderabad, Moradabad, Sambhal, Delhi and Gujrat are the major centers of jewellery crafts.
9. **Handmade Paintings :-** India has a rich tradition of handmade paintings like miniature paintings, madhubani, warli, gond, bhopa, tanjore, kalamkari and many more folk style paintings. Due to the increasing demand of handmade paintings, various artists of diffirent states are creating a number of paintings.
10. **Terracotta Work :-** In India the terracotta art work was prevalent during the time of Indus valley civilization. It is a kind of reddish coloured glazed pottery with unique style of designs. Different stated have their own terracotta styles. Different types of objects like flower vase, lamps, drums, bells, birds, animals and human forms are prepared in terracota. Major states are Gujrat, west bangal, Rajasthan, Delhi, Punjab and Tamilnadu.
11. **Glass and ceramic work :-**Glass and ceramic product are a fast upcoming segment in the handicrafts from India. The varied shapes of ceramic and glass in a number of colours and designs appeal to art lovers of the world.

## Significance of Handicrafts

It is true that art and crafts not only satisfy our economic wants but also the aesthetic yearning of man. In the age of machine tooled monotony, the handicraft stand as symbol of ceaseless flow of creativity instead of dull repetition. It always lies in the newness and surprise of each object. Art lovers and consumers buy handicrafts because they like to feel connected with indigenous tradition and culture. The Indian handicraft industry play an important role in world's handicraft market. It is not only the oldest and biggest industry which represents diffirent traditional art of different part of India, but it also provide employment opportunity to over 5 million craftsmen which include a large number of women and people belonging to weaker section of society. Thus the handicraft production is a major form of employment in India and often a significant part of export

economy. India is one of the important suppliers of Handicraft products. The Indian handicrafts product have very large market in the world due to its growing potential, uniqueness and good quality. The demand of theses handicraft product increases in many countries like Germany, France, Italy and Switzerland etc. The substantial supply of these products create a giftware market of handicraft, which promote the customers to purchase these products. The role of handicraft industry is very important in Indian economy because economy of any country directly related to the foreign currency of different country. Infect handicraft is very important sector to earn foreign currency for our country. This is one of the sector which require very less amount of money to start business. It is largest employment generation sector after agriculture, with a minimum of capital equipments and energy requirements. It also produces the product which is eco-friendly. Handicraft goods are an effective medium of cultural contacts between nation. It does a sort of propaganda for rich heritage of India.

**Challenges of Handicraft marketing**

Marketing of handicraft is very important aspect from which we can provides all types of information about the products and can get feed back about the quality of the products. Yet handicraft occupies a unique place in India, but it has not received as much attention as it deserves. The performance of institutional infrastructure for both financing and marketing of handicraft is not quite satisfactory. Due to the lack of technical and marketing knowledge, this sector is far away from the main competition. Marketing involved a number of activities including market research, product quality and development, packaging, pricing, advertising, branding, distribution, personal selling and sell promotion. Marketing have several activities which designed to serve and satisfy the customer's needs profitably. A healthy growth of handicraft industry can not be achieved without design development, technology advancement and quality improvement .The handicraft sectors is unorganized sector which run by individual. It can adversely effects the separate and well organized marketing system because the craftsmen spent most of their time in manufacturing of products and aquaring of raw material. On other side they have very little knowledge about handicraft market related information. So the artisans of handicraft industry should have information about the vital marketing function.

**Suggestion for the growth of Indian handicrafts market-**

Present handicraft market is quite competitive. A cut throat competition is faced by Indian handicraft market. There are some suggestions for the growth of Indian handicraft industries and its market:-

- In the age of globalization, export promotion of handicraft has high potential of earning foreign exchange. By boosting the export of handicraft, we can solve many economic problems of our country. If the handicraft industry are to survive, they should produce or exchange in the wide market. Producers should cater to meet it. The craftsmen Production has to be made more even and regular through the use of modern techniques. If our handicrafts products are unique and inimitable there is no need to fear from market competition.

- Manufacture should also experiment with traditional designs and try to produce items according to the choice, taste and preference of the customers. Those products which have no demand in the market, should be roll back form the manufacturing Process.
- Fraudulent business practices, such as marketing of fake articles must be curbed.
- It is true that the artisans usually exploited by the businessmen or mediator. For the Revival of dying arts and the growth of handicrafts industry, it is necessary to give monetary incentives and genuine price to skilled artisans, this will motivated to produce better quality and more innovative and exclusive goods.
- In today's competitive world, it is necessary to create an image of the product in the minds of the customers. For this purpose, Indian handicraft products need to be branded on true hand based crafts which is ethnic and traditional in value as compared to other machine made east asian crafts. The western customers give value to the hand made products and the Indian crafts should be branded .
- As the customers of present time are more internet savvy, they want each and every information on a single click. So, according to the need and choice of the customers, industry should provide all the information regarding products. To increase the sale of products, there is also a need of advertisement through various sources of media.
- Government should facilitate and promote the artisans to take participation in different art and crafts bazar, international fairs and exhibitions of handicraft products. It is also important for any exporter to participate in international fairs and keep him update about the tastes and requirement of people abroad. It will also be a source of international business development and new buyers, mainly for the handicraft exporters who involved into direct exports.
- India has a large number of students taking education in fine art stream, they have extraordinary talent and potential of art and craft creativity. Hence, There are lots of opportunities of employment in handicraft industry for these young fine art students.
- They can also be promoted to start their own business of handicraft products. Now a days a number of students are studying abroad, such a students can be bring in the business for handicraft exporter from that particular country. The well performing student can be future entrepreneurs in the handicraft industry. Handicraft can make every home a unit of production and every individual can become a producer.

**Government Initiatives-**

Government of India has been putting in lot of efforts to keep the handicraft industry alive in all prospects. It has started many cultural Societies, provides platform in the form of exhibition and art fairs, where many artist put forward their works and in returned get the market to sell their products.

The all India handicraft Board assisted the state government in setting up their design and technical centers in U.P., Bihar, Rajasthan, Punjab, Andhra Pradesh, Tamilnadu, Kerala, H.P., M.P., Gujrat, Oddisa, Manipur, Tripura, West Bangal, Haryana and Goa

etc. In these centers craftsmen and artist jointly work out new designs and revive dying art forms. Undoubtly we can say that the satisfactory performance in marketing of handicrafts could be possible due to the special interest taken by central government to boost up the export of handicraft items.

## Conclusion –

Handicraft are valuable and indeed a proud heritage of India. The Indian handicraft industry is distinguished and has a very bright future in global market. It can contribute a lot to the sustained development of the country's rural economy. Indian handicraft provide an opportunity for rapidly growing export activitities, while also creating employment opportunities through abundant use of labour and local skills. Although the governrnment of India putting a lot of efforts to keep the handicraft industry alive in all prospects, but there is a need to do some more efforts in its marketing because marketing play very important role in present scenario. For future growth and development of Indian handicraft market, It should be provide the strategic direction and action plans to evolve system. In this way, the handicraft industry can grow and servive in the era of competition and globalization. Media has tremendous scope and opportunity to become world's leading player in handicraft sector. Need of the hour is to promote the handicraft and explore new markets.

**References**

1. Upadhyaya, M.N., Handicrafts of India, secundrabad Swarjya printing works. USAID, Global market Assessment for handicraft, vol. 1, July 2006
2. Abraham, T.M. Handicrafts in India, Graphics Columbia, new Delhi, 1964
3. Saraf, D.N. Indian Crafts-Development and Potential, vikas Publishing house, N. Delhi, Second edition. 1985
4. https://www.researchgate.net/Publication/319141479.283009715.
5. Asian Journal of managerial science, vol. No.1 2013, Research Publication, www.trp.org.in
6. www.jhea.in Indian handicraft industry
7. https://www.ibef.org, Indian handicrafts industry and exports
8. https://Businesseconomics.in, market for handicrafts, July 2018
9. www.handicrafts.nic.in handicraft of India
10. https://www.liveabout.com the main different types of crafting
11. https://timesofIndia.indiatimes.com, Indian handicraft market
12. https://www.imarcgroup.com
13. https://qz.com
14. https://m.huffinglonpost.in
15. https://www.entrepreneur.com

# Menstrual Hygiene Management and Waste Disposal: A Review

**Priyanka Pahwa*** **Prof. Kiran Dangwal****

***Abstract:***

*The concept of Menstrual Hygiene Management (MHM) has gained enough attention in recent years and several studies have been published concerning the same. However, not many studies have been found while reviewing, focusing specifically on the disposal practices of menstrual waste. The review showed that where on one hand the usage of sanitary napkins during menstruation days are increasing at a fast pace, on the other hand managing the increasing waste seems not in the priority list of the state or individual. Hence, Findings of the present study calls for further research and waste management technologies and policies to deliver health (which otherwise might hamper due to ignorance of personal hygiene management), mobility and dignity for every woman.*

## Introduction

The event of Menarche (First period) happens to be an important biological milestone in any woman's life as it not only marks the onset of reproductive phase of life but also comes with the responsibility of managing hygiene at least 3 days each month in a way so that their health should not be hampered. Good menstrual hygiene may be understood as using a clean menstrual resource to absorb or collect menstrual blood that can be changed in privacy as when required, using soap and water for washing the genitals and having access to safe and convenient facilities to dispose soiled menstrual materials whereas poor menstrual hygiene may impact the health and psycho-social well-being of women and girls.

Menstrual wastes are the wastes that are generated by any woman during her reproductive years (11-55 years of age). These are generally the waste comprising soiled resources used to absorb blood (also mucus and vaginal secretions) during menstruation days commonly known as menses, periods etc **(Havens & Swenson, 1987)**. Though every women develop their own personal strategies to handle the days of her menstrual cycle., they may use any of the products (eg. cloth, sanitary napkins, menstrual cup, tampons or any other absorbent). The review also showed that with rapid urbanization, rising incomes and increasing mobility, use of disposable sanitary napkins is increasing rapidly **(Eijk et al., 2016)**. A study estimated that the annual solid waste of sanitary napkin found to be higher than any other menstrual absorbent product

*Research Scholar, Department of Sociology and Social Work, H. N. B. Garhwal University, Uttarakhand, India

**Professor, Department of Sociology and Social Work, H. N. B. Garhwal University, Uttarakhand, India

**(Truyens et al., 2013)**.

Few articles discuss that the lack of clarity and consensus over how menstrual waste is classified makes it even more difficult to offer clear guidance as to how to dispose the same properly and such ignorance leads to inappropriate unsafe disposal practices **(Hartmann et al., 2015)**. Thus, to improve such condition, proper knowledge of MHM is required including the types of wastes (hazardous, bio-medical, solid waste etc) One can generate during menstrual days and also the proper techniques of disposal should be taught as well.

## Methodology

For the study purpose secondary data was used. A structured search was done to identify journals, research papers related to Menstrual Hygiene Management and disposal of used menstrual products. The secondary data have been collected to cover every aspect of the study. The primary focus of the search was on disposal techniques of menstrual waste and what all can be the solutions for the same. Specific topics included are types of absorbents used, socio-economic factors influencing disposal behavior, environmental and health hazards from unsafe disposal practices.

## Objectives

- to understand the cultural beliefs and restrictions imposed upon menstruating woman
- to understand the types of absorbents used during menstruation
- To know the techniques used for disposal

## Cultural beliefs ad restrictions and Menstruation

By reviewing article and journals, it was found that cultural nd religious beliefs influence menstrual practices in India at large **(Umeora & Egwuatu, 2008)**. Many women cited restrictions on cooking, bathing, being intimate withier spouse, worshipping, consuming certain foods etc. **(Drakshayani &Ramaiah, 1994)**. In some studies, practice such as burial of soiled menstrual absorbent cited by woman as the cultural practice. And if washing the used cloth, one Cannot let it dry in open, the cloth has to be dried in darkness where no one can see it or else it will bring the misfortune to the family **(Dhingra et al., 2009).**

It is also found while reviewing that women were told that the blood of menstruation may use for witchcraft and therefore utmost secrecy is demanded culturally to dispose or manage the products.

Hence due to such information girls since the first day of their period conditioned culturally that the topic of menstruation should not be talked openly and anything related to it should be practice in closed corners which ultimately leads to negative attitudes of women and the society towards the concept which generally results in unsafe practices of managing their menstrual cycle.

**Types of Absorbents used during Menstruation**

The core of MHM is the use of menstrual hygiene products, an important component linked with disposal practices and preferences. Absorbents are the materials to collect or absorb the menstrual blood safely and comfortably. The quality of any menstrual hygiene product is judged by factors such as leak protection, the capacity to absorb, dryness, odor absorbent, size, thinness and also biodegradability. The review showed that sanitary pads and cloth are the most commonly used menstrual hygiene products other absorbents like sponge, cotton wool homemade pads etc were also cited **(Sommer et al., 2013).** Cloth pads cited as traditional and sanitary pads found to be more convenient for the users as it can offer protection against leakage also promises the odorless feature and has more capacity to absorb than the cloth pads, though it is not cited as always affordable **(Kuhlmann & Henry, 2017).** While sanitary pads delivers comfort and leak proof performance but the composition of pads (cellulose, bleach, super absorbent polymers, plastic) has implication on health and environment. **(Thakur et al., 2014).**

The factors responsible for selecting particular type of absorbent cited to be depend upon factors like, age, type of schooling, exposure of mass media , economic status, occupation of parents etc.**(Omidvar, 2010).** The review highlights the paucity of detailed studies based on location, age, activity, socio economic status focusing on disposal practices and hence this review reveals a need for widening global research possible on MHM. Following different menstrual products found to be used by women/girls nationwide (Figure 1).

- *Reusable and Washable Cloth Pads.* Most used menstrual product esp. in rural India but the usage of it found to be decreasing with the increasing affordability of commercial sanitary napkins.
- *Commercial Sanitary Pads*. Due to their easily availability and high absorbent performance, demand of these napkins are increasing day by day but the increasing demand of such products are going to increase the burden on environment which needs to be tackled beforehand.
- *Tampons*. (This product is inserted into the vagina to absorb the menstrual flow before it leaves the body. Not many found to be using this product in India due to cultural issues and also being expensive than other menstrual absorbent products.
- *Menstrual Cups*. They are like cups made of medical grade silicone rubber which makes the cup easy to fold and get inserted into the vagina to collect menstrual blood. it needs to be removed and emptied after every 6 hours or depends on the flow of discharge. Though they are reusable and environment-friendly. But are less popular among rural women due to its usage technique.
- *Bamboo Fiber Pads*. Instead of wood pulp, bamboo pulp is used as an absorbing material in these sanitary pads. It has more absorbing capacity and is safer to use. These are more environment friendly but are not easily available and also less affordable.

## Menstrual waste disposal techniques

This review tried to examine what all techniques used by the menstruator to dispose certain absorbents and what practices they follow to discard the menstrual products.

The review showed various variety of ways that women and girls currently use dto dispose off menstrual absorbents including throwing them in the open, or flush them in the commodes, or burning them due to cultural beliefs **(Ejik et al., 2016)** Discarding used menstrual absorbents in latrines was noted in school based studies which may also because of the absence or lack of access of girls to the bins **(Gultie et al., 2014)** Its was also cited by few that women who did not hound some way to discard their pads at home , keep it with them under their bed for days until they explore some way of get rid away with the collected waste with some other household waste **(Scorgie et al., 2016)**

As mentioned the review revealed that disposing the used menstrual products practice changes with the place. In public places, menstruators flushed them in the commodes, or leave them unwrapped n the toilet corners. This may result in the breeding place for flies and mosquitoes, also unhygienic for other toilet users and also flushing out menstrual products may block sewerage pipes post challenges for human resource and may cost dignity implications.

Current solid waste management laws in India require the product manufacturer to provide a wrapper for the disposal of menstrual product and to address such requirement menstrual product manufacturing companies are providing plastic wrappers for the disposal hence increasing the burden on environment

The government of India also promoting installation of incinerators as a disposal method but the assurance of not diffusing harmful gases and the accessibility of it is a must to check before installing such equipments. Following practices of managing menstrual waste were cited:

- *Burning or burying*- these practices are cited to be followed due to cultural beliefs that the blood soiled cloth or any other pad should not be seen by anyone which otherwise may cause fertility to the particular woman.
- *Wrapping and throw*- most common practice found to be in urban areas to just wrap the used pad and throw it in the dustbin
- *Flush it out*- such practices are found to be in common in places such as schools where bins are not found accessible to the girls or if available are without the lids to cover.
- *Washing and drying in dark*- washing for reusing the cloth pad found common practice in rural areas but letting them dry in dark may not sterilize it which ultimately may lead to hamper the health of the menstruator.

## Discussion

The concept of MHM can be linked to Sustainable Development Goals (SDGs),

including SDG 3 (physical health and psycho-social well-being), 4 (quality education), 5 (gender empowerment and equality), 6 (water and sanitation), 11 (sustainable cities), and 12 (responsible consumption and production for the environment) and thus making the concept very important to be researched upon from every angle. The findings of the review revealed the importance researching further on the menstrual waste techniques and the implication of unsafe practices of disposal on human health.

The study also revealed that though many products are available today in market as absorbent but sanitary napkins have seen the increasing sales day by day compared to any other product and thus more focus should be on the safe disposing of the same makes the present study more important to undertake.New products (biodegradable and reusable) have been introduced in the market recently but due to its unaffordability and accessibility, these are not famous among menstruators.

The Indian government though is promoting incinerators in schools and societies to be installed for the safe disposal of menstrual waste and also classifies sanitary pads as solid waste under solid waste rules 2016 but the policy guidance on sanitary pad collection, handling, storage, transportation etc needs detailing .furthermore environment standards and guidance needs to address and publicize the fact that sanitary pads and other most of the other commercial absorbents often contain chlorine and polythene that may produce dioxins and other potentially dangerous chemical which may be the agents of cancer or may contribute other health concerns from combustion process groundwater contamination because of landfills and sites here solid waste accumulates.

## Conclusion

The concept of MHM needs to be upgraded enough to include safe waste disposal practices and also the practical training of the same should be imparted to every girl in schools and the teachers and parents must be the part of such trainings as well. Social and electronic media plays an important part in anyone's life therefore proper guidance must be made and implemented so that the media should feel socially responsible. NGOs should come forward to educate and aware people regarding safe menstrual practice and also promote the importance of toilets in schools, homes and communities with the proper disposing tools. Emphasis should be given on reusable pads to absorb menstrual products at the same time women should be made aware of proper washing an drying techniques of the same. Incinerators in installed should be properly checked on a regular basis so that it should not emit any harmful gases while incinerating the pads and they should also be accessible enough to be used.

**Reference**

1. Van Eijk, A.M.; Sivakami, M.; Thakkar, M.B.; Bauman, A.; Laserson, K.F.; Coates, S.; Phillips-Howard, P.A. Menstrual hygiene management among adolescent girls in India: A systematic review and meta-analysis. BMJ Open 2016, 6, e010290. [CrossRef] [PubMed]
2. Truyens, C.; Wilmouth, R.; Buckley, C.; Turnberg, W.; Daniell, W. Menstrual management in communal sanitation facilities: Recommendations to eThekwini Municipality. In Proceedings of the 36th WEDC International Conference, Nakuru, Kenya, 1–5 July 2013.

3. Hartmann, M.; Krishnan, S.; Rowe, B.; Hossain, A.; Elledge, M. Gender-Responsive Sanitation Solutions in Urban India; RTI International: Research Triangle Park, NC, USA, 2015.
4. Sommer, M.; Chandraratna, S.; Cavill, S.; Mahon, T.; Phillips-Howard, P. Managing menstruation in the workplace: An overlooked issue in low- and middle-income countries. Int. J. Equity Health 2016, 15, 86. [CrossRef] [PubMed]
5. Sommer, M.; Kjellen, M.; Pensulo, C. Girls' and women's unmet needs for menstrual hygiene management (MHM): The interactions between MHM and sanitation systems in low-income countries. J. Water Sanit. Hyg. Dev. 2013, 3, 283–297. [CrossRef]
6. Sommer, M.; Ackatia-Armah, N.; Connolly, S.; Smiles, D. A comparison of the menstruation and education experiences of girls in Tanzania, Ghana, Cambodia and Ethiopia. Compare 2015, 45, 589–609. [CrossRef]
7. Chandra-Mouli, V.; Patel, S.V. Mapping the knowledge and understanding of menarche, menstrual hygiene and menstrual health among adolescent girls in low- and middle-income countries. Reprod. Health 2017, 14, 30. [CrossRef] [PubMed]
8. Kuhlmann, A.S.; Henry, K.; Wall, L.L. Menstrual Hygiene Management in Resource-Poor Countries. Obstet. Gynecol. Surv. 2017, 72, 356–376. [CrossRef] [PubMed]
9. Asimah, S.A.; Diabene, P.Y.; Wellington, S.N.L. Menstrual hygiene management in Ghana: Understanding the socio-cultural, economic, political factors, challenges and opportunities. In Proceedings of the 40th WEDC International Conference, Loughborough, UK, 24–28 July 2017.
10. Scorgie, F.; Foster, J.; Stadler, J.; Phiri, T.; Hoppenjans, L.; Rees, H.; Muller, N. "Bitten by Shyness": Menstrual Hygiene Management, Sanitation, and the Quest for Privacy in South Africa. Med. Anthropol. 2016, 35, 161–176. [CrossRef] [PubMed]
11. Swenson and B. Havens, "Menarche and Menstruation: A Review of the Literature," Journal of Community Health Nursing, vol. 4, no. 4, pp. 199–210, 1987.
12. D. Sapkota, D. Sharma, H. P. Pokharel, S. S. Budhathoki, and V. K. Khanal, "Knowledge and practices regarding menstruation among school going adolescents of rural Nepal," Journal of Kathmandu Medical College, vol. 2, No. 3, no. 5, pp. 117–121, 2014.
13. A. Khanna, R. S. Goyal, and R. Bhawsar, "Menstrual practices and reproductive problems: a study of adolescent girls in Rajasthan," Journal of Health Management, vol. 7, no. 1, pp. 91– 107, 2005.
14. K. A. Narayan, D. K Srinivastava, P. J. Pelto, and S. Veerapmmal, "Puberty Rituals, Reproductive Knowledge and Health of Adolescent Schoolgirls in South India," Asia-Pacifc Population Journal, vol. 16, pp. 225–238, 2001.
15. R. Dhingra, A. Kumar, and M. Kour, "Knowledge and practices related to menstruation among Tribal (Gujjar) adolescent girls," Studies on Ethno-Medicine, vol. 3, no. 1, pp. 43–48, 2009.
16. O. U. Umeora and V. E. Egwuatu, "Menstruation in rural Igbo women of south east Nigeria: attitudes, beliefs and practices.," African Journal of Reproductive Health, vol. 12, no. 1, pp. 109– 115, 2008.
17. K. Drakshayani Devi and P. Venkata Ramaiah, "A study on menstrual hygiene among rural adolescent girls.," Indian Journal of Medical Sciences, vol. 48, no. 6, pp. 139–143, 1994.
18. Omidvar, S.A.B.K. Factors influencing hygienic practices during menses among girls from south India—A cross sectional study. Int. J. Collab. Res. Intern. Med. Public Health 2010, 2, 411–423.
19. Nair, M.K.C.; Chacko, D.S.; Darwin, M.R.; Padma, K.; George, B.; Russel, P.S. Menstrual Disorders and Menstrual Hygiene Practices in Higher Secondary School Girls. Indian J. Pediatr. 2012, 79, S74–S78. [CrossRef] [PubMed]
20. Thakur, H.; Aronsson, A.; Bansode, S.; Stalsby Lundborg, C.; Dalvie, S.; Faxelid, E. Knowledge, Practices, and Restrictions Related to Menstruation among Young Women from Low Socioeconomic Community in Mumbai, India. Front. Public Health 2014, 2, 72. [CrossRef] [PubMed]
21. Scorgie, F.; Foster, J.; Stadler, J.; Phiri, T.; Hoppenjans, L.; Rees, H.; Muller, N. "Bitten by Shyness": Menstrual Hygiene Management, Sanitation, and the Quest for Privacy in South Africa. Med. Anthropol. 2016, 35, 161–176. [CrossRef] [PubMed]
22. Gultie, T.; Hailu, D.; Workineh, Y. Age of Menarche and Knowledge about Menstrual Hygiene Management among Adolescent School Girls in Amhara Province, Ethiopia: Implication to Health Care Workers and School Teachers. PLoS ONE 2014, 9, e108644. [CrossRef] [PubMed].

# Population Explosion & Unsustainable Pattern of Food Consumption & Production

**Dr. Kamini Singhal***

***Abstract:***

*Rapid growth in population leading to population explosion has serious consequences for mankind overpopulation and poverty have long been associated with increased deaths and diseases. Wars have taken a large toll of human life in the post but now it is believed that the greatest threat to the future comes fraw over population. Experts believe that problem of rapid growth in population specially in developing word has to be addressed soon in order to ensure that fruits of development are not negated by an disproportionate increase in population.*

Each Population has a characterised pattern of increase which is termed as its growth form. When a population starts growing, first the growth is slow, then it becomes rapid and finally slows down until an equilibrium is reached. Population explosion refers to the rapid and dramatic rise in world population that has occured over the last few hundred years. Most of the population growth is currently taking place in the developing world, where rates of natural increase are much higher than in industrialized countries.Between 1959 and 2000, the world's population increased from 2.5 billion to 6.1 billion people. According to United Nations projections, the world population will be between 7.9 billion and 10.9 billion by the year 2050.

In the past, infant and childhood deaths and short life spans used to limit population growth. In today's world due to improved nutrition, sanitation and medical care, more babies survive their first few years of life. The combination of a continuing high birth rate and a low death rate is creating a rapid population increase in many countries in Asia, Latin America and Africa and people generally live longer. Over population is defined as the condition of having more people than can live on the earth in comfort, happiness and health and still leave the world a fit place for future generations. But some people now believe that the greatest threat to the future comes from over population. Among the various factors behind the undesirable situation of overpopulation are reduced mortality rate due to improved health care accompanied by a high fertility rate.

Until recently, birth rates and death rates were about the same, keeping the population stable. People had many children, but a large number of them died before age of five. During the Industrial Revolution, a period of history in Europe and North America where there were great advances in science and technology, the success in reducing death rates was attributable to several factors:-

1. Increase in food production and distribution,
2. Improvement in public health (Water and Sanitation),
3. Medical technology (vaccines and antibiotics), along with gains in education and standards of living with in many developing nations.

*Associate Professor, Dept. of English, S.D.P.G. College, Muzaffarnagar, Uttar Pradesh

Rapid human population growth has a variety of consequences. Population grows fastest in the world's developing countries. High fertility rates have historically been strongly correlated with poverty and high childhood mortality rates. Falling fertility rates are generally associated with improved standards of living, increased life expectancy and lowered infant mortality. Over population and poverty have long been associated with increase death & disease.

The world's current & projected population growth calls for an increase in efforts to meet the needs for food, water, health care, technology and education. In the poorest countries, massive efforts are needed to keep social and economic condition from deteriorating further, any real advances in well being and the quality of life are negated by further population growth. Many countries lack adequate supplies of basic materials needed to support their population. Rapid Population growth can affect both the overall quality of life and the degree of human suffering on earth.

Action plans and strategies can be developed to increase public understanding of how rapid population growth limits chances for meeting basic needs. The spirit of open communication and empowerment of individual women and men will be key to a successful solution to many population problems. Collective vision about health care, family planning and women's education at the community level build the basis for action. The creation of action plans help to meet challenges to find cooperative solutions. Free and equal access to health care, family planning and education are desirable in their own right and will also help reduce unwanted fertility. It is essential to achieve a balance between population and the available resources.

Socrates said that the best sauce for food is hunger. Today, as in the age of Socrates, there is no lack of hunger sauce. There is widespread concern about the relationship between population and food supply throughout the world. Numerous actions have been proposed. ***Jean Mayer***, The famed nutritionist, holds that a 10 percent decrease in meat consumption by Americans would release enough grain to feed 60 million people.

The concern about the relationship between population and food supply is not new. **Sir Thomas Malthus** predicted in 1798 that population would continually increase faster than the food supply, causing chronic food shortages. Today, in much of Asia, Africa and Latin America the food problem looms large. The prospect of world famine is held before us with hundreds of millions of people starving.

The world food crisis is caused primarily because of unequal distribution. Enough food is available to provide at least 4. 3 pounds of food per person per day worldwide. The problem, therefore, is not of production but clearly of access and distribution. The other reasons of food shortage cited are population explosion and numerous other reasons like war, droughts, floods, earthquakes etc.

India has a serious hunger problem which gets worse each day. Only a few years ago the food situation appeared fairly bright. There was a agricultural boom, with food

production doubling from 1950 to 1970. Today, however, the hunger problem in India commands the world's attention. The population explosion, unsustainable pattern of food consumption and production have created big problem before the world. These are, in fact, global problems. and need to be addressed at the earliest for the welfare of entire human race.

**References:-**

1. Abbasi SA. Environment Everyone, Discovery Publishing House, New Delhi
2. Bandhu, Desh. Environmental Management, Indian Environmental Society, New Delhi
3. Dhameja, Suresh K. Environment Engineering and Management, S.K. Kataria and Sons, New Delhi
4. Tripathi, AK & Bhatt VB. Changing Environmental Ideologies, Ashish Publishing House, New Delhi
5. Wright Richard P. and Nebel Bernard J., Environmental Science, Prentice Hall of India Pvt. Ltd., New Delhi.

# Guidelines for Submitting Papers

1. All manuscripts should be prepared clearly typewritten in **Microsoft Word, in Kruti Dev 010 font size 16 for English/Hindi and Times New Roman, font size 12 for English (latest Edition MLA Handbook** in all matters of form) typed in double space and one-inch margins on single-sided A4 paper.
2. Title of the paper should be bold, title case, centered and text of the research paper should be justified. All pages of the manuscript should be numbered at the upper right corner of the page.
3. The main paper must contain the Name, Affiliation, Contact No. and E-mail address of the author (s). The above information should be placed in the right corner under the Title of the paper.
4. Length of the research paper must be in (not more) 2500-3000 words.
5. The articles/research paper without references or incomplete references will not be entertained.
6. Authors are requested to follow the strict ethics of writing scholarly papers and avoid plagiarism. If any author summarizes, paraphrases any article/chapter or book in his paper, in all three cases the sources should be acknowledged. **The article/research paper should be accompanied with a declaration to the effect that the paper is the original work of the author/ (s) and that has not been submitted for publication anywhere else.**
7. The editorial Board reserves the right to condense or make necessary changes in the research articles for reasons of space and clarity.
8. Research paper must not be against the nation, religion, caste & creed and individual also. Do not draw religious symbols on any page of your research paper.
9. Research paper should be prepared according to our style-sheet and it must be submitted to the Editor through E-mail: ssd.journal@gmail.com alongwith one hard copy. **Without soft copy research paper will not be accepted.**

**Style sheet of paper**

1- Title

2- Author's name Designation, contact No. email Id (under the title right hand side of the page)

3- Body of paper, with or without headings and subheadings

4- Conclusion

5- Citations/ end notes

**Research Papers for Jan.-Dec. 2020 issue should be submitted latest by October 2020**